جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

अन्वारुल इस्लाम

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : अन्वारुल इस्लाम
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद, एम.ए, एम.फ़िल, पी एच.डी.,
पी.जी.डी.टी, आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग : नादिया परवेज़ा अज़हर
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) फ़रवरी 2019 ई०
संख्या : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book : ANWAR-UL-ISLAM
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator : Dr Ansar Ahmad, M.A, M.phil, Ph.D,
P.G.D.T, Hons in Arabic
Type Setting : Nadiya Perveza Azher
Edition : 1st Edition (Hindi) February 2019
Quantity : 1000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम सय्यद मुहियुद्दीन एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

अन्वारुल इस्लाम

मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ईसाई मुनाज़िर से संबंधित मुबाहस: "जंग मुक़द्दस" के समापन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी की थी कि वह पन्द्रह माह के समय में हाविय: में गिराया जाएगा बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करे। जब भविष्यवाणी की मीआद पन्द्रह माह गुज़र गई और आथम न मरा और अल्लाह तआला ने भविष्यवाणी के अनुसार सच की ओर लौटने (रुजू) के कारण उसे मुहलत प्रदान की तो ईसाइयों ने इस पर बड़ी खुशियाँ मनाईं और उसे ईसाइयत की विजय समझ कर 6 दिसम्बर 1894 ई. को अमृतसर में आथम का जुलूस भी निकाला। यह मुकाबला वास्तव में इस्लाम और ईसाइयत का था जैसा कि स्वयं मसीही अख़बार 'नूर अफ़्शां' ने भी लिखा-

"मिर्ज़ा साहिब ने मसीहियों के साथ मुबाहस: अपने मुल्हम और मसील-ए-मसीह होने के बारे में नहीं किया अपितु मुहम्मदियत को सच्चा धर्म और क़ुर्आन को अल्लाह की किताब सिद्ध करने पर मसीहियत का खण्डन करने के लिए किया था और वह भविष्यवाणी मुबाहस: के समापन पर उन्होंने मुहम्मदियत ही के सच्चा धर्म और ख़ुदा की ओर होने के सबूत में की थी।"

(नूर अफ़्शां 20 दिसम्बर 1894 ई.)

परन्तु इसके बावजूद कुछ निर्लज्ज मुल्लाओं और उनके अनुयायियों ने ईसाइयों के साथ मिलकर कोलाहल और उपहास में बराबर का भाग लिया और भविष्यवाणी के पूरा न होने का शोर

मचाया और उस पर ऐतराज़ किए। गन्दे और गालियों से भरे दिल दुखाने वाले विज्ञापन निकाले और अत्यधिक गालियों से काम लिया। तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन काफ़िर कहने वाले मुल्लाओं को जैसे को तैसा उत्तर दिया और उनकी इस्लाम दुश्मनी का इन शब्दों में वर्णन किया-

"कुछ नाम के मुसलमान जिन्हें आधा ईसाई कहना चाहिए इस बात पर बहुत प्रसन्न हुए कि अब्दुल्लाह आथम पन्द्रह माह तक नहीं मर सका और ख़ुशी के मारे सब्र न कर सके। अन्त में विज्ञापन निकाले और अपनी आदत के अनुसार गंद बका और उस व्यक्तिगत कृपणता के कारण जो मेरे साथ थी इस्लाम पर भी आक्रमण किया, क्योंकि मेरे मुबाहसे (शास्त्रार्थ) इस्लाम के समर्थन में थे न कि मेरे मसीह मौऊद होने की बहस में। अन्ततः मैं उनके विचार में काफ़िर था या शैतान था या दज्जाल था परन्तु बहस तो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई और पवित्र क़ुर्आन के बारे में थी।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी ख़जायन जिल्द-9, पृष्ठ-24)

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पन्द्रह माह की मीआद गुज़रते ही 5 सितम्बर 1894 ई. को अन्वारुल इस्लाम पुस्तक लिखी और मई 1895 ई. में इसी विषय पर पुस्तक 'ज़ियाउल हक़' लिखी जिनमें इस भविष्यवाणी के पूरा होने का विस्तारपूर्वक वर्णन किया और लिखा-

"कि ख़ुदा तआला के इल्हाम ने मुझ पर प्रकट कर दिया कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम ने इस्लाम की श्रेष्ठता और उसके रोब को

स्वीकार करके सच की ओर रुजू करने से कुछ भाग ले लिया जिस भाग ने उसके मौत के वादे और पूर्ण तौर के हाविय: में विलम्ब डाल दिया और हाविय: में तो गिरा परन्तु उस बड़े हाविय: से थोड़े दिनों के लिए बच गया जिसका नाम मृत्यु है।"

(रूहानी खज़ायन जिल्द- 9 पृष्ठ-2)

और आथम के रुजू से संबंधित जो इल्हाम हुए थे वे इस पुस्तक में लिखे और शक्तिशाली क़रीनों से आथम के सच की ओर रुजू को सिद्ध किया। फिर आप ने निरन्तर चार विज्ञापन प्रकाशित किए जिनमें आपने इस शर्त पर कि यदि आथम निम्नलिखित शब्दों में क़सम खा जाए तो उसे एक हज़ार रुपया दिया जाएगा फिर दूसरे विज्ञापन में इस इनामी रक़म को दो हज़ार और तीसरे विज्ञापन में तीन हज़ार और चौथे विज्ञापन में चार हज़ार रुपए कर दिया और क़सम के शब्द ये थे कि-

"भविष्यवाणी के दिनों में मैंने इस्लाम की ओर कदापि रुजू नहीं किया और इस्लाम की श्रेष्ठता मेरे दिल पर कदापि प्रभावी नहीं हुई और यदि मैं झूठ कहता हूं तो हे शक्तिमान ख़ुदा एक वर्ष तक मुझे मौत देकर मेरा झूठ लोगों पर प्रकट कर।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ 311-312)

और फ़रमाया-

"अब यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो एक वर्ष का वादा निश्चित और अटल है जिसके साथ कोई भी शर्त नहीं और अटल तक़्दीर है और यदि क़सम न खाएं तो फिर भी ख़ुदा तआला ऐसे अपराधी को दण्ड के बिना नहीं छोड़ेगा जिस ने सच को छुपा कर

दुनिया को धोखा देना चाहा।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-114)

इसके अतिरिक्त आप ने यह भी लिखा-

"यदि क़सम की तिथि से एक वर्ष तक जीवित बचा रहा तो वह रुपया उसका होगा और फिर इसके बाद ये समस्त क़ौमें मुझे जो दण्ड देना चाहें दें। यदि मुझ को तलवार से टुकड़े-टुकड़े करें तो मैं बहाना नहीं करूंगा और यदि संसार के दण्डों में से मुझे वह दण्ड दें जो कठोरतम दण्ड है तो मैं इन्कार नहीं करूंगा और स्वयं मेरे लिए इससे अधिक कोई बदनामी नहीं होगी कि मैं उनकी क़सम के बाद जिस का आधार मेरे ही इल्हाम पर है, झूठा निकलूँ।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-316-317)

यदि आथम ने क़सम खाने से इन्कार का मार्ग ग्रहण किया और क़सम न खाई जिससे उस का झूठा होना और अल्लाह तआला के इल्हाम की सच्चाई, कि आथम ने सच की ओर रुजू किया और इसी कारण से वह मौत के हाविय: से बच गया, दुनिया पर प्रकट हो गई। इस प्रकार से आथम से संबंधित भविष्यवाणी बड़ी चमक-दमक से पूरी हुई। इस भविष्यवाणी को विस्तारपूर्वक हम रूहानी ख़ज़ायन की जिल्द-11 की भूमिका में वर्णन करेंगे। इन्शाअल्लाह।

विनीत

जलालुद्दीन शम्स

محمّد عربی کا بروئے ہر دو سراست
کسی کہ خاک درش نیست خاک بر سرِ او

फ़तह इस्लाम

لَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكَافِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا

स्पष्ट हो कि वह भविष्यवाणी जो अमृतसर के ईसाइयों के साथ मुबाहसा होकर 5 जून 1893 ई० में की गई थी जिसकी अन्तिम तिथि 5 सितम्बर 1894 ई० थी। वह ख़ुदा तआला के इरादे और आदेश के अनुसार ऐसे तौर तथा ऐसी सफाई से निर्धारित समय-सीमा के अन्दर पूरी हो गयी कि एक न्यायवान एवं बुद्धिमान को उसके मानने और स्वीकार करने के अतिरिक्त कुछ बन नहीं पड़ता। वहां एक पक्षपाती और मूर्ख या जल्दबाज़ जवान घटनाओं एवं दुर्घटनाओं को एकत्र करके देखना नहीं चाहता जो भविष्यवाणी के बाद विरोधी सदस्य में प्रकटन में आई और इल्हामी शब्दों का अनुकरण नहीं करता अपितु हार्दिक इच्छाओं का अनुकरण करता है उसकी मूर्खता का रोग असाध्य है, और यदि वह ठोकर खाए तो उकी प्रकृति की निकृष्टता और मूर्खता तथा बुद्धूपन इसका कारण होगा। अन्यथा कुछ सन्देह नहीं कि इस्लाम की विजय हुई और ईसाइयों को अपमान और हाविय: प्राप्त हो गया भविष्यवाणी के शब्द ये थे कि - <u>दोनों सदस्यों में से जो सदस्य जान-बूझ कर झूठ का ग्रहण कर रहा है और असहाय मनुष्य को ख़ुदा बना रहा है वह इन्हीं दिनों मुबाहसे की दृष्टि से अर्थात् प्रतिदिन का एक महीना लेकर अर्थात् पन्द्रह माह तक हाविय:</u>

(नर्क) में गिराया जाएगा और उसको बहुत अधिक अपमान पहुंचेगा बशर्ते कि सच की ओर न लौटे और जो व्यक्ति सच्चाई पर है और सच्चे ख़ुदा को मानता है उसका इससे सम्मान प्रकट होगा। और उस समय जब भविष्यवाणी प्रकटन में आएगी कुछ अंधे सुजाखे किए जाएंगे और कुछ लंगड़े चलने लगेंगे तथा कुछ बहरे सुनने लगेंगे।

अब स्मरण रहे कि भविष्यवाणी में विरोधी सदस्य के शब्द से जिस के लिए हाविय: या अपमान का वादा था, एक गिरोह अभिप्राय है जो इस बहस से संबंध रखता था चाहे स्वयं बहस करने वाला था या समर्थक या प्रमुख था। हां सब से प्रथम डिप्टी अब्दुल्लाह आथम था क्योंकि वही दूसरे ईसाइयों की ओर से चयनित होकर कर पन्द्रह दिन झगड़ता रहा, परन्तु वास्तव में इस शब्द के भागीदार दूसरे सहयोगी और प्रेरक और उनके प्रमुख भी थे। क्योंकि उर्फ़ के तौर पर सदस्य पक्ष उस सम्पूर्ण गिरोह का नाम है जो एक काम परस्पर मुकाबले पर करने वाला या उस काम का सहयोगी या काम का प्रवर्त्तक या प्रस्तावक या समर्थक हो और भविष्यवाणी की किसी इबारत में यह नहीं लिखा गया कि सदस्य से अभिप्राय केवल अब्दुल्लाह आथम है। हां मैंने जहां तक इल्हाम के मायने समझे वह ये थे कि जो व्यक्ति इस पक्ष में से सामने झूठ की सहायता में स्वयं बहस करने वाला है उसके लिए हाविय: से अभिप्राय मृत्यु-दण्ड है और साथ यह भी शर्त है कि सच की ओर लौटने वाला न हो और सच की ओर न लौटने की क़ैद एक इल्हामी शर्त है जैसा कि मैंने इल्हामी इबारत में स्पष्ट शब्दों में इस शर्त को लिखा था और यह बात बिल्कुल सच, निश्चित तथा इल्हाम के अनुसार है कि यदि

मिस्टर अब्दुल्लाह का दिल जैसा कि पहले था वैसा ही इस्लाम के अपमान और तिरस्कार पर स्थापित रहता और इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार करके सच की ओर लौटने का कोई हिस्सा न लेता तो उशी समय-सीमा के अन्दर उसी के जीवन का अन्त हो जाता। परन्तु ख़ुदा तआला के इल्हाम ने मुझे जतला दिया कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम ने इस्लाम की श्रेष्ठता और उसके रोब को स्वीकार करके सच की ओर लौटने का कुछ भाग ले लिया। जिस भाग ने उसके मौत के वादे और पूर्ण तौर के हाविय: में विलम्ब डाल दिया और हाविय: में तो गिरा परन्तु उस बड़े हाविय: से थोड़े दिनों के लिए बच गया जिस का नाम मौत है और यह स्पष्ट है कि इल्हामी शब्दों और शर्तों में से कोई ऐसा शब्द या शर्त नहीं है जो प्रभाव रहित हो या जिस का कुछ मौजूद हो जाना अपना प्रभाव पैदा न करे। इसलिए अवश्य था कि जितना अब्दुल्लाह आथम के दिल ने स च की श्रेष्ठता को सवीकार किया उस का लाभ उसको पहुंच जाए। तो ख़ुदा तआला ने ऐसा ही किया और मुझे फ़रमाया -

اطلع اللّٰہ علی همه و غمه و لن تجد لسنة اللّٰہ تبدیلا و لا تعجبوا و لا تحزنوا و انتم الاعلون ان کنتم مؤمنین و بعزتی و جلالی انك انت الاعلیٰ و نمزق الاعداء کل ممزق و مکر اولئك هو یبور انا نکشف السر عن ساقه یومئذ یفرح المؤمنون ثلّة من الاولین و ثلّة من الآخرین و هذه تذکرة فمن شاء اتخذ الیٰ ربه سبیلا

अनुवाद - ख़ुदा तआला ने उसके दुख एवं सुख पर सूचना पाई और उसको छूट दी जब तक कि वह धृष्टता और गालियों और

झुठलाने की ओर झुके और ख़ुदा तआला के उपकार को भुला दे (ये अर्थ कथित वाक्य के ख़ुदा के समझाने से हैं) और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की यही सुन्नत है और तू ख़ुदाई नियमों (सुन्नतों) में परिवर्तन नहीं पाएगा। इस वाक्य के बारे में यह समझा गया कि ख़ुदा तआला की आदत इसी प्रकार से जारी है कि वह किसी पर अज़ाब नहीं उतारता जब तक ऐसे पूर्ण कराण पैदा न हो जाएं जो ख़ुदा के प्रकोप को भड़काएं। और यदि दिल के किसी कोने में भी कुछ ख़ुदा का भय छुपा हुआ हो और कुछ धड़का आरंभ हो जाए तो अज़ाब नहीं उतरता तथा दूसरे समय पर जा पड़ता है। फिर फ़रमाया कुछ आश्चर्य तक करो और ग़मगीन मत हो तथा विजय तुम्हीं को है यदि तुम ईमान पर स्थापित रहो। यह इस ख़ाकसार की जमाअत को संबोधन है। फिर फ़रमाया - मुझे मेरे सम्मान और प्रताप की क़सम है कि तू ही विजयी है (यह इस ख़ाकसार को सम्बोधन है) फिर फ़रमाया - कि हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। अर्थात् उनको अपमान पहुंचेगा और उनका मक्र (छल) तबाह हो जाएगा। इसमें यह समझाया गया कि तुम ही विजयी हो न कि शत्रु और ख़ुदा तआला बस नहीं करेगा और रुकेगा जब तक शत्रुओं के समस्त मकरों का छिद्रान्वेषण न करे और उनके मक्र को तबाह न कर दे। अर्थात् जो मक्र बनाया गया और साक्षात् किया गया उसे तोड़ डालेगा और उसको मुर्दा करके फेंक देगा तथा उसकी लाश (शव) लोगों को दिखा देगा। फिर फ़रमाया - कि हम असल भेद को उसकी पिण्डलियों में से नंगा करके दिखा देंगे अर्थात् वास्तविकता को खोलदेंगे और विजय के स्पष्ट तर्कों को प्रकट करेंगे और उस दिन मोमिन प्रसन्न

होंगे। पहले मोमिन भी और पिछले मोमिन भी। फिर फ़रमाया कि कथित कारण से मृत्यु के अज़ाब का विलम्ब हमारी सुन्नत (नियम) है जिस का हमने वर्णन कर दिया। अब जो चाहे मार्ग अपना ले ोज उसके रब्ब की ओर जाता है। इसमें कुधारणा करने वालों पर डांट और निन्दा है तथा इसमें यह भी बोध हुआ कि जो सौभाग्यशाली लोग हैं और जो ख़ुदा ही को चाहते हैं तथा किसी कंजूसी, पक्षपात, जल्दबाज़ी या ग़लत समझ के अंधकार में ग्रस्त नहीं वे इस वर्णन को स्वीकार करेंगे और ख़ुदा की शिक्षा के अनुसार उसको पाएंगे, परन्तु जो अपने नफ़्स और अपनी कामवासना की हठ के अनुयायी या सच को पहचानने वाले नहीं वे धृष्टता और कामवासना के अंधकार के कारण उसे स्वीकरा नहीं करेंगे।

ख़ुदा के इल्हाम का अनुवाद ख़ुदा के बोध कराने के साथ किया गया जिसका सारांश यही है कि हमेशा से ख़ुदा की सुन्नत इसी प्रकार से है कि जब तक कोई काफ़िर या इन्कारी अत्यधिक धृष्ट और गुस्ताख होकर अपने हाथ से अपने लिए तबाही के सामान पैदा न करे तब तक ख़ुदा तआला अज़ाब के तौर पर उसे नहीं मारता और जब किसी इन्कारी पर अज़ाब उतरने का समय आता है तो उसमें वे सामान पैदा हो जाते हैं जिन के कारण उस पर मारने का आदेश लिखा जाता है। ख़ुदा के अज़ाब के लिए यही अनादि क़ानून है और यही जारी रहने वाली सुन्नत और यही अपरिवर्तनीय नियम ख़ुदा की किताब ने वर्णन किया है और विचार करने पर प्रकट होगा कि जो मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में अर्थात् हाविय: के दण्ड के बारे में इल्हामी शर्त थी वह वास्तव में इसी सुन्नतुल्लाह के अनुसार है। क्योंकि उसके शब्द

ये हैं कि बशर्ते कि सच की ओर न लौटे। किन्तु मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने और व्यकुलतापूर्ण हालत से सिद्ध कर दिया कि उसने इस भविष्यवाणी को सम्मान की दृष्टि से देखा जो इल्हामी तौर पर इस्लामी सच्चाई की बुनियाद पर की गई थी और ख़ुदा तआला के इल्हाम ने भी मुझे यही ख़बर दी कि हम ने उस दुख एवं शोक पर सूचना पाई। अर्थात् वह इस्लामी भविष्यवाणी से भयावह हालत में पड़ा और उस पर रोब विजयी हुआ। उसने अपने कार्यों से दिखा दिया कि इस्लामी भविष्यवाणी का कैसा भयानक प्रभाव उसके दिल पर हुआ और उस पर घबराहट और दीवानगी तथा दिल की हैरत विजयी हो गयी और कैसा इल्हाम भविष्यवाणी के रोब ने उसके दिल को कैसा एक कुचला हुआ दिल बना दिया, यहां तक कि वह बहुत बेचैन हुआ और एक शहर से दूसरे शहर तथा प्रत्येक स्थान पर परेशान और भयभीत होकर फिरता रहा और उस बनावटी ख़ुदा पर उसका भरोसा न रहा जिसको विचारों का टेढ़ापन और पथभ्रष्टता के अंधकार ने ख़ुदाई का स्थान दे रखा है। वह कुत्तों से डरा और उसे सांपों का भय हुआ और अन्दर के मकानों से भी उसे भय आया। उस पर भय और भ्रम और दिल की जलन का प्रभुत्त्व हुआ और भविष्यवाणी का उस पर पूर्ण भय छा गया और घटना से पूर्व ही उसका प्रभाव उसको महसूस हुआ और इसके बिना कि कोई अमृतसर से उसको निकाले आप ही हताश, भयभीत, परेशान और बेचैन होकर एक शहर से दूसरे शहर भागता रहा और ख़ुदा ने उसके दिल का आराम छीन लिया और भविष्यवाणी से अत्यन्त प्रभावित होकर उद्विग्नों और भयभीतों की भांति जगह-जगह भटकता फिरा और ख़ुदा के इल्हाम का रोब तथा प्रभाव उसके हृदय पर ऐशा छाया क

ि उशकी रातें भयावह और दिन व्याकुलता से भर गए और सच का विरोध की हालत में जो-जो भय और खेद उस व्यक्ति पर आ जाता है जो विश्वास रखता है और गुमान करता है कि शायद ख़ुदा का अज़ाब उतरे। ये सब लक्षण उसमें पाए गए और वह अदभुत तौर पर अपनी व्याकुलता और बेचैनी जगह-जगह प्रकट करता रहा और ख़ुदा तआला ने एक आश्चर्यजनक भय और आशंका को उसके हृदय में डाल दिया कि एक बात का ख़टका भी उसके हृदय को आघात पहुंचाता रहा और एक कुत्ते के सामने आने से भी उसे मौत का फ़रिश्ता याद आया तथा किसी जगह उसे चैन न पड़ा और एक सख़्त वीराने में उसके दिन गुज़रे और उद्विग्नता, परेशानी, बेचैनी तथा व्याकुलता ने उसके हृदय को घेर लिया और डरावने विचार उस पर रात-दिन विजयी रहे और उसके हृदय की कल्पनाओं ने इस्लामी श्रेष्ठता को अस्वीकार न किया बल्कि स्वीकार किया। इसलिए वह ख़ुदा जो दयालु और कृपालु तथा दण्ड देने में धीमा है और मनुष्य के हृदय के विचारों को जांचता और उसकी कल्पनाओं के अनुसार उससे बर्ताव करता है उसने उसको उस रूप में न पाया जिस रूप में तुरन्त पूर्ण हाविय: का दण्ड अर्थात् अविलम्ब मृत्यु उस पर उतरती और अवश्य था कि वह पूर्ण अज़ाब उस समय तक रुका रहे जब तक कि वह बेबाकी और उद्दंडता से अपने हाथ से अपने लिए तबाही के सामान पैदा करे और अल्लाह के इल्हाम ने भी इसी ओर इशारा किया था क्योंकि इल्हामी इबारत में मृत्यु के अज़ाब के आने का वादा था न केवल बिना शर्त वादा। किन्तु ख़ुदा तआला ने देखा कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने अपने हृदय की कल्पनाओं से, कार्यों से, अपनी गतिविधियों से, अपने अत्यधिक भय से, अपने भयावह

एवं हताश हृदय से इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार किया, और यह हालत एक पश्चाताप का प्रकार है जो इल्हाम के अपवाद वाले वाक्य से कुछ संबंध रखता है। क्योंकि जो व्यक्ति इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं करता अपितु उसका भय उस पर विजयी होता है वह एक प्रकार से इस्लाम की ओर लौटता है। यद्यपि ऐसा लौटना आख़िरत के अज़ाब से बचा नहीं सकता परन्तु सासांरिक अज़ाब में धृष्टता के दिनों तक विलम्ब अवश्य डाल देता है। यही वादा पवित्र क़ुर्आन और बाइबल में मौजूद है और जो कुछ हमने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में और उसके दिल की हालत के बारे में वर्णन किया। ये बातें बिना सबूत नहीं अपितु मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने स्वयं को अत्यन्त आपदाग्रस्त बना कर और स्वयं को ग़रीबी के कष्टों में डालकर तथा अपने जीवन को एक शोकाकुल हालत बनाकर और प्रतिदिन भय तथा हताशा की हरकतें करके एक दुनिया को अपनी परेशानी और दीवानापन दिखा कर बड़ी सफ़ाई से इस बात को सिद्ध कर दिया है कि उसके हृदय ने इस्लामी श्रेष्ठता एवं सच्चाई को स्वीकार कर लिया। क्या यह बात झूठ है कि उसने भविष्यवाणी के **रोब वाले विषय** को पूर्णरूप से स्वयं पर डाल लिया और एक मनुष्य एक सच्ची एवं वास्तविक विपत्ति से भयभीत हो सकता है उतना ही वह इस भविष्यवाणी से भयभीत हुआ और उसका हृदय बाह्य सुरक्षाओं से सन्तुष्ट न हो सका और सच्चाई के रोब ने उसे पागल सा बना दिया। तो ख़ुदा तआला ने न चाहा कि उसे ऐसी हालत में मार डाले। क्योंकि यह उसके अनादि क़ानून और अनादि सुन्नत के विरुद्ध है तथा यह इल्हामी शर्त से उलट एवं विपरीत है और यदि इल्हाम अपनी शर्तों को छोड़कर अन्य प्रकाहर से प्रकटन

करे तो यद्यपि मूर्ख लोग इस से प्रसन्न हों, परन्तु ऐसा इल्हाम ख़ुदा का इल्हाम नहीं हो सकता और यह असंभव है कि ख़ुदा अपनी प्रस्तावित शर्तों को भूल जाए। क्योंकि शर्तों का ध्यान रखना सच्चे के लिए आवश्यक है और सब सत्यनिष्ठों से अधिक सत्यनिष्ठ है। हां जिस समय मिस्टर अबुदल्लाह आथम इस शर्त के नीचे से स्वयं को बाहर करे और अपने लिए अपनी गुस्ताख़ी तथा धृष्टता से तबाही के सामान पैदा करे तो वे दिन निकट आ जाएंगे और हाविय: का दण्ड पूर्णरूप से प्रकट होगा। और यह भविष्यवाणी अद्‌भुत तौर पर अपना प्रभाव दिखाएगी।

ध्यानपूर्वक स्मरण रखना चाहिए कि हाविय: में गिराया जाना जो असल शब्द इल्हाम में हैं वे अब्दुल्लाह आथम ने अपने हाथ से पूरे किए और जिन कष्टों में उसने स्वयं को डाल लिया तथा जिस ढंग से निरन्तर घबराहट का सिलसिला उस के दामनगीर हो गया और भय एवं डर ने उसके हृदय को पकड़ लिया यही **असल हाविय:** (नर्क) था जिसको चर्चा इल्हामी इबारत में मौजूद भी नहीं। निस्सन्देह यह कष्ट एक हाविय: था जिसको अब्दुल्लाह आथम ने अपनी हालत के अनुसार भुगत लिया। परन्तु वह बड़ा हाविय: जो मौत से अभिप्राय किया गया है उसमें कुछ छूट दी गयी, क्योंकि सच का रोब उसने अपने सर पर ले लिया। इसलिए वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में उस शर्त से कुछ लाभ प्राप्त करने का अधिकारी हो गया जो इल्हामी इबारत में दर्ज है, और अवश्य है कि प्रत्येक बात का प्रकटन इसी प्रकार से हो जिस प्रकार से ख़ुदा तआला के इल्हाम में वादा हुआ, और मैं विश्वास रखता हूं कि हमारे इस वर्णन में वही व्यक्ति विरोध

करेगा जिसको मिस्टर अब्दुल्लाह आथम की इन समस्त घटनाओं पर पूर्णरूप से सूचना न होगी और या जो पक्षपात, कंजूसी और निष्ठुरता से सच को छुपाना चाहता है।

यदि ईसाई लोग अब भी झगड़ें और अपनी छलपूर्ण कार्रवाइयों को कुछ चीज़ समझें या कोई अन्य व्यक्ति इस में सन्देह करे तो इस बात के निर्णय के लिए **विजय किस की हुई,** क्या अहले इस्लाम को जैसा कि वास्तव में है या ईसाइयों को जैसा कि वे अन्याय के मार्ग से विचार करते हैं तो मैं उनके छिद्रान्वेषण★ के लिए मुबाहले के लिए तैयार हूं। यदि वे झूठ और चालाकी से न रुकें तो मुबाहल: इस प्रकार से होगा कि एक तिथि निर्धारित होकर हम दोनों पक्ष एक मैदान में उपस्थित हों और मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब खड़े होकर तीन बार इन शब्दों में इक़रार करें कि-

> **"इस भविष्यवाणी की अवधि में इस्लामी रोब एक पलक झपकने के लिए भी मेरे दिल पर नहीं आया और मैं इस्लाम तथा इस्लाम के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) झूठ पर समझता रहा और समझता हूं और सच्चाई का विचार तक नहीं आया और हज़रत ईसा की इब्नियत और ख़ुदाई पर विश्वास रखता रहा और रखता हूं और ऐसा ही विश्वास जो प्रोटेस्टेन्ट समुदाय के ईसाई रखते हैं और यदि मैंने वास्तविकता के विरुद्ध कहा है और सच को छुपाया है तो हे सामर्थ्यवान ख़ुदा! मुझ पर**

★ पर्दादरी - दोष प्रकट करना (अनुवादक)

एक वर्ष में मृत्यु का अज़ाब उतार।"

इस दुआ पर हम आमीन कहेंगे और यदि दुआ का एक वर्ष तक प्रभाव न हुआ और वह अज़ाब नहीं उतरा जो झूठों पर उतरता है तो हम एक हज़ार✷ रुपया मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को बतौर जुर्माना देंगे। चाहें तो पहले किसी जगह जमा करा लें और वह ऐसी दरख़्वास्त★ न करें तो निश्चित समझो कि वह झूठे हैं और अतिशयोक्ति के समय अपना दण्ड पाएंगे। हमें स्पष्ट तौर पर इल्हाम द्वारा ज्ञात हो गया है कि इस समय तक मृत्यु का **अज़ाब** टलने का यही कारण है कि अब्दुल्लाह आथम ने सच की श्रेष्ठता को अपनी भयंकर हालत के कारण स्वीकार करके उन लोगों से किसी श्रेणी पर समानता पैदा कर ली है जो सच की ओर लौटते हैं। इसलिए अवश्य था कि उनको इस शर्त का कुछ लाभ प्राप्त होता। इस बात को वे लोग भली भांति समझ सकते हैं जो उनकी हालतों पर विचार करें तथा उनकी समस्त व्याकुलताओं को एक जगह जोड़ कर देखें कि कहां तक पहुंच गई थीं। क्या वह हाविय: था या कुछ और था और यदि कोई अकारण इन्कार करे तो उसको समझाने कि लिए वह अटल फ़ैसला है जो मैंने लिख दिया है ताकि हर झूठे का मुंह काला हो जाए। हम अपने विरोधियों को विश्वास दिलाते हैं कि यही सच है और हम फिर लिखते हैं कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने हाविय:

✷ **नोट -** हम इक़रार करते हैं यह हज़ार रुपया नियमित रूप से लिखित तहरीर लेने के बाद दे देंगे यह ठोस इक़रार है।

★ **नोट -** दरख़्वास्त के लिए प्रकाशन के दिन से अर्थात् विज्ञापन द्वारा पहुंचने के बाद स्पताह की समय-सीमा है।

का कुछ दण्ड अवश्य भुगत लिया है और न केवल इतना ही अपितु कुतरब और मानिया के मुक़द्दमे भी उनके मस्तिष्क को प्राप्त हो गए हैं हम जिनकी ओर ख़ुदा के इल्हाम का संकेत पाते हैं और जिसके परिणाम शीघ्र ही खुलेंगे किसी के छुपाने से छुप नहीं सकते। अत: हे सत्य के अभिलाषियो! निस्सन्देह समझो कि हाविय: में गिरने की **भविष्यवाणी** पूरी हो गयी और इस्लाम की **विजय हुई** और ईसाइयों को अपमान पहुंचा। हां यदि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम अपने ऊपर रोने-चिल्लाने का प्रभाव न होने देता तथा अपने कार्यों से अपनी दृढ़ता दिखाता और अपने केन्द्र से जगह-जगह भटकता न फिरता तथा अपने हृदय पर भ्रम और भय तथा परेशानी के विजयी न करता अपितु अपनी साधारण प्रसन्नता और दृढ़ता में इन समस्त दिनों को व्यतीत करता तो निस्सन्देह कह सकते थे कि वह हाविय: में गिरने से दूर रहा परन्तु अब तो उसका यह उदाहरण हुआ कि कयामत से पहले कयामत देख ली। उस पर ग़म के वे पहाड़ पड़ें जो उस ने अपने सम्पूर्ण जीवन में उनका उदाहरण नहीं देखा था। तो क्या यह सच नहीं गकि वह इन समस्त दिनों में वास्तव में हाविय: में रहा। यदि तुम एक ओर हमारी भविष्यवाणी के इल्हामी शब्दों को पढ़ो और एक ओर उसके उन कष्टों को जांचो जो उस पर आए तो तुम्हें इस बात में कुछ भी सन्देह नहीं रहेगा कि **वह निस्सन्देह हाविय: में गिरा** अवश्य गिरा और उसके हृदय पर वह खेद और शोक और बौखलाहट आई जिसको हम अग्नि के अज़ाब से कम नहीं कर सकते। हां हाविय: का उच्चतम परिणाम जो हमने समझा और जो हमारी व्याख्या की इबारत में दर्ज है अर्थात् मौत वह अभी तक वास्तविक तौर पर नहीं

आई। क्योंकि उसने इस्लाम की श्रेष्ठता के भय से लाभ प्राप्त कर लिया। परन्तु मृत्यु के करीब-करीब उसकी हालत पहुंच गयी और वह दर्द एवं दु:ख के हाविय: में अवश्य गिरा। और हाविय: में गिरने का शब्द उस पर चिरतार्थ हो गया। अत: **निश्चित समझो कि इस्लाम को विजय प्राप्त हुई** और ख़ुदा तआला का हाथ ऊंचा हुआ और इस्लाम का कलिमा ऊंचा हुआ तथा ईसाइयत नीचे गिरी।

فالحمدللہ علی ذلک

यह तो मिस्टर अब्दुल्लाह आथम का हाल हुआ परन्तु उसके शेष साथी भी जो बहस के सदस्य के शब्द में सम्मिलित थे और जंगे मुक़द्दस के मुबाहसे से संबंध रखते थे चाहे वह संबंध सहायता का था या व्यवस्थापक होने का या बहस के प्रस्तावक या समर्थक होने या प्रमुख होने का उनमें से कोई भी हाविय: के प्रभाव से ख़ाली नहीं रहा और उन सब ने समय-सीमा के अन्दर अपनी-अपनी हालत के अनुसार हाविय: का स्वाद चख लिया। अत: सर्वप्रथम ख़ुदा तआला ने पादरी रायट को लिया जो वास्तव में अपने पद और श्रेणी की दृष्टि से इस जमाअत का प्रमुख था और वह बिल्कुल जवानी में एक अकस्मात मृत्यु से इस संसार से गुज़र गया। और ख़ुदा तआला ने उस की असमय मृत्यु डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और ऐसा ही उसके अन्य समस्त दोस्तों, प्रियजनों और अधीन कार्यकर्ताओं को कठोर आघात पहुंचाया★ और मातम के

★ **फुटनोट-** पादरी रायट साहिब की मृत्यु पर जो अफ़सोस मिर्ज़ा में व्यक्त किया गया, उसमें ईसाइयों की व्याकुलों जैसी तथा भयभीत हालत का दृश्य निम्नलिखित शब्दों से हृदय रूपी दर्पण में अंकित हो सकता है जो उस समय प्रीचर के भय ग्रस्त और प्रकोपित हृदय से निकले और वे ये हैं - आज रात ख़ुदा के प्रकोप की लाठी

कपड़े पहना दिए और उसकी असमय मौत ने उनको ऐसे दुख और दर्द में डाला जो हाविय: से कम न था और ऐसा ही पादरी हाविल भी ऐसी कठोर बीमारी में पड़ा कि एक लम्बे समय के बाद मर मर के बचा और पादरी अब्दुल्लाह भी भयंकर रोगों के हाविय: में गिरा और मालूम नहीं कि बचा या गुज़र गया तथा जहां तक हमें जानकारी है इनमें से कोई भी मातम, कष्य या अपमान तथा बदनामी से रिक्त नहीं रहा। और न केवल यही अपितु उन्हीं दिनों में ख़ुदा तआला ने विशेष तौर पर उनको एक अपमान और बदनामी पहुंचाई जिस से समस्त नाक कट गए और वे लोग मुसलमानों को मुंह दिखाने के योग्य न रहे। क्योंकि मैंने ख़ुदा तआला से सामर्थ्य पाकर ईसाई पादरियों के ज्ञान की क़लई खोलने के लिए और इस बात को व्यक्त करने के लिए कि क़ुर्आन तथा इस्लाम पर प्रहार करने के लिए भाषा जानने की आवश्यकता है और ये लोग अरबी भाषा से अनभिज्ञ हैं। एक पुस्तक जिसना नाम **नूरुल हक़** है सरस अरबी में लिखी और इमादुद्दीन तथा अन्य समस्त पादरियों को रजिस्ट्री करा कर पत्र भेजे गए कि यदि अरबी जानने का दावा है जो इस्लाम मामलों में चिन्तन करने और क़ुर्आन की सरसता पर प्रहार करने के लिए आवश्यक है तो इस पुस्तक के मुकाबले पर अरबी भाषा में ऐसी ही पुस्तक बना दें और पांच हज़ार रुपया इनाम पाएं और यदि इनाम के बारे में सन्देह हो तो पांच हज़ार रुपया पहले जमा करा दें और यह भी लिखा गया कि इस्लामी सच्चाई का ख़ुदा तआला की ओर से यह

शेष हाशिया- असमय हम पर चली और उसकी गुप्त तलवार ने बेखबरी में हम को क़त्ल किया और बस, रायट साहिब अमृतसर के आनरेरी मिशनरी थे। इसके अतिरिक्त पादरी फोरमन लाहौर में मरे।

एक निशान है। यदि इसको तोड़ दें और अरबी में ऐसी सरस-सुबोध पुस्तक बना दें तो कथित इनाम अविलम्ब उन को मिलेगा जिस जगह चाहें अपनी सन्तुष्टि के लिए रुपया जमा करा लें और मुक़ाबले पर पुस्तक बनाने की हालत में न केवल इनाम अपितु भविष्य में स्वीकार किया जाएगा कि वास्तव में वे अपने दावे के अनुसार मौलवी हैं और उनको अधिकार पहुंचता है कि पवित्र क़ुर्आन की सरसता एवं सुबोधता पर ऐतराज़ करें तथआ व मुक़ाबले पर पुस्तक बनाने से हमारे इल्हाम का झूठ भई बड़े आसान तरीक़े से सिद्ध कर देंगे और यदि वे ऐसा न कर सकें तो फिर सिद्ध होगा कि वे झूठ और इफ़्तिरा (झूठ गढ़ना) से स्वयं का मौलवी नाम रखते हैं और वास्तव में असभ्य एवं मूर्ख हैं तथा इस स्थिति में वह हज़ार लानत भी उन पर पड़ेगी जो पुस्तक नूरुलहक़ के चार पृष्ठों में अपितु कुछ अधिक में केवल इस उद्देश्य से लिखी गयी है कि यदि ये पादरी लोग मुक़ाबले पर पुस्तक न बना सकें और न स्वयं को मौलवी और अरबी के जानकार कहलाने से रुक जाएं और न क़ुर्आन की चमत्कारपूर्ण सरसता पर प्रहार करने से रुकें तो उन पर यह हज़ार लानत क़यामत तक है। परन्तु इन कड़ी लानतों के बावजूद जो मरने से करोड़ों गुना निकृष्ट हैं पादरी इमादुद्दीन और अन्य समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान के ईसाई जो मौलवी कहलाते और अरबी जानने का दम भरते थे उत्तर लिखने से असमर्थ रह गए तथा इसके बावजूद अपने अवैध प्रहारों से न रुके अपितु उन्हीं दिनों में पादरी इमामुद्दीन ने शर्म और लज्जा को पृथक रख कर पवित्र क़ुर्आन का अनुवाद छापा और अपनी ओर से उस पर नोट लिखे और उस हज़ार लानत का प्रथम वारिस स्वयं को बनाया और जैसा कि मुबाहसे

की भविष्यवाणी में दर्ज था कि उस पक्ष को कड़ा अपमान पहुंचेगा जो जान-बूझ कर झूठ को अपना रहा है और असहाय व्यक्ति को ख़ुदा बना रहा है वैसा ही वह समस्त अपमान और बदनामी उन मूर्ख पादरियों के हिस्से में आई और भविष्य में किसी के सामने मुंह दिखाने के योग्य न रहे और हम लिख चुके हैं कि ये सब लोग बहस के पक्ष में सम्मिलित और मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के सहायक और समर्थक थे अपितु बहस के बाद भी ये लोग बेईमानी के तौर पर अखबारों के कालम काले करते रहे। अब बुद्धिमान सोच ले कि प्रत्येक को उनमें से हाविय: प्राप्त हो या कुछ कमी रह गई। हम इस स्थान पर प्रत्येक बुद्धिमान और हृदय की बात जानने वाले को निर्णायक बनाते हैं कि क्या इतना अपमान और बदनामी हाविय: का नमूना है या नहीं और क्या वह अपमान जिसका इल्हामी इबारत में वादा था उस से ये लोग बच सके या पूरा-पूरा हिस्सा लिया। यह ख़ुदा का कार्य है कि उसने भविष्यवाणी के बाद प्रत्येक पहलू से उन लोगों को दोषी किया और सब पर भविष्यवाणी को जाल के समान डाल दिया, कुछ को इस्राईली क़ौम के अवज्ञाकारियों की भांति दिन-रात के धड़के, भय और डर के गढ़े में ढकेल दिया जैसे मिस्टर अब्दुल्लाह आथम कि ख़ुदा तआला ने उसेक हृदय पर भ्रम को विजयी कर दिया और वह यहूदी क़ौम की तरह प्राणों के डर से जगह-जगह भटकता फिरा और उनमें पागलपन की हालतें पैदा हो गईं और उसके होश-व-हवास उड़ गए और क़ुतरुब* और मानिया के रोग का बहुत सा भाग उसको दिया गया और उसके मस्तिष्क का स्वास्थ्य जाता रहा और होश में अन्तर आया और हर

* **क़ुतरुब -** पागलपन का एक प्रकार है, इसका रोगी एक स्थान पर नहीं ठहरता, सबसे भागता है (अनुवादक)

समय मौत सामने दिखाई दी और उसने अपने हृदय में इतने डर, भय और त्रास को स्थान दिया कि इस्लाम की श्रेष्ठता पर मुहर लगा दी और अपने इस भय तथा धड़के को शहर-शहर लिए फिरा और हज़ारों को इस बात पर गवाह बना दिया कि उस के हृदय ने इस्लाम की महानता और सच्चाई को स्वीकार कर लिया है। यह कहना सही नहीं होगा कि वह इसलिए शहर-शहर भागता फिरा कि मुसलमानों के क़त्ल करने से -रता था क्योंकि अमृतसर की पुलिस का कुछ दोषपूर्ण और अधूरा प्रबन्ध था ताकि वह लुधियाना की पुलिस की शरण लेता और फिर लुधियाना में किसी ने उस पर कोई आक्रमण नहीं किया था ताकि वह फ़ीरोज़पुर की ओर भागता।

तो असल वास्तविकता यह है कि वह **इस्लामी प्रताप के कारण**★उस व्यक्ति के समान हो गया जो क़ुतरुब के रोग में ग्रस्त हुआ और ख़ुदाई श्रेष्ठता ने उसके मस्तिष्क पर बहुत कुछ काम किया जिसको वह सहन न कर सका और ख़ुदा तआला ने उस ग़म में एक पागल की तरह पाया तो उसने अपने इल्हामी वादों के अनुसार उसे उश समय तक विलम्ब दिया जब तक वह अपना धृष्टता की ओर लौट कर गालिया, अपमान और गुस्ताख़ी की ओर झुके और धृष्टता एवं गुस्ताख़ी के कार्यों की अग्रसर होकर अपने लिए तबाही के सामान पैदा करे और ख़ुदा तआला के स्वाभिमान का प्रेरक हो और यदि कोई इन्कार करे कि ऐसा नहीं में वह इस्लामी श्रेष्टता से

★**नोट -** यह सिद्ध है कि यह ख़ाकसार किसी स्थान का बादशाह न था अपितु क़ौम का परित्यक्त और मुसलमानों की दृष्टि में काफ़िर और अपने चाल चलन की दृष्टि से कोई ख़ून करने वाला तथा डाकू नहीं था फिर इतना भय कहां से पड़ गया। यदि सच का भय नहीं था तो और क्या था?

नहीं डरा तो उस पर आवश्यक होगा कि इस सबूत के लिए मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को उस इक़रार और शपथ के लिए तैयार करे जिस से एक हज़ार रुपया भी उसको मिलेगा अन्यथा ऐसे व्यक्ति का नाम मूर्ख, पक्षपाती के अतिरिक्त और क्या रख सकते हैं। क्या यह बात सच्चाई को खोलने के लिए पर्याप्त नहीं कि हमने केवल अब्दुल्लाह की परिस्थितियां प्रस्तुत नहीं कीं परन्तु हज़ार रुपए का विज्ञापन की ओर मुख नहीं करेगा क्योंकि झूठा है और अपने दिल में भली भांति जानता है कि वह इस भय से मरने तक पहुंच चुका था और याद रहे कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम में पूर्ण अज़ाब की बुनियादी ईंट रख दी गई है और वह शीघ्र ही कुछ तहरीकों से प्रकटन में आ जाएगी। ख़ुदा तआला के समस्त कार्य संतुलन और दया से हैं और द्वेष रखने वाले मनुष्य की भांति अकारण जल्दबाज़ नहीं और उसकी तलवार डरने वाले हृदय पर नहीं चलती अपितु कठोर एवं धृष्ट पर और वह अपने एक-एक शब्द का ध्यान रखता है। तो जिस हालत में इल्हामी इबारत में उद्देश्य यह था कि सच की ओर कुछ झुकने की हालत में मौत नहीं आ सकती अपितु मौत उसी हालत में होगी जब कि धृष्टता और गुस्ताखी में बढ़ जाए। तो फिर क्योंकर संभव था कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम पर ऐसे दिनों में मौत आ जाती जब कि उसने अपने व्याकुलतापूर्ण कार्यों से एक संसार को दिखा दिया कि उसके हृदय पर इस्लाम की श्रेष्ठता बहुत प्रभाव डाल रही है। इस बात में कुछ भी सन्देह नहीं कि जिस दिल पर इस्लामी भविष्यवाणी की श्रेष्ठता बहुत ही विजयी हो गई यद्यपि उस दिल ने अपने कामवसना संबंधी संबंधों के कारण अपने धर्म को छोड़ना न चाहा। परन्तु निस्सन्देह उसेक

दिल ने सच का सम्मान करके लौटने वालों में स्वयं को सम्मिलित कर लिया। अपितु एक भयभीत हुआ कि बहुत से सामान्य मुसलमान भी ऐसे नहीं होते। भय के अधिकता ने उसे पागल सा बना दिया। तो ख़ुदा तआला की पूर्ण दया ने यह छोटा लाभ उसे पहुंचाने से संकोट नहीं किया कि हाविय: के पूर्ण दण्ड में इस्लामी शर्त के अनुसार विलम्ब डाल दिया, यद्यपि हाविय: से बच गया। ख़ुदा तआला ने उस पर जितना रोब डाल दिया यह वह बात है जो इस युग के इतिहास में इसका उदाहरण नहीं मिल सकता।

हम दोबार लिखते हैं कि उसने इस का सबूत अपनी भयग्रस्त हालत से स्वयं दे दिया और यदि कोई पक्षपाती अब भी सन्देह करे तो फिर दूसरा मापदण्ड वही है जो हम लिख चुके हैं और हम ज़ोर से कहते हैं कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम इश मुकाबले की ओर नहीं लौटेगा क्योंकि वह अपने दिल की हालतों से बेखबर नहीं और उसका दिल गवाही देगा कि हमारा इल्हाम सच है यद्यपि वह इस बात को प्रकट न करे, परन्तु उसका दिल इस बयान का सत्यापन करने वाला होगा। परन्तु यदि दुनिया के दिखावे से इस मुकाबले के लिए आएगा तो फिर ख़ुदा का अज़ाब पूर्ण रूप से लौटेगा और हम सच्चाई पर हैं और दुनिया देखेगी कि हमारी ये बातें सही हैं या नहीं और हम लिख चुके हैं कि ख़ुदा तआला ने यह भी दिखा दिया कि विरोधी पक्ष जो बहस करने वाले या उनके समर्थक, या व्यवस्थापक या प्रस्तावक थे उनमें से कोई भी अज़ाब के स्पर्श से नहीं बचा जैसा कि हम अभी विवरण दे चुके हैं। यह ख़ुदा तआाल का कार्य है। मुबारक वह जो इसके समस्त पहलुओं को सोचें और अपने आप पर अत्याचार न

करें। हम सबूत के बिना किसी पर जब्र करना नहीं चाहते अपितु ये घटनाएं सूर्य के समान प्रकाशमान है और हम विचार करने के लिए सब से समक्ष रखते हैं। और यदि कोई ऐसा ही अंधा हो जो कुछ समझ न सके तो हम ने उस विज्ञापन में उसके लिए ऐसा नवीन मापदण्ड निर्धारित कर दिया है जो बड़ी सफाई से उसको सन्तुष्ट कर सकता है बशर्ते कि स्वाभाविक समझ और इन्साफ़ से हिस्सा रखता हो और द्वेष के अंधकार के नीचे दबा हुआ न हो और न बुद्धि से वंचित हो।

और मुसलमान विरोधियों को चाहिए कि ख़ुदा तआला से डरें और पक्षपात् एवं इन्कार में अन्य क़ौमों के भागीदर न बन जाएं क्योंकि अन्य क़ौमें ख़ुदा तआला के नियमों और आदतों से अपरिचित हैं और उसकी परीक्षाओं एवं आज़मायशों से अनभिज्ञ परन्तु इस्लामी शिक्षा पाने वाले इस बात को भली-भांति जानते हैं कि ख़ुदा तआला भविष्यवाणियों में अपनी शर्तों का क्यों ध्यान रखता है अपितु कभी ख़ुदा तआला ऐसी शर्तों का भी पाबंद होता है जो भविष्यवाणियों में स्पष्ट तौर पर वर्णन नहीं की गईं ताकि अपे बन्दों की परीक्षा ले और कभी ये परीक्षा बहुत ही बारीक होती है जो बाह्य रूप से वादा पूर्ण न करने से समानता रखती है। जैसा कि इस बहस को सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि. ने अपनी पुस्तक "फ़तहुल ग़ैब" के उन्नीसवे निबंध पृष्ठ-115 तथा दूसरे स्थानों में वर्णन किया है और शाह वलीउल्लाह साहिब ने अपनी पुस्तक "फ़ुयूज़ुल हरमैन" के पृष्ठ-74 में इसी बहस को बहुत विस्तार से लिखा है। अन्वेषण करने वाले इन स्थानों को देखें और विचार करें परन्तु यह भविष्यवाणी तो अपने साथ स्पष्ट वियजी के लक्षण रखती है। चाहिए कि लोग पक्षपात् को

पृथक करके सोचें कि इस भविष्यवाणी के क्या-क्या लक्षण स्पष्ट तौर पर प्रकट हो गए। क्या कोई कह सकता है कि विरोधी पक्ष पर अर्थात् उस समस्त गिरोह पर जो-जो दुर्घटनाएं पड़ीं वे संयोग से हैं और ख़ुदा तआला के इरादे के बिना प्रकट हो गईं हैं।

हे मुसलमानो! ख़ुदा के लिए इसमें विचार करो और उन में भाग मत लो जिनकी आंखें पक्षपात् से जाती रहीं। जिन के हृदय कंजूसी के कारण मोटे हो गए। हमारी भविष्यवाणी ख़ुदा तआला ने जहां तक इल्हामी शब्द और शर्तें उसकी ज़िम्मेदार थीं, बड़ी सफाई से पूरी कर दी। अब वह रस्सा जो हम ने, झूठ बोलने वाला निकलने की स्थिति में, अपने लिए प्रस्तावित किया था इन ईसाइयों के गले में पड़ गया जिन पर यह प्रारब्ध उतरा और उस रस्से के भागीदार वे नादान भी हैं जो समझने वाला दिल नहीं रखते और पक्षपात् ने उनको अंधा कर दिया। निस्सन्देह इस्लाम की विजय हुई और ईसाइयों को हर तरफ से अपमान और बदनामी पहुंची। ख़ुदा तआला की आवाज़ ने इस विजय को प्रकाशमान करके दिखा दिया तथा भविष्य में और भी अपनी कृपा से दिखाएगा। परन्तु ईसाई लोग शैतानी योजना तथा शैतानी आवाज़ से चाहते हैं कि विजय का दावा करें परन्तु ख़ुदा उनके षड्यंत्र को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। अवश्य था कि वे ऐसा दावा करते क्योंकि आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी है जिसका सारांश और उद्देश्य यह है कि उस महदी मौऊद के समय जो अन्तिम युग में आने वाला है महदी के गिरोह और ईसाइयों का एक मुबाहस: होगा।

और आकाशीय आवाज़ अर्थात् आकाशीय निशानों, लक्षणों तथा

प्रसंग से यह सिद्ध होगा कि '**अलहक़्क़ मअ आले मुहम्मद**' अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लोग जो आल (सन्तान) की तरह तथा उसके वारिस हैं सच पर हैं और शैतानी पाखंडों से जगह-जगह यह आवाज़ आएगी कि '**अलहक मअ आले ईसा**' अर्थात् जो ईसा के लोग कहलाते हैं वे सच पर हैं परन्तु अन्त में ख़ुदा तआला खोल कर दिखा देगा कि आले मुहम्मद ही सच पर है और इस्लाम धर्म ही की विजय है। अत: हे विरोधी लोगो! जान बूझ कर स्वयं को तबाह मत करो, सच इस्लाम के साथ है और होगा, मुबारक वह दिल जो बारीक समझ रखते हैं और पक्षपात् और कंजूसी के गढ़े में नहीं गिरते।

वस्सलामो अला मनित्तबअल हुदा।

विज्ञापन दाता

ख़ाकसार-ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

गुरदासपुर 5 सितम्बर 1894 ई०

हाशिया नम्बर - 1

जो लोग ख़ुदा तआला की अनादि आदत और सुन्नतों से परिचित हैं और ईश्वरीय पुस्तकों के उद्देश्य और सार से परिचित हैं वे इससे इन्कार नहीं कर सकते कि ख़ुदा तआला अपनी भविष्यवाणियों में उन समस्त बातों की पाबन्दी रखता है जो उसकी अपरिवर्तनीय आदतों और नियमों में सम्मिलित हैं चाहे वह किसी भविष्यवाणी में स्पष्ट तौर पर वर्णन की जाएं तौर पर पाई जाएं या बिल्कुल वर्णन न की जाएं। क्योंकि जो बातें अपरिवर्तनीय नियमों में सम्मिलित हो चुकी हैं वे किसी भविष्यवाणी में स्पष्ट तौर पर वर्णन की जाएं या केवल बतौर संक्षेप या मात्र संकेत के तौर पर पाई जाएं जा बिल्कुल वर्णन न की जाएं। क्योंकि जो बातें अपरिवर्तनीय नियमों में सम्मिलित हो चुकी हैं वे किसी प्रकार परिवर्तित नहीं हो सकतीं और यदि मान लें कि किसी भविष्यवाणी में उन बातों का वर्णन नहीं तथापि यह असंभव होगा कि कोई भविष्यवाणी उनके बिना प्रकट हो सके क्योंकि ख़ुदा के नियमों में अन्तर नहीं आ सकता। उदाहरणतया पवित्र क़ुर्आन और एनी ख़ुदाई पुस्तकों से ज्ञात होता है कि जितने लोगों पर इसी संसार में अज़ाब के तौर पर मौत और तबाही आई वह केवल इसलिए नहीं आई कि वे लोग धार्मिक हैसियत के कारण असत्य पर थे। उदाहरणयता मूर्ति पूजक थे या नक्षत्र-पूजक या अग्नि पूजक या किसी अन्य सृष्टि के उपासना करते थे। क्योंकि धार्मिक पथभ्रष्टता का हिसाब-किताब क़यामत पर डाला गया है और केवल असत्य पर होने का तथा काफ़िर ठहराने से इस दुनिया में किसी पर

अज़ाब नहीं आ सकता उस अज़ाब के लिए नर्क और **आख़िरत का घर** बनाया गया है अपितु काफ़िरों के लिए यह दुनिया बतौर स्वर्ग के है और **मोमिन** ही प्राय: इसमें दुख और कष्ट उठाते हैं اَلدُّنْيَا جَنَّةُ الْكَافِرِ وَسِجْنُ الْمُؤْمِنِ तो यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि जिस हालत में दुनिया काफ़िर का स्वर्ग है और अवलोकन भी इसी पर गवाही दे रहा है कि काफ़िर प्रत्येक सांसारिक नेमत और दौलत में अग्रसर हो गए हैं और पवित्र क़ुर्आन में जगह-जगह इसी बात की अभिव्यक्ति है कि काफ़िरों पर प्रत्येक सांसारिक नेमत के दरवाज़े खोले जाते हैं तो फिर कुछ काफ़िर क़ौमों पर अज़ाब क्यों आए और ख़ुदा तआला ने उन को पत्थर और आंधी, तूफ़ान तथा संक्रामक रोगों से क्यों मार डाला।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि समस्त अज़ाब मात्र कुफ़्र के कारण नहीं हुए अपितु जिन पर यह अज़ाब आए वह ख़ुदा के भेजे हुए के झुठलाने, उपहास और हंसी-ठट्ठा करने तथा कष्ट पहुंचाने में सीमा से बढ़ गए थे और ख़ुदा तआला की दृष्टि में उनका फ़साद, पाप, अत्याचार और कष्ट देना चरम सीमा को पुहंच गया था और उन्होंने अपने मरने के लिए स्वयं सामान पैदा किए। तब ख़ुदा का क्रोध जोश में आया और भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाबों से उनको मार दिया। इस से ज्ञात हुआ कि सासांरिक अज़ाब का कारण कुफ़्र नहीं है बल्कि बुराई है और अहंकार में सीमा से अधिक बढ़ जाना कारण है और ऐसा अदमी चाहे मोमिन ही क्यों न हो जब ज़ुल्म और कष्ट देने तथा अहंकार में सीमा से बढ़ेगा और ख़ुदा की श्रेष्ठता को भुला देगा तो ख़ुदा का अज़ाब उसकी ओर अवश्य मुख करेगा। और जब

एक काफ़िर दरिद्र रूप में रहेगा और उस के साथ भय लगा रहेगा तो यद्यपि वह अपनी धार्मिक पथ भ्रष्टता के कारण नर्क के योग्य है परन्तु सांसारिक अज़ाब उस पर नहीं आएगा। तो सांसारिक अज़ाब के लिए यही एक अनादि और सुदृढ़ फ़िलास्फ़ी है और यही वह ख़ुदा की समस्त किताबों से मिलता है। जैसा कि महाप्रतापी ख़ुदा पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है -

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا (बनी इस्राईल-17)

अर्थात् जब हमारा इरादा इस बात की ओर संबंधित होता है कि किसी बस्ती के लोगों को मार डालें तो हम बस्ती के नेमतों वाले और अय्याश लोगों को इस ओर ध्यान दिलाते हैं कि वे अपने दुष्कर्मों में संतुलन की सीमा से बाहर निकल जाते हैं तो उन पर ख़ुदा के नियम का कथन सिद्ध हो जाता है कि वे ऐसे अत्याचारों में चरम सीमा तक पहुंच जाते हैं, तब हम उनको एक कष्टदायक मृत्यु से मार देते हैं। फिर एख अन्य आयत में फ़रमाया है -

وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ (अलकसस-60)

अर्थात् हम ने कभी किसी बस्ती को तबाह नहीं किया परन्तु केवल ऐसी हालत में कि जब उस के रहने वाले अत्याचार पर कटिबद्ध हों।

स्मरण रहे कि यद्यपि शिर्क भी एक ज़ुल्म अपितु महा ज़ुल्म है परन्तु यहां ज़ुल्म से अभिप्राय वह उद्दण्डता है जो हर से गुज़र जाए और उपद्रवपूर्ण गतिविधियां चरम सीमा तक पहुंच जाएं अन्यथा यदि केवल अकेला शिर्क हो जिस के साथ कष्ट देना, अहंकार,

उपद्रव मिलाया न हो और सीमा से बाहर न निकला हो कि उपदेशकों पर आक्रमण करें और उनके कत्ल करने पर तत्पर हों या पाप पर पूर्णरूप से नतमस्तक होकर दिल से ख़ुदा का भय सर्वथा निकाल दें तो ऐसे शिर्क या किसी अन्य पाप के लिए आख़िरत के अज़ाब का वादा है और दुनियावी अज़ाब केवल ज़ुल्म और उद्दण्डता और सीमा से अधिक बढ़ने के समय आता है। जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाता है -

وَ لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿۳۳﴾ (अर्रअद-33)

अर्थात् पहले भी रसूलों पर ठट्ठा किया गया तो हमने उन काफ़िरों को जो ठट्ठा करते हैं छूट दी। फिर जब वे अपने ठट्ठे में चरम पर पहुंच गए, तब हम ने उन को पकड़ लिया और लोगों ने देख लिया कि कैसे हमारा अज़ाब उन पर आया और फिर फ़रमाया है -

وَ مَكَرُوْا مَكْرًا وَّ مَكَرْنَا مَكْرًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۱﴾ (अन्नमल-51)

अर्थात् काफ़िरों ने इस्लाम को मिटाने के लिए एक मक्र किया और हमने एक मक्र किया अर्थात् यह कि उनको अपनी मक्कारियों में बढ़ने दिया ताकि वे बुराई के ऐसी स्तर पर पहुंच जाएं कि जो ख़ुदा के नियम के अनुसार अज़ाब उतरने की श्रेणी है। इस स्थान में शाह अब्दुल क़ादिर साहिब की ओर से स्पष्ट कर्ता क़ुर्आन में से एक नोट है जिसकी इबारत हम उसके शब्दों में लिखते हैं और वह यह है अर्थात् उनके मरने के सामान पूरे होते हैं जब तक बुराई चरम सीमा तक न पहुंची तब तक नहीं मरे। तुम इबारत देखो पृष्ठ 528 क़ुर्आन प्रेस फ़त्हुल करीम। इन समस्त आयतों से सिद्ध हुआ कि ख़ुदा का अज़ाब जो दुनिया में आता

है वह किसी पर तभी आता है कि जब वह बुराई, अन्याय, अभिमान, ऊंचाई और अतिशयता में पराकाष्ठा को पहुंच जाता है यह नहीं कि एक काफ़िर भय से मरा जाता है और फिर भी ख़ुदा के अज़ाब के लिए उस पर बिजली पड़े और एक मुश्रिक अज़ाब के भय से मृतप्राय हो और फिर भी उस पर पत्थर बरसें। ख़ुदा नन्द तआला बहुत ही दयालु और सहनशील है अज़ाब के तौर पर केवल उसी को इस दुनिया में पकड़ता है जो अपने हाथ से अज़ाब का सामान तैयार करे और जब कि यही ख़ुदा की सुन्नत (नियम) है और यही ख़ुदा का कानून तो फिर अब्दुल्लाह आथम की परिस्थितियों को इस **तराज़ू** में रख कर बड़ी सावधानी से तोलना चाहिए और बहुत होशियारी से तोलना चाहिए कि इन पन्द्रह महीनों में उसकी हालत कैसी रही। क्या किसी ने सुना कि इस अवधि में वह किसी प्रकार की धृष्टता, गुस्ताख़ी और गालियां इस्लाम के बारे में व्यक्त करता रहा या अभिमान और बुराई की हरकतें उससे हुईं या उसने असभ्यता और अपमान की पुस्तकें लिखीं तथा तिरस्कार एवं अपमान के साथ जीभ खोली कदापि नहीं। इस अवधि में इस्लामी अपमान के बारे में एक पंक्ति तक उसने प्रकाशित नहीं की अपितु इसके विपरीत अपनी जान के भय में बहुत अधिक रूप से ग्रस्त हो गया और इस्लामी श्रेष्ठता को ऐसा स्वीकार किया कि दूसरे ईसाइयों के बारे में हमारे पास कोई ऐसा उदाहरण नहीं। उसने भय दिखाया और डरा। इसलिए ख़ुदा तआला ने अपनी सुन्नत के अनुसार उस से वह मामला किया जो कि डरने वाले दिल से होना चाहिए यही **शर्त इल्हाम** में भी दर्ज थी, क्योंकि सच का ओर झुकना तथा इस्लामी श्रेष्ठता को अपनी भयावह हालत के साथ स्वीकार करना वास्तव में एक ही बात है। जो

लोग सच्चाई का ख़ून करने को तैयार होते हैं और अपनी कृपणताओं के कारण सच्चाई छुपाने की ओर क़दम चलाते हैं उनकी जीभ बन्द नहीं हो सकती औ न कभी बन्द हुई परन्तु जो लोग लज्जा और शर्म को इस्तेमाल करके इस भविष्यवाणी की ओर एक विचार करने वाले हृदय के साथ दृष्टि डालेंगे और समस्त घटनाओं को सामने रख कर पवितर् और वे लगाव हृदय के साथ एक राय प्रकट करेंगे उनको मानना पड़ेग कि भविष्यवाणी अपने विषय की दृष्टि से पूरी हो गई। उसने निस्सन्देह वे लक्षण दिखाए जो **पहले मौजूद** नहीं थे। और हमारे इस लेख से कोई यह न सोचे कि जो होना था वह सब हो चुका और आगे कुछ नहीं। क्योंकि भविष्य के लिए इल्हाम में ये ख़ुशखबरियां हैं

وَ نُمَزِّقُ الْاَعْدَاءَ كُلَّ مُمَزَّقٍ ـ يَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْن ـ ثُلَّةٌ مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْن

अर्थात् विरोधी स्पष्ट परारजयों से टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे और उस दिन मोमिन प्रसन्न होंगे। पहला गिरोह भी और पिछला भी। अत: **निश्चित समझो** कि वे दिन आने वाले हैं कि वे सब बातें पूरी होंगी जो ख़ुदा के इल्हाम में आ चुकीं शत्रु शर्मिन्दा होगा और विरोधी अपमानित होगा और प्रत्येक पहलू से विजय प्रकट होगी तथा निस्सन्देह समझिए कि यह भी **एक विजय** है और अपने वाली विजय की एक भूमिका है। क्या ईसाई अपनी अनभिज्ञता खुलने के कारण अपमानित नहीं हुए। क्या कुछ लोग मुबाहसे के समर्थकों और प्रमुखों में से इसी अवधि के अन्दर **मृत्यु** के पंजे में गिरफ़्तार नहीं हुए। क्या कुछ इस अवधि के अन्दर भयंकर रोगों से मौत तक नहीं पहुंचे। क्या उनमें से मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ऐसी विपत्ति में पन्द्रह माह तक गिरफ़्तार नहीं रहा जो

हर समय उसकी जान को खाती थी, जिस के कारण वह बहुत उद्विग्न तथा निरन्तर ग़मों और कष्टों में डूबा रहा और अपनी भयानक हालत का एक विचित्र नक़्शा उसने दुनिया पर प्रकट किया और अब भी सच्चाई के रोब ने उस मुर्दे की भांति रखा है। अत: क्या इतनी अद्भुत घटनाओं के साथ अभी भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। क्या इतने भय और डर के क़ब्ज़े में किसी को कर देना यह इन्सान का काम है? क्या किसी को बहुत बीमार करना और किसी को मारना इन्सानी कार्यों में से है। **काश** हमारे विरोधी विशेष तौर पर डॉक्टर **मार्टिन क्लार्क** साहिब इस बात को ध्यानपूर्वक समझें और अपने टोली ग्राम को जो हमारी ओर भेजा वापस लें और तनिक एक मिनट के लिए बुद्धिमत्ता को काम में लाकर सोचें कि भविष्यवाणी के बाद किस **पक्ष पर** अवधि के अन्दर सामान्य कष्ट और अपमान पड़े क्या वे इंजील उठा कर क़सम खा सकते हैं कि ईसाइयों पर वे मुसीबतें नहीं पड़ीं जिन का इस से पहले नामोनिशान न था। क्या ख़ुदा ने **हज़ार लानत** का अपमान, मैत, रोग, भय उद्विग्नता ये सब उन पर आच्छादित कर दीं या अभी इसमें कुछ सन्देह है, क्या वह दूर न होने वाला अपमान जिस ने समस्त संसार को दिखा दिया कि पादरियों का पवित्र क़ुर्आन पर प्रहार करना केवल मूर्खता के कारण था न कि किसी ज्ञान संबंधी विवेक से। वह ऐसा अपमान नहीं है जिस से हमेशा के लिए मुंह काला रहे क्या कोई पादरियों में से 'नूरुलहक़' के उत्तर पर समर्थ हो सका और यदि समर्थ नहीं हो सका तो यह हज़ार लानत के **अपमान का रस्सा** किस के गले में पड़ा? हमारे गले में या डॉक्टर मार्टिन क्लार्क साहिब के गिरोह के गले में। हम कुछ नहीं कहते, आप ही निर्णय करें कि यह अपमान है या नहीं? क्या पादरी रायट

साहिब की असमय मौत ने जो भविष्यवाणी की अवधि के अन्दर थी। आपने आंसू न बहाए। क्या अब्दुल्लाह आथम के कष्टों और भयग्रस्त होकर शहर-शहर फिरने पर आप का दिल पिघलता न रहा? क्या इस हालत में मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब जलते हुए तन्दूर में रहे या स्वर्ग में। कोई किसी विरोधी को झूठा समझ कर तो इतना रोब उसकी बात का दिल पर विजयी नहीं कर सकता जब तक ख़ुदा वह रोब दिल में न डाले। तो ख़ुदा तआला ने इस भय को मृत्यु का स्थानापन्न बना कर अपने अनादि कानून के अनुसार शारीरिक मृत्यु को दूसरे समय पर डाल दिया क्योंकि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने बहुत कष्टदायक भय के साथ उस शर्त को पूरा किया जो इल्हाम में दर्ज थी और मृत्यु में बाधक थी और यहां यह भी भली भांति स्मरण रहे कि हाविय: में गिरने की जो पन्द्रह माह की समय-सीमा थी उसी समय सीमा के अन्दर ईसाई पक्ष के प्रत्येक सदस्य ने हाविय: में से हिस्सा लिया। हां मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने यद्यपि एक हाविय: (नर्क) तो देख लिया परन्तु अपने विचारों को सच्चाई की श्रेष्ठता के नीचे लाकर और सच की ओर लौटा कर हाविय: का वह बड़ा भाग जो मृत्यु है नहीं लिया और इल्हामी शर्त उसके लेने से रोक बन गई जैसा कि पन्द्रह महीनों की समय-सीमा इल्हाम में दर्ज थी वैसा ही यह शर्त भी ज समय-सीमा को प्रभावहीन करती है इल्हाम में ही सम्मिलित थी।

अन्तत: हम यह भी लिखना चाहते हैं कि इस समय जो हम इस हाशिए को लिख रहे थे अमृतसर के ईसाइयों और डॉक्टर मार्टिन क्लार्क की ओर से एक विज्ञापन का मुंह तोड़ उत्तर हमारे इस विज्ञापन में आ गया है, परन्तु इस समय दर्शकों को पादरी लोगों को एख बड़ी नीचता

और बेईमानी यह है कि हाविय: और मौत से बचने के लिए जो शर्त हमने अपनी इल्हामी इबारत में लिखी थी। अर्थात् यह कि बशर्ते सच की ओर न लौटे। अर्थात् यह कि बशर्ते सच की ओर न लौटे। इस शर्त के उन्होंने जानबूझ कर बेईमानी और अक्षरांतरण के मार्ग से इल्हामी इबारत में से गिरा दिया, क्योंकि यह धड़का का दिल में आरंभ हुआ कि यह शर्त उनकी सम्पूर्ण योजना को बरबाद करती है और खूब जानते थे कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने अपने कार्यों के साथ इस शर्त की शरण ले ली है और कार्यों का बंधना तो केवल हम ने बाहरी तड़क-भड़क के दीवानों की दृष्टि से किया है अन्यथा जो कुछ आन्तरिक तौर पर लौटने तथा योग्यता की ओर क़दम उठाना गुप्त तौर पर प्रकटन में आया होगा। इस हालत को मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब का मन जानता होगा। अत: उन्होंने हमारी जो इल्हामी शर्त को जान बूझ कर अपने विज्ञापन से गिराया तो इस अपराधिक बेईमानी को अपनाने से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि ईसाई गिरोह इस बात को मानता है कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने अपनी हालत को एक संकट ग्रस्त हालत बनाने से और इस्लामी श्रेष्ठता का एक बड़ा भय अपने हृदय पर डालने से उस शर्त से लाभ प्राप्त किया और यद्यपि एक श्रेणी तक हाविय: देख लिया और इल्हामी शब्दों को पूर्ण करर दिखाया। परन्तु इसी शर्त के कारण मौत के दिनों के लिए छूट ले ली। हम इस दावे में मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब के हृदय को गवाह ठहराते हैं न कि अन्य किसी को। तो यदि कोई उनकी परिस्थितियों पर दृष्टि डालने से सन्तुष्ट न हो सके और अंधो की तरह उनकी घटनाओं से आंखें बन्द करे तो हम उस को अल्लाह तआला की क़सम देते हैं कि यदि वह

ऐसी राय शरारत तथा बेईमानी के मार्ग से नहीं अपितु नेक दिली से रखता है तो मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब को इस मामने के लिए तैयार करे जिस का हम वर्णन कर चुके हैं, जिसमें उनका कुछ खर्च नहीं आता अपितु एक हज़ार रुपया मुफ़्त हात आता है, जिस हालत में वह इस ख़ाकसार को झूठा विश्वास कर चुके हैं तो दो अक्षरोरं का इक़रार करने में उनका कौन सा ख़र्च आता है। अपितु हम तो स्वयं सूचना आने पर अमृतसर आने के लिए तैयार हैं। अन्यथा इस निर्णय के बिना जो व्यक्ति हमें झुठलाए वह स्वयं झूठा और झूठों पर ख़ुदा की लानत का पात्र है। हम उसी व्यक्ति के हाथ में रुपया देते हैं वह क़ानून की दृष्टि से हमें लिखक देकर जहां चाहे जमा करा दे और यदि हम दरख़्वास्त के बाद तीन सप्ताह तक रुपया जमा न कराएं तो निस्सन्देह झूठे हैं। परन्तु दरख़्वास्त इस विज्ञापन के प्रकाशित होने के बाद एक सप्ताह तक हमारे पास आनी चाहिए ताकि जो झूठा हो वह मरे। हम बार-बार कहते हैं और ख़ुदा की क़सम हम सच कहते हैं कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार करके और सच की ओर लौट कर बची है। अब समस्त संसार देख रहा है कि यदि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के नज़दीक हमारा यह वर्णन सही नहीं है तो वह उस दूसरी जंग को भी स्वीकार करेंगे जबकि सांच को आंच नहीं तो उनको मुकाबले से क्या आशंका है। और पादरी साहिबों ने जो इल्हामी वाक्य अपने विज्ञापन में से बेईमानी के मार्ग से निकाल दिया है उसका हमें इस कारण अफ़सोस नहीं कि जब कि उनके बाप-दादा सदैव से अक्षरांतरण करते आए है तो वे भी स्वाभाविक तौर पर अक्षरांतरण के लिए विवश थे और अवश्य चाहिए था कि अक्षरांतरण करें ताकि उनके

पद चिन्हों पर चलें। वस्सलामो अला मनित्तबऊल हुदा।

हाशिया नम्बर-2

रहस्यमय बात

यह भी ख़ुदा तआला की एक सुन्नत (नियम) है कि वह अपनी भविष्यवाणियों और निशानों को इस प्रकार से प्रकटन में लाता है कि वह ऐसे विशेष वर्ग के लिए लाभप्रद हों जो उस के कार्यों में विचार करने वाले तथा सोचने वाले और उसकी हिकमतों और हितों की तह तक पहुंचने वाले, बुद्धिमान और पवित्र स्वभाव, बारीक समझ, प्रतिभाशाली, संयमी, अपनी प्रकृति से सौभाग्यशाली, शालीन और कुलीन हों और इस वर्ग को वह बाहर रखता है जो कमीने, जल्दबाज़ और सतही विचारों वाले और सच्चाई को पहचानने से असमर्थ और कुधारण की ओर शीघ्र झुकने वाले और स्वयं पर स्वाभाविक दुर्भाग्य का दाग़ रखने हैं। वह नासमझों के दिलों पर अपवित्रता डाल देता है अर्थात् कुछ पर्दा रख देता है। तब उनको प्रकाश एक अंधकार दिखाई देता है और अपनी इच्छाओं का अनुकरण करते हैं तथा उनको चाहते हैं और सोचने का माद्दः नहीं रखते और ख़ुदा तआला का इस कार्य से उद्देश्य यह होता है ताकि बहुत बड़े पापी को पवित्र के साथ सम्मिलित न होने दे औ अपने निशानों पर ऐसे पर्दे डाल दे जो अपवित्र स्वभाव वालों को पवित्रों के साथ सम्मिलित होने से रोक दें और पवित्र स्वभाव लोगों का ईमान अधिक करें और ज्ञान में वृद्धि करें और मारिफत अधिक करें, सच्चाई और दृढ़ता में उन्नति दें और उनकी प्रतिभा और उनका वास्तविकताओं का पहचानना संसार पर प्रकट करें और उनको उस मान हानि तथा

अपमान से सुरक्षित रखें जो इस हालत में समझी जाती है कि जब एक टेढ़े स्वभाव वाला और कमीना, वासनाओं का रसिया तथा अनभिज्ञ उनकी जमाअत में सम्मिलित हो जाए और उनके पहलू में स्थान ले। चूंकि ख़ुदा तआला का इरादा होता है कि उसकी जमाअत के निथरे हुए पानी के साथ कोई गन्दा माद्दः न मिल जाए। इसलिए वह ऐसी विशिष्टता के साथ अपने निशानों को प्रकट करता है कि जस विश्ष्टता से मूर्ख और अपवित्र स्वभाव लोग हिस्सा नहीं ले सकते और केवल उस बुलन्दशान निशान को बुलन्द शान लोग मालूम करते हैं और उस से अपने ईमान में वृद्धि करते हैं। और ख़ुदा तआला सामर्थ्यवान था कि कोई ऐसा निशान दिखाता कि समस्त नासमझ आदमी और तुच्छ प्रकृति वाला मनुष्य जो सैकड़ों कामवासनाओं की ज़ंजीरों में ग्रस्त हैं व्यपाक तौर पर अपनी कामवासना संबंधी इच्छाओं के अनुसार उसको देख लेते परन्तु वास्तव में न कभी ऐसा हुआ और न होगा और कभी ऐसा होता और प्रत्येक टेढ़ी प्रकृति वाला अपनी इच्छाओं के अनुसार निशान देख कर सांत्वना पा लेते तो यद्यपि ख़ुदा तआला तो ऐसा निशान दिखाने पर समर्थ था तथा इस बात पर क़ुदरत रखता था कि समस्त गर्दनें उस निशान की ओर झुक जाएं तथा प्रत्येक प्रकार की प्रकृति उसे देख कर सज्दा करे परन्तु इस दुनिया में जो ईमान बिलग़ैब (परोक्ष पर ईमान पर अपनी बुनियाद रखती हैं और मुक्ति पाने का सम्पूर्ण आधार परोक्ष पर ईमान है वह निशान ईमान का समर्थक नहीं हो सकता था। अपितु रब्बानी अस्तित्व का सम्पूर्ण पर्दा खोलकर ईमानी व्यवस्था को पूर्णतया बरबाद कर देता और किसी को इस योग्य न रखता कि वह ख़ुदा तआला पर ईमान लाकर सवाब (पुण्य) पाने का पात्र रहे। क्योंकि स्पष्ट

बातों का मानना पुण्य का कारण नहीं हो सकता। और जब एक ऐसा खोखला निशान देख कर समस्त मूर्ख और तुच्छ प्रकृति और कमीने विचार के आदमी और बदचलन इन्सान एक हा हू करके जमाअत में सम्मिलित हो जाते तो उन का सम्मिलित होना पवित्र जमाअत के लिए नंग और शर्म हो जाता तथा अल्लाह की सृष्टि का सहसा लौटना और कई प्रकार के फित्ने पैदा करना मानवीय सरकारों में भी एक तहलक़ा मचाता। इसलिए ख़ुदा तआला की हिकमत और हित ने प्रारंभ से नहीं चाहा कि निशान दिखाने में जनता का कोलाहल होने दे। उसकी बातें टल नहीं सकतीं तथा सब पूर्ण होती हैं और होंगी परन्तु **इस प्रकार से जो अनादि काल से अल्लाह का नियम है।**

चेतावनी

हम केवल ख़ुदा के लिए नसीहत के तौर पर समस्त मुसलमानों को सूचित करते हैं कि महातेजस्वी ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से ईसाइयों के गिरोह के मुकाबले में हम को स्पष्ट विजय प्राप्त हुई है। अतः ईसाइयों के पक्ष में से मिस्टर अब्दुल्लाह आथम जो बहस के लिए चुने गए थे उन्होंने अपनी कई महीनों की तन्मयता और भय एवं कष्ट के प्रभुत्त्व ने सिद्ध कर दिया कि सच्चाई की श्रेष्ठता को उन्होंने स्वीकार कर लिया और जो कुछ उनके हाल के दर्पण से प्रकट है यह इक़रार का

नोट- विशेष तौर पर जंडियाला में भी जहां से मुबाहस: शुरू हुआ था डॉक्टर यूहन्ना जिस को बिल्कुल मुबाहसे में मुबाहस: को प्रकाशित करने का प्रबंध सुपुर्द हुआ था और जो अपनी सेवाओं की दृष्टि से ईसाइयों में एक उच्चतम सदस्य समझा जाता था उस भय से भरपूर निशान को पूरा करने के लिए निर्धारित समय सीमा के अन्दर इस दुनिया से कूच कर गया।

स्थानापन्न है अपितु एक स्थिति में इक़रार से भी स्पष्टतर तथा अत्यधिक संतोषजनक है। क्योंकि कभी इक़रार निफ़ाक़ के कारण भी हुआ करता है। यूरोप के कई ईसाई लोग इस्लामी देशों में निफ़ाक़* से इस्लाम की अभिव्यक्ति कर देते हैं या कुछ जैसे कुछ के पुजारी अपने सांसारिक उद्देश्यों के पूरा करने के लिए केवल निफ़ाक़ से बपतस्मा पाकर रबलमसीह कहने लगते हैं और ईसा के बन्दे कहलाते हैं परन्तु संकट ग्रस्त और भयावह हालत के दर्पण से जो प्रकट हो उसमें की गुंजायश नहीं अपितु वह क्रियात्मक और वर्तमान का इक़रार है। तो इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने संकट ग्रस्त हालत और भयावह स्थिति का वह नमूना दिखाया जिस से बढ़कर गुंजायश नहीं। फिर इसके बाद हमारा एक हज़ार रुपए का विज्ञापन उन के इक़रार पर एक दूसरा अन्तिम गवाह है। और अब भी यदि किसी को इक़रार में सन्देह हो तो पागलपन और विचारों के अंधेपन के अतिरिक्त और क्या कह सकते हैं। फिर इसके अतिरिक्त यह भी बहुत बड़ी ग़लती है कि विरोधी पक्ष में से बार-बार केवल उस व्यक्ति की चर्चा की जाती है जो उनमें से उनके मशवरे और राय की सहमति से बहस के लिए चुना गया था और जो शेष उस पक्ष के लोग हैं उन लोगों का कोई नाम भी नहीं लेता। हम ऐसे लोगों से पूछते हैं कि क्या हमारे इल्हाम में हाविय: और अपमान के वादे पर केवल मिस्टर अब्दुल्लाह आथम का नाम था या वह इल्हाम सामान्य तौर पर पक्ष के शब्द से वर्णन किया गया था। यदि इल्हामी शब्दों में फ़रीक़ का शब्द है तो क्यों **फ़रीक़** का शब्द केवल अब्दुल्लाह आथम के अस्तित्व पर सीमित किया जाता है

* **निफ़ाक़ -** ऊपर से दोस्ती अन्दर से शत्रुता रखना (अनुवादक)

और क्यों समस्त घटनाओं को इकट्ठी दृष्टि से नहीं देखा जाता। क्या मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने स्थायी तौर पर बिना किसी फ़रीक़ स्थापित होने के स्वयं ही बहस की थी और उसका कोई सहयोगी तथा प्रमुख न था और यदि एक विरोधी फ़रीक़ स्थापित होकर उस फ़रीक़ के चुनने से मिस्टर अब्दुल्लाह आथम बहस के लिए चुने गए थे तो फिर उस फ़रीक़ को इसके बावजूद कि इल्हामी इबारत में शामिल है क्यों बाहर रखा जाता है। प्रत्येक न्यायकर्ता पर अनिवार्य है कि इल्हाम के असल शब्दों का अनुकरण करे न कि अपने विचार के अनुसार कोई नया इल्हाम बनाए। तो हमें ऐसे लोगों पर बड़ा आश्चर्य आता है कि जो अकारण केवल मिस्टर अब्दुल्लाह आथम तक इल्हामी भविष्यवाणी को सीमित रखते हैं और फ़रीक़ के शब्द को ध्यानपूर्वक नहीं देखते और एक पूर्ण विजय को अपने विचार की कमी तथा लापरवाही के कारण पूर्ण विजय नहीं समझते। परन्तु सच्चाई अस्वीकार नहीं हो सकती अपितु प्रत्येक लड़ाई और बड़े स्तर के झगड़े के बाद भी उसको स्वीकार करना ही पड़ेगा और बहस के काग़ज़ों का अध्ययन करने के पश्चात् बहरहाल मानना पड़ेगा कि विरोधी फ़रीक़ में से अब्दुल्लाह आथम **एक भाग था,** जिसको बहस के लिए विरोधी पक्ष के दूसरे सदस्यों ने चुना। क्योंकि उस पक्ष ने अपने कार्य बांट लिए थे और बहस के लिए मिस्टर अब्दुल्लाह आथम इसी कारण से चुना गया था कि उसको एक्स्ट्रा असिसटेन्सी के समय से इबारत लिखने और बातचीत की मधुरता का बहुत अभ्यास है।

नोट - अब भी पन्द्रह माह के बाद जो ईसाइयों की ओर से विज्ञापन निकला उसकी इबारत यह है मसीहियों और मुहम्मदियों की जंगे मुक़द्दस का परिणाम। (इसी से)

अब आंखें खोलो और अंधे मत बन जाओ तथा ध्यानपूर्वक देखो कि क्या इस सम्पूर्ण पक्ष ने **हाविय:** और अपमान का कुछ स्वाद चखा या अब तक बेलौस और बिल्कुल सुरक्षित है। और यदि उस पक्ष में से बहुत से लोगों ने हाविय: का स्वाद चख लिया है तो क्यों इस भविष्यवाणी की श्रेष्ठता को नहीं मानते। भला बताओ कि स्वाद चखने से बाहर कौन रहा। जल्दी मत करो एक गहरे विचार के साथ सोचो और अधिक अफ़सोस उन कुछ लोगों पर है जो इस **स्पष्ट विजय** पर उन्होंने पूर्ण प्रफुल्लता व्यक्त नहीं की। मैं एसे लोगों को सूचित करता हूं कि यह तो विजय है और पूर्ण विजय तथा इस से कोई इन्कार नहीं करेगा परन्तु पापी हृदय। किन्तु सत्यनिष्ठ तो परीक्षाओं के समय भी दृढ़ प्रतिज्ञ रहते हैं और वे जानते हैं कि अन्तत: ख़ुदा हमारा ही समर्थक होगा। यह ख़ाकसार यद्यपि ऐसे कामिल दोस्तों के अस्तित्व से ख़ुदा तआला का कृतज्ञ है परन्तु इसके बावजूद यह भी ईमान है कि यद्यपि एक व्यक्ति भी साथ न रहे और सब छोड़-छाड़ कर अपना-अपना मार्ग लें तब भी मुझे कुछ भय नहीं। मैं जानता हूं कि ख़ुदा तआला मेरे साथ है। यदि मैं पीसा जाऊं और कुचला जाऊं और एक कण से तुच्छतर हो जाऊं तथा प्रत्येक ओर से कष्ट और गाली तथा लानत देखूं तब भी मैं **विजयी** हूंगा। मुझे कोई नहीं जानता परन्तु वह जो मेरे साथ है। मैं कदापि नष्ट नहीं हो सकता। शत्रुओं के प्रयास व्यर्थ हैं और ईर्ष्यालुओं की योजनाएं बेकार हैं।

हे अनभिज्ञो और अंधो! मुझ से पहले कौन सच्चा नष्ट हुआ जो मैं नष्ट हो जाऊंगा, किस सच्चे वफ़ादार को ख़ुदा ने अपमान के साथ मार दिया जो मुझे मारेगा। निस्सन्देह स्मरण रखो और कान खोल कर

सुनो कि मेरी रूह मरने वाली रूह नहीं और मेरी प्रकृति में असफलता का खमीर नहीं। मुझे वह हिम्मत और सच्चाई प्रदान की गयी है जिसके आगे पहाड़ तुच्छ हैं। मैं किसी की परवाह नहीं रखता मैं अकेला था और अकेला रहने पर नाराज़ नहीं। क्या ख़ुदा मुझे छोड़ देगा? कभी नहीं छोड़ेगा। क्या वह मुझे नष्ट कर देगा, कभी नष्ट नहीं करेगा, शत्रु अपमानित होंगे और ईर्ष्यालु लज्जित, और ख़ुदा अपने बन्दे को हर मैदान में विजय देगा। मैं उसके साथ वह मेरे साथ है। कोई चीज़ हमारा पैबन्द तोड़ नहीं सकती। और मुझे उसके सम्मान तथा प्रताप की क़सम है कि मुझे दुनिया और आखिरत में उस से अधिक कोई वस्तु भी प्यारी नहीं कि उसके धर्म की श्रेष्ठता प्रकट हो, उसका प्रताप चमके और उसका बोलबाला हो। किसी परीक्षा से उसकी कृपा के साथ मुझे भय नहीं यद्यपि एक परीक्षा नहीं करोड़ परीक्षा हो। परीक्षाओं के मैदान में तथा दुखों के जंगल में मुझे शक्ति दी गई है -

मन न आनस्तिम कि रोज़े जंग बीनी पुश्ते मन
आं मिनम कांदरमियान ख़ाक़ो खूंबीनी सरे

अत: यदि कोई मेरे क़दम पर चलना नहीं चाहता तो मुझ से अलग हो जाए। मुझे क्या मालूम है कि अभी कौन-कौन से भयानक जंगल और कांटों से भरे हुए वन सामने हैं जिन को मैंने तय करना है। अत: जिन लोगों के नाज़ुक पैर हैं वे क्यों मेरे साथ कष्ट उठाते हैं। जो मेरे हैं वह मुझ से पृथक नहीं हो सकते। न कष्ट से न लोगों के गाली-गलौज से, न आकाशीय विपत्तियों और परीक्षाओं से और जो मेरे नहीं वे व्यर्थ दोस्ती का दम भरते हैं क्योंकि वे शीघ्र अलग किए जाएंगे और उनका पिछला हाल उनके पहले के हाल से अधिक बुरा

होगा। क्या हम भूकम्पों से डर सकते हैं? क्या हम ख़ुदा तआला के मार्ग में परीक्षाओं से भयभीत हो जाएंगे? क्या हम अपने प्यारे ख़ुदा की किसी परीक्षा से पृथक हो सकते हैं। कदापि नहीं हो सकते परन्तु केवल उसकी कृपा और दया से। तो जो पृथक होने वाले हैं पृथक हो जाएं उनके पृथक होने का सलाम। परन्तु स्मरण रखें कि कुधारणा और संबंध-विच्छेद के बाद यदि फिर किसी समय झुकें तो इस झुकने का ख़ुदा के नज़दीक ऐसा सम्मान नहीं होगा जो वफादार लोग सम्मान पाते हैं क्योंकि कुधारणा और ग़द्दारी का दाग़ बहुत ही बड़ा दाग़ है।

इक्नूं हज़ार उज्र बयारी गुनाह रा
मर शुए करदारां बुवद ज़ेब दुख़्तरी

नीम (अधूरे) ईसाइयों का वर्णन

कुछ नाम के मुसलमान जिन को आधा ईसाई कहना चाहिए इस बात पर बहुत प्रसन्न हुए कि अब्दुल्लाह आथम पन्द्रह माह तक नहीं मर सका और खुशी के मारे सब्र न कर सके अन्त में विज्ञापन निकाले और अपनी आदत के अनुसार उनमें बहुत कुछ गंद बका और उस व्यक्तिगत कंजूसी के कराण जो मेरे साथ थी इस्लाम पर भी प्रहार किया क्योंकि मुबाहसे इस्लाम के समर्थन में न थे न कि मेरे मसीह मौऊद होने की बहस में इन्तिहाई श्रेणी में उन के विचार में काफ़िर था या शैतान था या दज्जाल था। परन्तु बहस तो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई तथा पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता के बारे में थी और सच्चे-झूठे की यह व्याख्या लिखी गयी है कि जो व्यक्ति सच्चे हृदय से हज़रत ख़ातमुल अंबिया

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता है और पवित्र क़ुर्आन को अल्लाह तआला का कलाम (वाणी) समझता है वह सच्चा है और जो हज़रत मसीह को ख़ुदा जानता है और हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत से इन्कारी है वह झूठा है। इसी निर्णय के लिए इल्हाम प्रस्तुत किया गया था परन्तु हमें आह खींच कर कहना पड़ा कि विरोधी मौलवियों ने मुझे झूठा सिद्ध करने के लिए अल्लाह और रसूल के सम्मान का तनिक ध्यान न रखा और इस बहस में मेरा पराजित होना स्वीकार कर लिया और उस स्पष्ट परिणाम से कुछ भी न डरे जो पराजित होने की हालत में विरोधी पक्ष के हाथ में आता है। और जब मियां सनाउल्लाह, सादुल्लाह और अब्दुलहक़ इत्यादि ने ईसाइयों का विजयी होना मान लिया तो फिर क्यों ये लोग अपने विज्ञापनों में ईसाइयों के हाल पर अफ़सोस करते हैं कि उन्होंने इस्लाम के झुठलाने के लिए यह प्रमाण ठहरा दिया जबकि बहस इस्लाम और ईसाइयत के सच और झूठ की थी न कि मेरी किसी विशेष आस्था की। तो नऊज़ुबिल्लाह यदि मैं पराजित हूं तो फिर शत्रु के लिए अधिकार पैदा हो गया कि अपनी ईसाइयत के सच होने का दावा करे बहस के विषयों पर दृष्टि रखनी चाहिए न कि बहस करने वाले पर। उदाहरणतया यदि हमारी ओर से एक भंगी या चमार जो धर्म से सर्वथा अलग है इस्लामी समर्थन में ईसाइयों के साथ मुबाहल: करे तो फिर भी यह संभव न होगा कि ईसाई विजयी हों और ख़ुदा तआला उस का भंगी या चमार होना नहीं देखेगा अपितु अपने धर्म का सम्मान सुरक्षित रख लेगा और इस्लाम का कभी अपमान नहीं दिखाएगा।

तुम्हें मालूम होगा कि कुछ काफ़िर और मूर्ति पूजक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुलह का समझौता करके दूसरे काफ़िरों के साथ लड़ते थे और चूंकि इस हालत में इस्लाम के समर्थक थे तो शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते थे। तो मान लो कि मैं तुम्हारी नज़र में सब काफ़िरों से अधिक बुरा हूं और दूसरे काफ़िर तो (अलबय्यन - 9) خَالِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا के नर्क में दण्ड उस से भी बढ़कर है, क्योंकि तुम ने मेरा नाम न केवल काफ़िर बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर रखा तथापि सोचने का स्थान था कि बहस की मामलों में इन बातों का कुछ भी हस्तक्षेप न था जिन के कारण मुझे आप लोग काफ़िर और बड़ा काफ़िर और दज्जाल कहते हैं अपितु बहस के अन्तर्गत वही बातें थीं जिन के लिए प्रत्येक मुसलमान को स्वाभिमान होना चाहिए और फिर अनोखी बात यह कि मुझे पराजित और ईसाइयों को विजयी बताते हैं यह ऐसा **सफेद झूठ** है कि किसी प्रकार छुप नहीं सकता। मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी के दो पहलू थे न केवल एक। और ख़ुदा तआला ने उस पहलू को जो संदिग्ध किया गया था अर्थात् मृत्यु को छोड़ दिया, क्योंकि अब्दुल्लाह आथम की मौत को कुछ एक मामूली बात और अनुमान के क़रीब समझा गया था तथा दूसरा पहलू सच की ओर लौटना था। इस पहलू को ख़ुदा तआला ने अब्दुल्लाह आथम के कार्यों से सिद्ध कर दिया। यदि कोई मौलवियों में से कहे कि सिद्ध नहीं तो यदि वह इस बात में सच्चा और **कुलीन** है तो अब्दुल्लाह आथम को उस शपथ पर तैयार करे जो हम लिख चुके हैं। यदि अब्दुल्लाह आथम क़सम खाले तो हम अविलम्ब हज़ार

रुपया बल्कि अब तो **दो हज़ार** रुपया कानूनी तौर पर तहरीर लेकर दे देंगे। फिर यदि वह एक वर्ष तक न मरा तो मौलवी हमारा जो नाम रखें सब सच होगा अन्यथा इस निर्णय से पहले जो व्यक्ति इस स्पष्ट विजय को स्वीकार नहीं करता चाहे वह अमृतसरी है या ग़ज़नवी या लुधियानवी या देहलवी या बटालवी वह सर्वथा अन्याय करता है और सावधान रहे कि ख़ुदा तआला की अन्यायियों तथा झूठों पर लानत है जब तक अब्दुल्लाह आथम दो हज़ार रुपया लेकर ऐसा इस्लाम का शत्रु न हो जाए और हज़रत मसीह को ख़ुदा समझने का इक़रार न कर ले और फिर उस पर एक वर्ष कुशलता पूर्वक न गुज़र जाए हम किसी प्रकार झूठे नहीं ठहर सकते। हमें अपने इल्हाम से ख़ुदा तआला ने जतला दिया है कि उसने इस्लाम की श्रेष्ठता स्वीकार करके तथा इस्लामी भविष्यवाणी के कारण स्वयं पर रंज-व-ग़म लेकर इल्हामी शर्त से लाभ उठा लिया अब यदि इस परीक्षा के बिना कोई व्यक्ति **हमारा नाम झूठा रखे** और हमें पराजित समझे तो वह **झूठा** तथा झूठों पर ख़ुदा की लानत का पात्र है और पवित्र प्रकृति से वंचित। उस को चाहिए कि अब्दुल्लाह आथम ने पास जाकर **हाथ-पैर** जोड़े और बहुत खुशामद करे कि वह कथित शर्दत की पाबन्दी से मुझ से हज़ार रुपया ले ले और इस अठल फैसले के सामने खड़ा हो जाए, अन्यथा मियां अब्दुलहक़ ग़ज़नवी हो या मियां सनाउल्लाह या सादुल्लाह या ग़ुलाम रसूल या कोई अन्य हो। अच्छी तरह स्मरण रखे कि मुसलमान कहला कर अकारण ईसाइयों को विजयी बताना और सर्वथा अन्याय के मार्ग से उनका नाम विजयी रखना यह कुलीनों का कार्य नहीं। चाहिए

कि अब भी समझ जाएं और विश्वास एवं विचार करके देख लें इस बहस में ईसाई पराजित हुए हैं उनके पक्ष पर ख़ुदा तआला ने हर प्रकार से आपदा एवं अपमान डाला। फिर उस पक्ष में से एक पादरी साहिब तो चल बसे और दूसरे मर-मर के बचे तथा कुछ के गले में हज़ार लानत के अपमान का रस्सा पड़ गया जिससे वे अपनी गर्दनों को छुड़ा न सके। **अब ईमान से कहो विजय किस की हुई और मुबाहले का दुष्प्रभाव** किस पर पड़ा। ख़ुदा तआला से डरो और बढ़ते न जाओ वह सीमा से बाहर जाने वालों को दोस्त नहीं रखता। तौबः करो ताकि तौबः का फल पाओ। क्रोध की बात है कि ख़ुदा तआला ने तो इस भविष्यवाणी के बाद **विरोधी पक्ष** के प्रत्येक सदस्य पर प्रकोप उतारा, मौत उतारी, अपमान उतारा, बीमारी उतारी, भय उतारा और फिर भी कहा जाता है कि ईसाई विजयी रहे हैं। लोगो एक दिन मरना है या नहीं। निस्सन्देह ईसाइयों की सहायता करो और सच को छोड़ दो। अर्श का रब्ब देख रहा है कि तुम क्या कर रहे हो। जो व्यक्ति वास्तव में सम्मान पा गया तुम उसे अपमानित कर सकते हो। हे **ग़ज़नवी** गिरोह के लोगो! हे **अमृतसर** के मुसलमानो परन्तु इस्लाम के शत्रुओ! और हे लुधियाना के कठोर हृदय मौलवियो और मुंशियो!!! ख़ूब सोच लो कि तुम क्या कर रहे हो और हे ग़ज़नवियो! तुम तनिक आंख खोल कर देख लो कि **तुम्हारा मुबाहलः तुम पर ही पड़ा**। झूठे विज्ञापनों से शर्म करो और मेरी यह पूरी पुस्तक ध्यानपूर्वक पढ़ो ताकि तुम्हें मालूम हो। والسلام علیٰ من اتبع الْھُدٰی

मियां अब्दुल्हक़ साहिब ग़ज़नवी तथा अन्य ग़ज़नवी सज्जनों की झूठी प्रसन्नता और ख़ुदा के लिए उनको नसीहत और उनके मुबाहले का अन्तिम परिणाम

हमने सुना है कि मियां अब्दुल हक़ और मियां अब्दुल जब्बार और उनके गिरोह के आदमी इस बात पर अपने पक्षपात् के जोश तथा विचार की कमी के कारण बहुत ही प्रसन्न हो रहे हैं कि अब्दुल्लाह आथम पन्द्रह महीने में नहीं मरा और वह जीवित अमृतसर में आ गया। और इन लोगों ने अब्दुल्लाह आथम के जीवन पर न केवल प्रसन्नता ही की अपितु इन्होंने उसको मियां अब्दुलहक़ के मुबाहल: का एक प्रभाव समझा जैसे इन सुधारणाओं के विचार में उस मुबाहल: की हम पर यह अवनति पड़ी है। तो प्रथम तो हम इस झूठी प्रसन्नता तथा मुबाहल: के प्रभाव के बारे में उन बुज़ुर्गों को जो अब तक गहरी नींद में हैं और हंस रहे हैं। ये शत्रु ख़बर सुनाते हैं कि ऐसा समझना कि इल्हाम ग़लत निकला और ईसाइयों की विजय हुई इस से अधिक कोई भी मूर्खता नहीं।★यदि आप लोग पहले छान-बीन कर लेते तो

★नोट :- एक अनभिज्ञ हिन्दू का लड़का नाम का नौ मुस्लिम सादुल्लाह नामक जो ईसाइयों की विजय प्राप्ति सिद्ध करने के लिए अपनी स्वाभाविक शैतानियत से हाथ-पैर मार रहा है कि मानो इसी ग़म में मर रहा है। लुधियाना से अपने एक विज्ञापन में लिखता है कि यदि इस बहस के बाद जो ईसाइयत और इस्लाम के सच और झूठ की छान-बीन की गई थी। ईसाई पक्ष पर संकट पड़े तो क्या तुम्हारे बैअत करने वालों में से मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब का

आप को अब लज्जा और शर्मिन्दगी न उठानी पड़ती। अब हे समस्त सज्जनो आप पर स्पष्ट रहे कि वास्तव में इस्लाम की विजय हुई और ईसाइयों की बड़ी भारी पराजय हुई और इस मुकाबले के पक्ष पर भिन्न-भिन्न प्रकार की आपदाएं उतरीं। कोई मौत के पंजे में फंसा, कोई उसका शोक करने वाला बना, किसी ने बीमारी का भयंकर कष्ट उठाया, कोई अपमानित और बरबाद हुआ तथा कोई हज़ार लानत का निशाना बना, कोई भय और पागलपन तथा उद्विग्नता में ग्रस्त हुआ

शेष हाशिया - एक दूध पीते बच्चे की मृत्यु* नहीं हो गई। परन्तु इस अनभिज्ञ धर्म के शत्रु ने नहीं समझा कि प्रथम तो वह दूध पीता बच्चा जो जन्म के दिन से ही बीमार और कमज़ोर शरीर वाला था। पक्ष के शब्द में सम्मिलित नहीं हो सकता। क्या वह भी ईसाइयों के साथ बहस करने गया था ताकि उसकी मृत्यु का होना ईसाई धर्म की सच्चाई पर प्रमाण हो सके तथा दूसरे यह इल्हाम हमारी ओर से था कि ईसाइयों पर ये आपदाएं आएंगी और हम बार बार एवं निरन्तर व्याख्या कर चुके हैं कि उस इल्हाम का चरितार्थ वे ईसाई हैं जो बहस

***हाशिए का हाशिया -** इस लेख के लिखने के बाद मुझ पर नींद का प्रभुत्त्व हो गया और मैं सो गया और स्वप्न में देखा कि बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब एक स्थान पर लेटे हुए हैं और उनकी की गोद में एक बच्चा खेलता है जो उन्हीं का है और वह बच्चा सुवर्ण सुन्दर है तथा आंखें बड़ी-बड़ी हैं। मैंने मौलवी साहिब से कहा कि ख़ुदा ने मुहम्मद अहमद के बदले आप को वह लड़का दिया कि रंग में, शक्ल में, शक्ति में उस से कई गुना उत्तम है और मैं दिल में कहता हूं कि यह तो अन्य पत्नी का लड़का मालूम होता है। क्योंकि पहला लड़का तो बहुत कमज़ोर बीमार सा तथा अधमरा जैसा था और यह तो सुदृढ़, मज़बूत और सुवर्ण है और फिर मेरे दिल में यह आयत गुज़री जिसका

और न मुर्दों में रहा न जीवितों में तथा एक भी हाविय: से बच न सका। अफ़सोस है कि जिन लोगों को मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के जीवित रहने से प्रसन्नता हुई वे कैसे मूर्ख हैं। उन्होंने कहां से और किस से सुन लिया कि इल्हामी इबारत ने केवल अब्दुल्लाह आथम के मरने की ही सूचना दी थी और कोई शर्त न थी तथा केवल मृत्यु पर ही सीमित था दूसरी कोई भी बात नहीं थी। यह कंजूसी और पक्षपात् तथा जल्दबाज़ी का दण्ड है जो अब हमारे विरोधियों को उन झूठी

शेष हाशिया - के समय कर्ता या बहस के समर्थक थे और ईसाइयों को तो कोई इल्हाम नहीं हुआ था कि हमारे बैअत करने वालों में से किसी का कोई दूध-पीता बच्चा मृत्यु पा जाएगा। फिर जबकि ख़ुदा के बोध कराने की दृष्टि से इल्हाम केवल विरोधी पक्ष के लोगों से विशेष था तथा ईसाइयों की ओर से कोई इल्हाम न था और न मुबाहल: के तौर पर हमारी ओर से अपने लिए बद्-दुआ थी और न ईसाइयों की ओर से कोई बद्-दुआ थी। केवल ईसाइयों के बारे में एक इल्हाम था। फिर किसी दूध पीते बच्चे का मृत्यु पा जाना क्या इस बात का प्रमाण हो सकता है कि ईसाई धर्म

शेष हाशिए का हाशिया- ज़बान से सुनाना याद नहीं और वह यह है-

مَا نَنۡسَخۡ مِنۡ اٰیَۃٍ اَوۡ نُنۡسِہَا نَاۡتِ بِخَیۡرٍ مِّنۡہَاۤ اَوۡ مِثۡلِہَا اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ (अलबक़रह-107)

और मैं जानता हूं कि यह ख़ुदा तआला की ओर से इस धर्म के शत्रु का उत्तर है। क्योंकि उसने ईसाइयों का समर्थक बन कर इस्लाम पर प्रहार किया और वह भी अनुचित तथा बेईमानी से भरा हुआ प्रहार। और उस स्वप्न का एक भाग रह गया। मैंने देखा कि उस बच्चे के शरीर पर फुन्सी या सोलूल के समान बुख़ारात निकल रहे हैं। और कोई कहता है कि उसका इलाज हल्दी तथा एक अन्य वस्तु है। واللہ اعلم (इसी से)

खुशियों की ऐसी शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी जो मरने से अधिक बुरी है।

हे सज्जनो! इल्हाम में तो मौत की चर्चा भी नहीं। हां हमारी व्याख्या की इबारत में हाविय: के शब्द से जो हमने अब्दुल्लाह आथम के बारे में समझा अवश्य मौत का शब्द मौजूद है परन्तु इल्हाम में यह शर्त भी तो थी कि इस हालत में हाविय: में गिरेगा कि जब सच की ओर न लौटे। ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट कर दिया कि उसने सच की ओर रुजू किया और वह डरा तथा उसके हृदय में इस्लामी श्रेष्ठता समा गई। इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी अनादि सुन्नत के अनुसार उस से मृत्यु का अज़ाब धृष्टता के दिनों तक उठा लिया। क्या कभी पवित्र क़ुर्आन आप लोगों ने ध्यानपूर्वक पढ़ा या खाने-पीने पर ही कमर बांध रखी है। क्या स्मरण नहीं कि कई स्थानों में अल्लाह

शेष हाशिया -की सच्चाई प्रकट हुई। क्या ईसाइयों ने भी कोई इल्हाम बताया था या बद्-दुआ की थी। अपितु वह केवल हमारा इल्हाम था जिसके बारे में हमने बता दिया था कि यह ईसाइयों के बारे में है तथा यह कहना कि कुछ मुसलमान उस इल्हाम के बाद ईसा हो गए। इस से भी ईसाइयों पर एक प्रमाण समझना केवल एक नीचता है इस से अधिक नहीं।

हे अनभिज्ञ ख़ुदा के शत्रु! यदि इस अवधि में वह चार दुराचारी नाम के मुसलमानों में से जिनको हमने बदमाश पा कर अपनी जमाअत से पहले निकाल दिया था मुर्दार दुनिया के लिए ईसाई हो गए तो हम तुझे सबूत देते हैं कि इस पन्द्रह महीने में सैकड़ों ईसाई केवल ख़ुदा के लिए मुसलमान हुए। फिर अन्तिम आरोप उस हिन्दू पुत्र का यह है कि यदि मुबाहसे के बाद दो पादरी बहुत बीमार हो गए तो यह भी कुछ प्रमाण नहीं क्योंकि तुम भी तो अधिकतर बीमार रहते हो। तो इस का उत्तर यह है कि यदि मैं इस पन्द्रह महीने में बीमार रहा था तो तुम्हारे किस बुज़ुर्ग ने वे समस्त अरबी पुस्तकें इन पन्द्रह महीनों में

तआला फ़रमाता है कि डरने वालों पर सांसारिक अज़ाब नहीं उतरता सांसारिक अज़ाब के लिए केवल कुफ्र ही पर्याप्त नहीं अपित, धृष्टता, शरारत, अभिमान, अहंकार तथा मोमिनों को कष्ट देना और सीमा से बढ़ना आवश्यक है परन्तु अब्दुल्लाह आथम ने इन पन्द्रह महीनों में कोई धृष्टता और अभिमान नहीं दिखलाया। इस्लाम का कोई अपमान नहीं किया और कोई तिरस्कार तथा उपहास की पुस्तक नहीं निकाली अपितु अपने संकट में पड़ा रहा। तथा अपने कार्यों से दिखा दिया कि वह बहुत डरा और इस्लामी श्रेष्ठता एक चमकती हुई तलवार की भांति उसे दिखाई दी इसलिए सच की ओर लौटने की जो शर्त थी उसने उस से इतना हिस्सा लिया जिसने उस पूर्ण अज़ाब में विलम्ब डाल दिया और यह तो प्रत्यक्ष विचार से है और उसने जितनी अपनी

शेष हाशिया - लिखीं जिन के साथ ईसाइयों के लिए पांच हज़ार रुपए का इनाम था और जिन के मुकाबले पर यदि समस्त पादरी प्रयास करते-करते मर भी जाएं तब भी उन का सदृश नहीं बना सकते। हे ख़ुदा के शत्रु! झूठ और इफ़्तिरा से रुक जा। क्या तुझे ज्ञात नहीं इन पन्द्रह महीनों में क्या-क्या अद्भुत अरबी पुस्तकें मेरी ओर से निकलीं और इस थोड़े समय में दस के लगभग इस्लाम की सहायता में मैंने पुस्तकें लिखीं जो प्रकाशित भी हो गईं। क्या यह बीमार का काम है। करामतुस्सादिक़ीन किस समय में लिखी गई, सिर्रुलख़िलाफत कब लिखी गई? नूरुलहक़ की दोनों जिल्दें किसने और कब बनाईं, तुहफ़ा बग़दाद कब प्रकाशित हुई। क्या ये पुस्तकें वही पुस्तकें नहीं हैं जो इन पन्द्रह महीने में भविष्यवाणी की निर्धारित समय सीमा के अन्दर लिखी गईं। यदि कोई विरोधी मौलवी और काफ़िर कहने वाला बटालवी इत्यादि पन्द्रह वर्षों में भी ऐसी पुस्तकें बना कर दिखा दे तो हम मान लेंगे कि हम इन पन्द्रह महीने में बीमार रहे अन्यथा अब तो इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। (इसी से)

आन्तरिक हालत ठीक की होगी और विनय की होगी

وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ (अलअन्फाल-34)

का चरितार्थ बना हो यह जानकारी उसे है या ख़ुदा को वह दयालु और कृपालु ख़ुदा किसी का कण भर कर्म भी व्यर्थ नहीं करता और जबकि मौत से बचने के लिए अब्दुल्लाह आथम के लिए यह एक मार्ग विद्यमान था और उसकी भय से भरी हुई हालतें जिन में उसने यह समय गुज़ारा स्पष्ट प्रकट कर रही हैं कि उसने किसी सीमा तक इस मार्ग की ओर क़दम रखा, यद्यपि वह क़दम पूरा हो या अधूरा उस का ज्ञान उसको होगा। तो फिर क्यों वह इस क़दम के रखने से तथा किसी सीमा तक सुधार से लाभ न उठाता और चाहे वह लौटना (रुजू) एक कण के बराबर था परन्तु तब भी उसका कम से कम यह लाभ होना चाहिए था कि मौत के अज़ाब में विलम्ब डाल दे क्योंकि अल्लाह तेजस्वी शान वाला फ़रमाता है

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (अज़्ज़िलज़ाल-8)

तो उसने अल्लाह की सुन्नत और इल्हाम की शर्त के अनुसार इस रुजू (लौटने) का लाभ देख लिया। अब इल्हाम का क्या दोष है। क्या इल्हाम में यह नहीं लिखा था कि हाविय: में गिरेगा किन्तु बशर्ते कि सच की ओर रुजू न करे। यह भी स्मरण रहे कि रुजू हृदय का एक कार्य है, अल्लाह की सृष्टि की सूचना इसमें आवश्यक नहीं। हां उसकी परेशानी की हालत पर दृष्टि डालने वाले वास्तविकता तक पहुंच सकते हैं। अत: ख़ुदा तआला ने उसे ग़म और कष्ट में पाया और उसे रुजू में सम्मिलित समझ कर प्रस्तावित शर्त को पूरा किया और यह बात समस्त नबियों की सहमति से मान्य है कि डरने वाले

पर दुनिया का अज़ाब नहीं उतरता अपितु धृष्ट और हद से बढ़ने वाले पर उतरता है तथा हमने तो समस्त किताबें देखीं और पवित्र क़ुर्आन को आरम्भ से अन्त तक पढ़ा परन्तु यह घटना किसी किताब में न देखी कि कभी किसी डरने वाले काफ़िर पर पत्थर बरसे या किसी हताश और डरने वाले इन्कारी पर उसके इन्कार के कारण बिजली पड़ी। अपितु कुफ्र के दण्ड के लिए दूसरा घर मौजूद है। इस दुनिया में तो धृष्टों तथा इन्कारियों, दुष्टों तथा अत्याचारियों पर जब वे सीमा से बढ़ जाते हैं अज़ाब उतरता है। अब आंखें खोलकर सोचना चाहिए इस अनादि सुन्नत (नियम) तथा शर्त के मौजूद होने के बावजूद अब्दुल्लाह आथम पर मौत का अज़ाब क्यों उतरे। हां यदि यह दावा करो कि अब्दुल्लाह आथम ने लेशमात्र भी सच की ओर रुजू नहीं किया और न डरा तो इस भ्रम के उन्मूलन (जड़ से उखाड़ने) के लिए यह सीधा और साफ़ माप दण्ड है कि हम अब्दुल्लाह आथम को दो हज़ार रुपया नक़द देते हैं वह तीन बार क़सम खाकर यह इक़रार कर दे कि मैंने लेशमात्र भी इस्लाम की ओर रुजू नहीं किया और न इस्लामी भविष्यवाणी की श्रेष्ठता मेरे हृदय में समाई अपितु निरन्तर कठोर हृदय और इस्लाम का शत्रु रहा और मसीह को बराबर ख़ुदा ही कहता रहा फिर यदि हम उसी समय अविलम्ब दो हज़ार रुपया न दें तो हम पर लानत तथा हम झूठे और हमारा इल्हाम झूठा और यदि अब्दुल्लाह आथम क़सम न खाए या क़सम का दण्ड निर्धारित समय-सीमा के अन्दर देख ले तो हम सच्चे और हमारा **इल्हाम सच्चा**। फिर भी यदि कोई ज़बरदस्ती से हमें झुठलाए और इस **मापदण्ड** की ओर ध्यान न दे और अकारण सच्चाई पर पर्दा

डालना चाहे तो निस्सन्देह वह **कुलीन** और नेक ज़ात नहीं होगा जो अकारण **सच्चाई से विमुख** होता है और अपनी शरारत से कोशिश करता है कि सच्चे झूठे हो जाएं।

अब इस से अधिक साफ़ और कौन सा निर्णय होगा कि हम दो कलिमों के मोल में स्वयं अमृतसर में जाकर दो हज़ार रुपया देते हैं। मिस्टर अब्दुल्लाह आथम यदि वास्तव में मुझे झूठा समझता है और जानता है कि लेशमात्र भी उसने इस्लामी श्रेष्ठता की ओर रुजू नहीं किया तो वह अवश्य अविलम्ब उपरोक्त कथित इबारत के अनुसार इक़रार कर देगा। क्योंकि अब तो वह अपने अनुभव से जान चुका कि मैं झूठा हूं और मसीह की सुरक्षा को उसने देख लिया। **फिर इस मुकाबले से उसे क्या भय है**। क्या पहले पन्द्रह महीनों में मसीह जीवित था और मिस्टर अब्दुल्लाह आथम की रक्षा कर सकता था **और अब मर गया** है इसलिए नहीं कर सकता जबकि ईसाइयों ने अपने विज्ञापन में यह कह कर घोषणा की है कि ख़ुदावन्द मसीह ने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम की जान बचाई तो फिर अब भी **ख़ुदावन्द मसीह** जान बचाएगा। कोई कारण मालूम नहीं होता कि अब मसीह के ख़ुदावन्द सामर्थ्यवान होने के बारे में मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को कुछ सन्देह और असमंजस पैदा हो जाए और पहले वह सन्देह न हो अपितु अब तो बहुत विश्वास चाहिए, क्योंकि उसकी ख़ुदावन्दी और क़ुदरत का अनुभव हो चुका और फिर **हमारे झूठ का अनुभव**। परन्तु स्मरण रखो कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम अपने हृदय में ख़ूब जानता है कि ये सब बातें झूठ हैं कि उसको मसीह ने बचाया। जो स्वयं **मर चुका** वह किसे बचा सकता है और जो मर गया वह

सामर्थ्यवान क्योंकर तथा ख़ुदावन्द कैसा। अपितु सच तो यह है कि सच्चे और पूर्ण ख़ुदा के भय ने उसे बचाया। यदि अब नादान ईसाइयों की प्रेरणा से धृष्ट हो जाएगा तो फिर उस कामिल ख़ुदा की ओर से धृष्टता का स्वाद चखे इसलिए अब हमने निर्णय का साफ़-साफ़ मार्ग बता दिया और झूठे-सच्चे के लिए एक मापदण्ड प्रस्तुत कर दिया अब जो व्यक्ति इस साफ निर्णय के विरुद्ध शरारत और शत्रुता के मार्ग से बकवास करेगा और अपनी शरारत से बार-बार कहेगा कि ईसाइयों की विजय हुई और कुछ शर्म और लज्जा को काम में नहीं लाएगा तथा इसके बिना जो हमारे इस निर्णय का इन्साफ़ की दृष्टि से उत्तर दे सके, इन्कार और गालियों से नहीं रुकेगा तथा हमारी विजय का क़ायल नहीं होगा तो साफ समझा जाएगा कि उसे **अकुलीन बनने का शौक है** और कुलीन नहीं। अतएव कुलीन बनने के लिए आवश्यक यह था कि यदि वह मुझे झूठा जानता है और ईसाइयों को विजयी तथा विजय प्राप्त बताता है तो मेरे इस तर्क को वास्तविक तौर पर दूर करे जो मैंने प्रस्तुत किया है। तो उस पर **खाना-पीना अवैध** है यदि वह इस विज्ञापन को पढ़े और मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के पास न जाए और यदि ख़ुदावन्द तआला के भय से नहीं तो इस गन्दी उपाधि के भय से बहुत ज़ोर लगा दे ताकि वह कथित शब्दों का इक़रार कर दे और तीन हज़ार रुपया ले ले और यह कार्रवाई कर दिखाए। फिर यदि अब्दुल्लाह आथम प्रस्तावित अवधि से बच जाए तो निस्सन्देह सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध कर दे कि ईसाइयों की विजय हुई अन्यथा **अकुलीन** की यही निशानी है कि सीधा मार्ग न अपनाए और अत्याचार एवं अन्याय के मार्गों से प्रेम करता रहे। यदि किसी

को इस्लाम से ऐसा ही वैर तथा ईसाइयत की ओर झुकाव है और हर प्रकार से ईसाइयों को विजय प्राप्त बनाना चाहता है तो अब इस मार्ग के अतिरिक्त अन्य समस्त मार्ग बन्द हैं। न हम किसी को अकुलीन कहते न अकुलीन नाम रखते अपितु जो व्यक्ति ऐसे सीधे और स्पष्ट निर्णय को छोड़ कर गालियां देने से नहीं रुकेगा वह स्वयं ये नाम ग्रहण करेगा। ख़ुदा तआला जानता है कि निस्सन्देह इस्लाम की विजय हुई और मुहम्मदी स. धर्म ही विजयी रहा और ईसाई अपमानित हुए। और जो व्यक्ति इस विजय को नहीं मानना चाहे कि वह इस तरीक़े और फैसले के मार्ग से हमें दोषी करे और इस फैसले के मार्ग से हमें झूठा और पराजित ठहराए अन्यथा इसके अतिरिक्त क्या कहें कि एक ग़लती दो ग़लती तीसरी ग़लती की जननी।

और इन विरोधियों की बुद्धि पर आश्चर्य है कि अब्दुल्लाह आथम के साथ दूसरे लोग जो विरोधी पक्ष में सम्मिलित थे और फ़रीक़ (पक्ष) के इस शब्द में सम्मिलित थे जो भविष्यवाणी में था उनकी हालतों पर कुछ भी दृष्टि नहीं डालते कि उन पर भी कोई अपमान आया कि नहीं। क्या पादरी रायट नहीं मरा? क्या दो सहायक मर-मर कर नहीं बचे? क्या पादरी इमादुद्दीन के गले में हज़ार **लानत का रस्सा** नहीं पड़ा जिसको कोई झूठा मुक्तिदाता उतार नहीं सकता क्या उसका अरबी भाषा से वंचित और अनभिज्ञ होना सिद्ध नहीं हुआ? क्या इस सबूत से उसका बनावटी सम्मान ख़ाक में नहीं मिल गया। निस्सन्देह वह **अत्यन्त अपमानित हुआ और उसका कुछ शेष न रहा** और उसका ज्ञान संबंधी सम्मान गन्दगी के दुर्गंधयुक्त गढ़े में जा पड़ा। यदि वह स्वाभिमानी आदमी होता तो इस अपमान के कारण

कुछ खा-पी कर मर जाता। अफ़सोस है तुम्हारे ईमान और समझ और धार्मिकता पर कि ऐसी सच्ची भविष्यवाणी को तुम ने झुठलाया। क्या एक दिन मरोगे या नहीं या हमेशा के जीवित रहने की सूचना आ गयी है। यह तो उस भविष्यवाणी के बारे में वर्णन है जो ईसाइयों के मुकाबले पर की गई थी थी जिसे ख़ुदा तआला ने आशय के अनुसार पूरा किया। प्राय: लोग मालूम किया करते हैं कि जो अब्दुल हक़ ग़ज़नवी के साथ मुबाहल: था उस का क्या प्रभाव हुआ और किसी पक्ष का अपमान हुआ तो इसके उत्तर में हम स्पष्ट कारणों के साथ प्रत्येक पर स्पष्ट करते हैं कि अब्दुल हक़ और उसके गिरोह का **अपमान हुआ**। क्योंकि इस मुबाहले के बाद प्रत्येक मामला ऐसा पैदा हुआ कि जो हमारे सम्मान का कारण तथा उनके अपमान का कारण था।

(1) उनमें से **एक** यह हमारे लिए **सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण** का निशान प्रकट हुआ और सैकड़ों आदमी उसे देख कर हमारी जमाअत में सम्मिलित हुए और सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण से हमें प्रसन्नता हुई और विरोधियों को अपमान। क्या वे क़सम खाकर कह सकते हैं कि उन का दिल चाहता था कि ऐसे अवसर पर जो हम महदी मौऊद का दावा कर रहे हैं सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण हो जाए और **अरब देश** में इस का नामो निशान न हो और फिर जबकि इच्छा के विरुद्ध प्रकट हो गया तो निस्सन्देह उनके दिल दुखे होंगे और इसमें अपना अपमान देखते होंगे।

(2) **दूसरे** जब हम मुबाहल: के लिए गए तो हमारा बड़ा बेटा बहुत बीमार था और एक बड़ी बीमारी लगी हुई थी। हम ने उसकी

कुछ भी परवाह न की और इसी हालत में सफ़र किया। परन्तु ख़ुदा तआला ने मुबाहल: के बाद ही उसे स्वस्थ कर दिया। क्या वे क़सम खाकर कह सकते हैं कि यह रोगमुक्ति उनकी इच्छा के अनुसार हुई।

(3) **तीसरी** यह बात भी स्पष्ट है कि हम ने इसी पन्द्रह महीने के अन्दर समस्त काफ़िर कहने वाले मौलवियों को उनकी मौलवियत परखने के उद्देश्य से मुकाबले पर **अरबी** पुस्तकें बनाने के लिए सम्बोधित किया था ताकि वे अपमानित हों। तो ख़ुदा तआला ने सहायता दे कर इसमें हमें सफल किया और पादरियों की तरह पुस्तक 'नूरुलहक़' तथा 'करामातुस्सादिक़ीन' और 'सिर्रुल ख़िलाफ़त' के मुकाबले से वे असमर्थ रह गए और ऐसा अपमान पहुंचा कि मौलवियत का कुछ भी **नामोनिशान शेष न रहा**। हमने साफ़ तौर पर लिखा था कि यदि इन पुस्तकों का मुकाबला कर दिखा दें तो छः हज़ार सत्ताईस रुपए का इनाम पाएं और इल्हाम को झूठा सिद्ध करें तथा हज़ार लानत से बचें। अब हे मौलवी अब्दुल हक़ मुसलमानों को काफ़िर कहने वाले! सच बता कि आप ने मुक़ाबले पर कौन सी पुस्तक बनाई और यदि नहीं लिखी तो सच कह कि यह अपमान किस को पहुंचा? हम को या तुम को?

(4) **चौथा** यह बड़ा भारी अपमान है जो अब आप को प्राप्त हुआ और यह भविष्यवाणी सच्ची निकली जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं। इन चार अपमानों, बदनामियों तथा उन बातों को जो अन्त में हमने अपने बारे में लिखी हैं किसी न्यायकर्ता के सामने प्रस्तुत करो। यदि वह क़सम खाकर कह दे कि इस से तुम्हारा सम्मान स्थापित हुआ है और कोई दाग़ नहीं लगा तो हस क़सम खाकर कहते हैं कि हम तुम्हें

पांच सौ रुपया इनाम देंगे। अतः हम शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी को ही जज ठहराते हैं और उस के पास ही कानून के अनुसार तहरीर लेकर रुपया जमा करा सकते हैं। केवल इतना होगा कि वह खड़ा हो कर तीन बार यह वर्णन करे कि ये समस्त कारण जो अपमान के वर्णन किए गए हैं ये बिल्कुल सही नहीं हैं। तथा इन बातों से जो मुबाहलः के बाद प्रकट हुईं। अब्दुल हक़ और उसके गिरोह का अपमान नहीं अपितु सम्मान हुआ और यदि मैं झूठ कहता हूं तो हे क़ादिर ख़ुदा इस का अज़ाब मुझ पर, मेरी आंखों पर, मेरे शरीर पर, मेरे सम्मान पर, मेरी सन्तान पर बहुत जल्द साल के अन्दर★ डाल और हम लोग प्रत्येक इक़रार पर आमीन कहेंगे। तब उसी समय पांच सौ रुपया **शेख मुहम्मद हुसैन** की ज़मानत पर उनको दे दिया जाएगा। यदि साल के अन्दर शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी इन विपत्तियों से बच गए तो वह रुपया उनका स्वामित्व हो जाएगा। यदि आप लोग इस तरीक़े को न अपनाएं और अपशब्दों से न रुकें तो शर्म का स्थान है और स्मरण रहे कि मुबाहले के एक वर्ष के अन्दर ही ख़ुदा तआला ने हम पर बरकत पर बरकत उतारी। उसके विशेष सामर्थ्य और समर्थन से उत्तम-उत्तम पुस्तकें लिखीं, पवित्र क़ुरआन के सैकड़ों अध्यात्म ज्ञान और बारीकियां खुलीं तथा पुस्तकों के छपने और हमारे सिलसिले

★सुलह की प्राचीन सुन्नत से सिद्ध है कि मुबाहले की अन्तिम समय सीमा एक वर्ष होती है। अत: हम स्पष्ट सबूत अपने पास रखते हैं कि हमने जिन बरकतों को अपने बारे में लिखा है वे एक वर्ष के अन्दर ही हम पर आईं और मियां अब्दुल हक़ का जब पूरा वर्ष नहूसतों और परेशानियों में गुज़रा तो वर्ष के पश्चात् पन्द्रहवें महीने पर मरते-मरते यह बात बनाना चाही कि आथम 5 सितम्बर 1894 ई० को नहीं मरा यही मुबाहलः का प्रभाव है। परन्तु दुर्भाग्य से उसमें भी झूठा निकला। इसी से

की कार्रवाइयों के लिए **हज़ारों रुपया** आया तथा हज़ारों नए लोग जान-व-माल न्योछावर करने वाले हमारी जमाअत में सम्मिलित हुए। अतः आवश्यक होगा कि शेख़ मुहम्मद हुसैन अपनी क़सम के समय इन सब बातों को जमा करके इन का इन्कार करें।

हे ग़ज़नवी लोगो! अच्छा तो यह है कि रुक जाओ और ख़ुदा तआला से डरो और उस से लड़ाई मत करो। जिस दीपक को वह स्वयं प्रकाशित करे तुम उसे बुझा नहीं सकते। अतः फ़ौलादी क़िले के साथ टक्करें मत मारो कि तुम्हारी टक्करों से क़िला कदापि नहीं टूटेगा। अन्त में परिणाम यह होगा कि तुम्हारे ही सर टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। क्या तुम्हें थोड़ा सा भी भय नहीं कि मुसलमानों को काफ़िर बनाते और कलिमा पढ़ने वालों का नाम बेईमान रखते हो। बताओ कि ज्ञान की हालत में हम और तुम में क्या अन्तर है? क्या हम कोई शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का कार्य करते हैं, क्या नमाज़ों को छोड़ दिया या रोज़ा और अन्य इस्लाम के स्तंभों से इन्कारी हो गए हैं या हलाल को हराम (वैध को अवैध) और हराम को हलाल ((अवैध को वैध) बना दिया है। कुछ तो बताओ कि अमली (क्रियात्मक) हालत और इस्लाम की आवश्यक आस्थाओं में हम में तथा तुम में क्या अन्तर है। हां यदि मसीह की मृत्यु की आस्था के कारण हमें काफ़िर कहा जाता है तो **इमाम मालिक** को भी काफ़िर बनाओ कि उनकी आस्था भी यही थी जिस से रुजू (लौटना) सिद्ध★ नहीं। और

★**नोट-** मज्मउल बिहार में जो एक विश्वसनीय अहले हदीस की पुस्तक है लिखा है- وَقَالَ مَالِكٌ اِنَّ عِیْسٰی مَاتَ मालिक ने कहा है कि ईसा मर गया है और इसका विस्तृत वर्णन हमारी पुस्तक इत्मामुलहुज्जत में दर्ज है। (इसी से)

इमाम बुख़री की भी यही आस्था थी। यदि आस्था न होती तो क्यों वह आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ की व्याख्या के समय हदीस के समर्थन के लिए इब्ने अब्बास का यह कथन लाता मुतवफ़्फ़ीका-मुमीतुका। इस हिसाब से इमाम बुख़ारी भी काफ़िर हुए और यही आस्था इब्ने क़य्यिम ने 'मदारिजुस्सालिकीन' में स्पष्ट किया है अतः तुम्हारे कथन के अनुसार इब्ने क़य्यिम भी काफिर हैं और मोतज़िलः की यही आस्था है। अतः वे समस्त लोग काफ़िर ठहरे। परन्तु यदि इस कारण से काफ़िर कहा जाता है कि हम फ़रिश्तों को ऐसा उतरना नहीं मानते जिस से आकाश ख़ाली हो जाएं अपितु सामर्थ्यवान की क़ुदरत से उन का एक अस्तित्व आकाश में बना रहता है और एक अस्तित्व नई उत्पत्ति की भांति पृथ्वी में प्रकट होता है। मनुष्य की शक्ल पर या किसी अन्य की शक्ल पर। तो इस आधार पर आप को बहुत से बड़े उलेमा को काफ़िर बनाना पड़ेगा और यही मत 'मदारिजुन्नुबुव्वत' में शेख अब्दुल हक़ साहिब देहलवी ने वर्णन किया है और आकाशों के खाली होने का आप लोगों के पास कोई सबूत नहीं, केवल **अफ़ग़ानी जब्र** के है और इससे बड़ी-बड़ी खराबियों का सामना करना पड़ता है। तथा बहुत सी हदीसों और आयतों से इन्कार करना पड़ता है। फिर यह क्यों न कहें कि वे विलक्षण तौर पर पृथ्वी पर भी उतर आते हैं। और उतरना (नुज़ूल) भी होता है तथा चढ़ना भी। इसके बावजूद आकाश पर भी मौजूद रहते हैं واللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر और यदि यह आरोप है कि नुबुव्वत का दावा किया है और वह कुफ्र का कलिमा है तो इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों और इफ़्तिरा करने वालों पर ख़ुदा की लानत। और यदि यह आरोप है कि किसी

नबी का अपमान किया है और वह कुफ्र का कलिमा है तो इसका उत्तर भी यही है कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। हम समस्त नबियों पर ईमान लाते हैं तथा सम्मानपूर्वक देखते हैं। कुछ इबारतें जो यथास्थान चरितार्थ हैं वे अपमान की नीयत से नहीं अपितु तौहीद (एकेश्वरवाद) के समर्थन में हैं- और اِنَّمَاالْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات तुम्हारे जैसे बुद्धिमानों ने 'तक़्वियतुलईमान' वाले को भी इसी विचार से काफ़िर कहा था कि उनको इस पुस्तक में कुछ वाक्य ऐसे मालूम हुए कि जैसे नबियों का अपमान करता है और चूड़ों, चमारों को उनके बराबर जानता है। हमारी तरह उनका भी यही उत्तर था कि اِنَّمَاالْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات यही बुख़ारी की पहली हदीस है। यदि यही आप लोगों को याद न रही तो क्या याद होगा और यदि कुफ्र का कारण यही समझा गया है कि हम ने नक्षत्रों को पार्थिव संसार में ख़ुदा तआला के आदेश से प्रभावी समझा है तो अफ़सोस है आप की ऐसी सोच पर। हम प्रत्येक वस्तु की विशेषता के क़ायल हैं यहां तक कि मक्खी के भी, परन्तु अल्लाह तआला की आज्ञा से और उसकी आज्ञा के बिना हम किसी चीज़ को कुछ चीज़ नहीं समझते। और नक्षत्रों के प्रभाव (तासीर) का **शाह वलीउल्लाह साहिब** को भी इक़रार है। देखो 'हुज्जतुल्लाहिल बालिग़:'और 'फ़ुयूज़ुल हरमैन' फिर आश्चर्य कि अब तक उनको क्यों काफ़िर नहीं ठहराया गया वास्तव में **अफ़ग़ान बड़े** ही बहादुर होते हैं। ख़ुदा तआला के साथ भी लड़ने से नहीं डरते विचित्र बात है कि ख़ुदा तआला तो फ़रमाता है कि जो अस्सलामु अलैकुम कहे उसे काफ़िर मत समझो और फिर अफ़ग़ान उन लोगों को काफ़िर ठहरा रहे हैं जो दिन-रात इस्लाम के लिए प्राण देने को तैयार हैं। ख़ैर मरने के बाद

ये सब फैसले हो जाएंगे। ख़ुदा तआला हमारे दिलों को देख रहा है। इसके अतिरिक्त क्या कहें कि हम वे लोग हैं जिन का कथन है -

لا اله الا الله محمد رسول الله اٰمنا بالله و ملٰئکته و رسله و کتبه والجنة والنار والبعث بعد الموت وآثرنا القراٰن کتابا و محمدًا صلی الله علیه وسلم نبیًّا و لا ندعی النبوة و لا ندعی نسخ القراٰن بعد محمد صلی الله علیه وسلم و نشهد انه خاتم النبیین و خیر المرسلین و شفیع المذنبین و نشهد ان الحق کله فی القراٰن و حدیث النبی صلی الله علیه وسلم و کل بدعة فی النار و انا مسلمون والله یعلم ما فی قلوبنا علیه توکلنا و الیه انیب والحمد لله اولًا وآخرًا و ظاهرًا و باطنًا ربنا و ربّ العٰلمین

मियां अब्दुल हक़ अमृतसरी से मुबाहलः के प्रभाव से संबंधित परिशिष्ट

इस समय उचित मालूम हुआ कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी के मुबाहले के प्रभाव के विज्ञापन के कुछ कथनों का उसका कथन और मेरा कथन के तौर पर उत्तर दिया जाए -

उसका कथन - क्यों मिर्ज़ा जी मुबाहले की लानत अच्छी तरह पर पड़ गई या कुछ अन्तर है, मुंह काला हुआ या कुछ अन्तर है ..... अन्त तक।

मेरा कथन - हे हज़रत अब तो हम ने अपने विज्ञापन में बहुत ही सफ़ाई से और खोलकर लिख दिया कि लानत किस पर पड़ी

और मुंह किस का काला हुआ। यह तो प्रकट है कि हमेशा झूठे पर ही लानत होती है। अब आंख खोलकर देखें कि झूठा कौन है? आप का अब तक विचार है कि ईसाई विजयी हुए। इतना तो आप ने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया कि हमारे विरोधी ईसाइयों का जो सदस्य बहस का भागीदार था अर्थात् सहयोगी था या मशवरे में शामिल था या प्रमुख था उन पर भिन्न-भिन्न प्रकार की विपदाएं आईं। वे सब इस जंगे मुक़द्दस में अपने-अपने दण्ड को पहुंचे, कुछ इस जंग में मारे गए, कुछ ज़ख़्मी हुए तथा कुछ लानत के रस्से में गिरफ़्तार हुए और कुछ भाग कर इस्लामी श्रेष्ठता के झण्डे में शरणागत हो गए। यह सब कुछ पन्द्रह महीने में ही हुआ। ये वे लोग हैं जो ईसाइयों के लिखित और मौखिक इक़रार से विरोधी पक्ष में सम्मिलित हैं और उनमें से जो लोग मर गए या मर-मर के बचे या हज़ार लानत के रस्से में गिरफ़्तार हुए ये सब वही हैं जिन्होंने आथम साहिब को अपने गिरोह में से बहस के लिए चुना था और उसके सहयोगी और फ़रीक़ (पक्ष) के शब्द में सम्मिलित थे और यदि यह विचार है कि यद्यपि अन्य सहयोग करने वाले तथा बहस के समर्थक मौत, दुख और अपमान में ग्रस्त हुए परन्तु आथम साहिब क्यों न मरे तो इसका यही उत्तर है कि इल्हामी शर्त के कारण उसकी मृत्यु में विलम्ब हो गया। उसके हृदय ने इस्लाम की श्रेष्ठता को इस भय के समय में स्वीकार कर लिया। इसलिए इल्हामी शर्त से लाभ लेना उनका अधिकार हो गया। क्या किसी इबारत में यह लिखा है कि इल्हामी शर्त निरस्त हो गयी या वह विश्वसनीय न रही। जब एक बार शर्त स्थापित हो चुकी तो उसका सामान्य इबारतों में ध्यान न रखना एक गधे का काम है

न कि इन्सान का। हम ने सच की ओर रुजू दिलाने के लिए और सच की विजय प्रकट करने के उद्देश्य से और गुप्त वास्तविकता को खोलने के इरादे से एक बहुत ही साफ़ बात कह दी कि यदि आथम साहिब ने इन भय के दिनों में इस्लाम की श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं किया और हमारा यह कहना झूठ है कि स्वीकार कर लिया है तो वह हम से दो हज़ार रुपया बल्कि तीन हज़ार रुपया लें और यही इक़रार कर दें कि मैं इन भय के दिनों में ईसा को ख़ुदा जानने में पक्का रहा और इस्लाम की श्रेष्ठता को स्वीकार न किया और न इस्लामी भविष्यवाणी को एक दिन भी सच्चा समझा परन्तु यदि इक़रार न करें या इक़रार के बाद निर्धारित समय सीमा में इस दुनिया से गुज़र जाएं तो हमारी पूर्ण विजय है।★

★ **हाशिया :-** यदि यहाँ कोई नादान ईसाई प्रश्न करे कि अब यह मुबाहस: सही नहीं क्योंकि संभव है कि अब की बार मिस्टर अब्दुल्लाह आथम संयोग के तौर पर मर ही जाए तो इसके उत्तर में हम उस से पूछते हैं कि मारने वाला कौन होगा, क्या उनका ख़ुदावन्द मसीह या कोई अन्य या स्वयं किसी के मारने के बिना मर जाएगा। तो यदि वास्तव में उनके बनावटी ख़ुदावन्द मसीह के हाथ में ही मौत और जीवन है तो वह ऐसा क्यों करने लगा कि अब्दुल्लाह आथम को मार कर अपने समस्त पुजारियों का झूठा होना सिद्ध करे। क्या वह जो अपने अधिकार और सत्ता से मुर्दों को जीवित करता था और तुम्हारे कथनानुसार पृथ्वी तथा आकाश का स्रष्टा है वह एक और वर्ष मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को जीवित नहीं रख सकता। बहुत से लोग सौ-सौ वर्ष जीवित रहते हैं परन्तु अब्दुल्लाह आथम के जैसा कि नूर अफ़्शां में लिखा गया है केवल अब तक 64 वर्ष की आयु है जो मेरी आयु से केवल छः सात वर्ष ही अधिक है। हां यदि मसीह की क़ुदरत पर अब भरोसा नहीं रहा और पहले भरोसा था या अब

अब भली भांति विचार करके देखो कि मुबाहल: की लानत किस पर पड़ी, मुंह काला किस का हुआ आप का या किसी और का। यदि यह कहो कि यद्यपि आथम साहिब के शेष पक्ष पर मृत्यु अपमान और दुख उतर गए परन्तु आथम के बारे में अभी पूर्ण निर्णय नहीं हुआ तो ख़ैर क्रियात्मक तौर इतना ही मान लो कि लानत के चार भागों में से तीन भाग तो आप पर पड़ गए तथा एक भाग अभी पूर्णतया प्रकटन में नहीं आया। आथम यद्यपि पन्द्रह महीने तक दुख और रंज के हाविय: में तो रहा परन्तु अभी चूंकि पूर्ण हाविय: नहीं देखा। इसलिए उसके हिसाब में से केवल आधी लानत आप पर पड़ी। परन्तु ध्यानपूर्वक देखो तो यह भी सारी ही पड़ गई क्योंकि इस फ़ैसले के बाद जो प्रथम हम ने एक हज़ार रुपया और फिर दो हज़ार अविलम्ब देना स्वीकार किया परन्तु आथम साहिब ने इस ओर मुंह न किया तो स्पष्ट तौर पर खुल गया कि आथम साहिब अपने बयान

शेष हाशिया - वह मर गया है और पहले जीवित था तो इसका साफ़ इक़रार करना चाहिए ताकि हम एक वर्ष के समय में कुछ कम कर दें। क्या विज्ञापन में नहीं लिखा कि मिस्टर आथम ख़ुदावन्द मसीह की कृपा और क़ुदरत से बच गया तो अब ठीक अवसर पर जो झूठे और सच्चे के लिए **अन्तिम फैसला है** वह ख़ुदावन्द मसीह क्यों कृपा नहीं करेगा अब उसकी क़ुदरत और कृपा को कौन छीन ले जाएगा और जिस हालत में हम अपने सच्चे और कामिल ख़ुदा पर भरोसा करके कहते हैं कि हम ख़ुदाई कार्य पूरा करने के बिना मर ही नहीं सकते और यद्यपि आयु साठ तक पहुंच गई परन्तु हम उसकी कृपा से जिएंगे जब तक धार्मिक सेवा का कार्य पूर्ण न कर लें। तो फिर यदि अब्दुल्लाह आथम मौत से डर कर क़सम खाने से बचे तो स्पष्ट तौर पर सिद्ध होगा कि उसे उस

में झूठे हैं और प्रकट हो गया कि वास्तव में आथम साहिब ने भय के दिनों में गुप्त तौर पर इस्लाम की ओर रुजू किया था। तो इस से पूर्ण सफ़ाई के साथ सिद्ध है कि हमारी **विजय हुई** और इस्लाम धर्म विजयी रहा। फिर भी यदि कोई ईसाइयों की विजय का गीत गाता रहे तो उसे अल्लाह तआला की क़सम है कि आथम को क़सम खाने पर तैयार करे और हम से तीन हज़ार रुपया दिला दे और निर्धारित अवधि गुज़रने के पश्चात् हमें निस्सन्देह लानती, मुंह काला, दज्जाल कहे। यदि हम ने इस में झूठ बनाया है तो निस्सन्देह हमारे आगे आ जाएगा और हमारा अपमान प्रकट होगा। परन्तु हे मियां अब्दुल हक़ यदि इस वर्णन को सुनकर चुप हो जाओ तो बता कि सच्ची लानत किस पर पड़ी और वास्तविक तौर पर मुंह किस का काला हुआ। और यह भी स्मरण रखो कि हमें उनके लिए जो ईसाइयों को विजयी बताते हैं और उस भविष्यवाणी को झूठी समझते हैं दिल की आह से

शेष हाशिया - बनावटी ख़ुदा पर ईमान नहीं जिसकी कृपा का वर्णन **विज्ञापन** में किया है। मरने का प्रकृति का नियम प्रत्येक के लिए समान है। जैसा आथम साहिब उस के नीचे हैं। हम भी उस से बाहर नहीं और जैसा कि इस संसार के सामान उनके जीवन पर भी प्रभावी हैं और हम क़सम खा कर कहते हैं और ज़ोर से कहते हैं कि यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो हमारा सच्चा ख़ुदा एक वर्ष तक उनको मृत्यु देगा और हमें मृत्यु से बचाएगा। यदि उस बनावटी ख़ुदा पर भरोसा है जो मरयम के पेट से निकला तो सब मिलकर उस से **दुआ करो** ताकि इस मुबाहल: के बाद मिस्टर आथम एक वर्ष तक जीवित रहें और यदि क़सम खाने से वह विमुख हुए तो हमारी विजय-प्राप्ति पर **मुहर लगा देंगे।** अधिक क्या लिखें। सलामती हो उस पर जो मार्ग-दर्शन का अनुकरण करता है। (इसी से)

यह कहना पड़ा कि यदि वे अकुलीन नही हैं और कुलीन हैं तो इस निबंध को पढ़ते ही इस फैसले के लिए उठ खड़े हों। तो यदि इनके कहने से आथम ने क़सम खा ली और निश्चित सीमा तक बच गया तो बेशक हमारा ही मुंह काला हुआ और हम ही लानती ठहरे और सारे इल्हाम हमारे झूठे हुए और यदि उसने क़सम खाने से इन्कार किया तो बताओ आप का मुंह पूर्ण रूप से काला होगा या नहीं। यद्यपि शेष पक्ष की दृष्टि से तीन भाग आप के मुंह के तो काले हो चुके, परन्तु अब यह थोड़ा सा टुकड़ा मुंह का भी अवश्य काला होगा। देखो हम ने अविलम्ब दो हज़ार तक देना किया। इस से अधिक हम क्या करें।

अब हम देखते हैं कि हमारे विरोधियों में से कौन अविलम्ब इस फैसले के लिए प्रस्तुत करता है और कौन अकुलीन बनने पर राज़ी होता है। अफसोस कि इन लोगों को यह भी ध्यान न आया कि यदि ख़ुदा तआला ने हमारा मुंह काला करना था तो क्या यही तरीक़ा था कि ऐसी बहस में मुंह काला किया जाता जो हमारे व्यक्तिगत दावों से कुछ भी संबंध नहीं रखती थी अपितु यह केवल बहस थी कि इस्लाम सच्चा है या ईसाइयत। और पवित्र क़ुर्आन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच पर हैं अथवा ईसाइयों की शिक्षा तथा ईसा को ख़ुदा बनाना। अफ़सोस कि इन लोगों को यह भी खयाल न आया ऐसा पराजित होने में तो धर्म का अपमान होता है और बहस चाहने वाली बातों की ओर ध्यान जाकर स्वयं इस्लाम पर भारी चोट पड़ती है परन्तु इन्होंने मेरे साथ कंजूसी से इस्लाम की भी परवाह न की। अब आप लोग समझ जाएंगे कि यह लानत किस पर पड़ी? निस्सन्देह आप पर पड़ी। हे मियां अब्दुलहक़! इस के अतिरिक्त अन्य

लानतें भी जो हम वर्णन कर चुके हैं कुछ कम नहीं। सच तो यह है कि आप का मुंह तो एक बार नहीं अपितु कई बार काला हो चुका, जब पन्द्रह महीने के अन्दर बहस पक्ष का प्रमुख मरा तब मुंह काला हुआ फिर तामस हाविल की जान लेवा बीमारी से लानत की स्याही आपके मुंह पर फिर गई, फिर सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण ने मुंह पर थूका, फिर अब्दुल्लाह पादरी की जानलेवा बीमारी से तह कि तह जमी। फिर हज़ार लानत के अपमान से जिसमें समस्त पादरी तथा समस्त काफ़िर कहने वाले सम्मिलित थे यह काला मुंह होना पूर्णता को पहुंच गया। आथम ने भी मुंह काला किया और भविष्य में भी करेगा और मुबाहल: के बाद मियां अब्दुल हक़ पर क्या बरकतें उतरीं इस का तो कोई भी सबूत न दिया। हां मियां अब्दुल हक़ ने बरकतें उतरने के सबूत में यह तो खूब ही सुनाई कि सगे भाई की मृत्यु हुई और उसकी रांड औरत को निकाह में लाया। क्या ये बरकतें हैं और यह मुबाहल: का प्रभाव, शर्म का स्थान। सोचने वाले सोच लें। और यदि धार्मिक मआरिफ़ से इस अवधि में कुछ हिस्सा मिला था तो क्यों 'करामतुस्सादिक़ीन' का उत्तर न लिखा और क्यों हज़ार लानत को अपने पर पड़ने दिया। सांसारिक बरकतें भी वे होती हैं जिन का संसार में उदाहरण कम मिले न यह कि रांड और जीर्ण औरत को छल से घर में डाला जाए और फिर यह कह दें कि बरकतें उतर गईं। भाई का मरना बे हिसाब गया और विधवा को प्रस्तुत कर दिया। यदि वास्तविक बरकतों को देखना हो तो इस स्थान पर आकर देख लो। देखो क्योंकि ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा से एक अनपढ़ को अरबी जानने में जीभ खोली और क़ुर्आनी रहस्यों को उसकी जीभ पर जारी

किया और वह सरसता एवं सुबोधता प्रदान की जिस से तुम्हारा और तुम्हारे जैसे विरोधियों का मुंह काला हो गया और वे मुकाबला करने से असमर्थ हो गए।

ख़ुदा तआला ने हज़ारों आदमियों को इस ओर फेर दिया अतः वे लोग हज़ारों रुपयों से सहायता करते हैं यदि पचास हज़ार रुपए की भी आवश्यकता हो तो अविलम्ब उपस्थित हो जाएं, मालों और प्राणों को न्योछावर कर रहे हैं, सैकड़ों लोग आते जाते और एक बड़ी संख्या में जमाअत एकत्र रहती है। अतः कभी सौ से अधिक लोग तथा कभी दो सौ एकत्र होते हैं।

ये ख़ुदा के समर्थन हैं या यह कि सगा भाई मरा और उसकी बेचारी विधवा औरत को अपनी ओर घसीट लिया और कुंवारी के मिलने से सारी आयु ही असफल रहे। वाह री **बरकतें** और **वाह री शर्म** और अभी इस विधवा से सन्तान हुई नहीं पहले से दावा है कि अवश्य होगी। फिर अभी से इस ख़याली पुलाव को मुबाहलः का प्रभाव भी समझ लिया है। **वाह रे शेखचिल्ली के बड़े भाई**। हां यह आवश्यक है कि सन्तान के लिए दिन-रात हिम्मत करते रहो फिर यदि कोई मुर्दा लड़की ही पैदा हो तो निस्सन्देह कह देना कि मुबाहलः का प्रभाव है। अफ़ग़ानी जर्गे में यह बात सुनी जाएगी।

शेष आरोपों का उत्तर यह है कि लड़के भविष्यवाणी के बारे में ख़ुदा तआला ने दो लड़के प्रदान किए। जिनमें से एक लगभग सात वर्ष का है परन्तु यदि हमने कोई इल्हाम सुनाया था कि पहली बार अवश्य लड़का ही पैदा होगा तो वह इल्हाम प्रस्तुत करना चाहिए अन्यथा झूठों पर ख़ुदा की लानत। यह सच है कि 8 अप्रैल 1894

हम ने सूचना दी थी कि एक लड़का होने वाला है तो वह पैदा हो गया। हमने उस लड़के का नाम मौलूद मौऊद नहीं रखा था, केवल लड़के के बारे में भविष्यवाणी थी और यदि हमने किसी भविष्यवाणी में उस का नाम मौलूद मौऊद रखा था तो तुम पर खाना हराम है जब तक वह इल्हाम प्रस्तुत न करो। अन्यथा झूठों पर ख़ुदा की लानत।

यह कहना कि अहमद बेग के दामाद की अवधि गुज़र गई है यह भी मूर्खता और जहालत है। पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान तुम लोगों में नहीं रहा। इसलिए निरर्थक आरोप तुम्हारी पद्धति हो गई थोड़ी **शर्म** करना चाहिए जिस हालत में स्वयं अहमद बेग इसी भविष्यवाणी के अनुसार निर्धारित अवधि के अन्दर मृत्यु पा गया और वह भविष्यवाणी के प्रथम नम्बर पर था तो फिर क्यों उस भविष्यवाणी के मूल अर्थ में सन्देह किया जाता है। जिस हालत में भविष्यवाणी के कुछ भाग निर्धारित अवधि के अन्दर पूरे हो गए। जिस से किसी को इन्कार नहीं। फिर यदि मान भी लें कि उसके दामाद की मृत्यु अवधि गुज़रने के बाद हो तो यह ख़ुदा के नियम के विरोध के कारण नहीं होगा। जो ख़ुदा तआला की किताबों में पाई जाती है और ख़ुदा का नियम (सुन्नत) यह है कि अज़ाब के बारे में जो भविष्यवाणियां हों उनकी तिथि और अवधि अटल प्रारब्ध (तक़्दीर) नहीं होता अपितु वह अवधि ऐसे पश्चाताप (तौबा) और इस्तिग़फ़ार (ख़ुदा से पापों की क्षमा याचना करने) से भी टल सकती है जिस पर इन्सान बाद में स्थापित न रह

नोट - औलाद के बारे में मियां अब्दुल हक़ ने कोई इल्हाम तो प्रस्तुत नहीं किया केवल लम्बी उम्मीद है परन्तु हमें इस बारे में भी इल्हाम हुआ और अल्लाह तआला ने खुशख़बरी दी। और फ़रमाया कि اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ अर्थात् हम तुझे एक लड़के की खुशख़बरी देते हैं। (इसी से)

सके। और हमने सुल्तान मुहम्मद के बारे में उसकी मौत का कारण अलग विज्ञापन में इस प्रकार से सिद्ध कर दिया है जिस के स्वीकार करने से किसी ईमानदार को बहाना नहीं होगा और बेईमान जो चाहे सो कहे। **याद रखना चाहिए कि भविष्यवाणी अपनी समस्त श्रेष्ठताओं के साथ पूरी हुई** जिससे कोई बुद्धिमान इन्कार नहीं कर सकता। अत: ये समस्त आरोप धर्महीनता एवं मूर्खता के कारण हैं। आरोप वह है जो ख़ुदाई किताबों के अनुसार हो न कि ऐसा आरोप जिसके नीचे समस्त नबी और रसूल आ जाएं। ऐसे आरोप करना बेईमानों और लानतियों का काम है। अब इस सम्पूर्ण वर्णन से मियां मुहियुद्दीन के इल्हामों की वास्तविकता खुल गई। इति.

والسلام علی من اتبع الهدی

जन सामान्य के कुछ आरोपों का उत्तर और मियां अब्दुलहक़ ग़ज़नवी के लिए उपहार

प्रथम आरोप

यदि आथम ने सच की ओर रुजू किया था तो उसके लक्षण उसमें क्यों प्रकट नहीं?

उत्तर - वास्तव में यह रुजू फिरऔनी रुजू के अनुसार था न कि वास्तविक रुजू के अनुसार। फ़िरऔन जब रुजू करता था तो अज़ाब दूर किया जाता था और यही ख़ुदा की आदत है और ख़ुदा की आदत की पुष्टि में यह आयत भी गवाह है -

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۳﴾ (अद्दुख़ान-13)

अर्थात् हे रब्ब! हम से अज़ाब खोल दे कि हम ईमान लाए। फिर इसके उत्तर में फ़रमाता है -

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿۱۶﴾ (अद्दुख़ान-16)

अर्थात् हम थोड़ी अवधि तक अज़ाब खोल देते हैं और फिर तुम लौटोगे और काफ़िर बन जाओगे। यह आयत इस बात पर स्पष्ट आदेश है कि ख़ुदा तआला एक व्यक्ति का गिड़गिड़ाना स्वीकार करके अज़ाब टाल देता है तथा जानता है कि फिर यह कुफ़्र और पाप की ओर लौटेगा तथा गिड़गिड़ाने और पापों की क्षमा याचना करने से अज़ाब टालना अल्लाह तआला का अनादि नियम है। इस से कौन इन्कार कर सकता है सिवाए ऐसे व्यक्ति के जो पूर्ण पक्षपात् से अंधा हो गया हो। इसके अतिरिक्त यह मान्य एवं प्रसिद्ध बात है कि जब ख़ुदा की धाक अपना जल्वा दिखाती है तो उस समय पापी इन्सान

का और रूप होता है और जब धाक का समय निकल जाता है तो फिर अपने स्वाभाविक दुर्भाग्य से असली रूप की ओर लौट कर आता है। तुम ने ऐसे बहुत से लोग देखे होंगे कि जब उन पर कोई मुक़द्दमा दायर हो जिससे कठोर क़ैद या फांसी या मृत्यु दण्ड का खतरा हो यद्यपि यह भी गुमान हो कि शायद छूट जाएं तो वह ऐसी धाक को देखकर अपने पापी चाल चलन को परिवर्तित कर लेते हैं। नमाज़ पढ़ते हैं तौब: करते हैं और लम्बी-लम्बी दुआएं करते हैं और फिर जब उनकी इस विनय की हालत पर ख़ुदा तआला दया करके उनको उस विपत्ति से मुक्ति देता है तो तुरन्त उन के दिल में यह विचार गुज़रता है कि यह रिहाई ख़ुदा तआला की ओर से नहीं संयोग की बात है तब वे अपने पाप में पहले से भी अधिक बुरे हो जाते हैं और कुछ दिनों में ही अपनी पहली आदत की ओर लौट आते हैं। इस के और भी उदाहरण हैं परन्तु यहां ख़ुदा का कलाम पर्याप्त है। अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَآئِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ إِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهُ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (यूनुस-13)

अर्थात् जब मनुष्य को कोई दु:ख पहुंचता है तो हमारे पास दुआएं करने लगता है करवट की हालत में, बैठकर और खड़े होकर और जब हम उस दु:ख को उस से दूर कर देते हैं तो ऐसे चला जाता है कि मानो न कभी उसको दु:ख पहुंचा और न कभी दुआ की।

फिर एक अन्य स्थान में फ़रमाता है -

حَتّٰٓى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوْا بِهَا

جَآءَتۡہَا رِیۡحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَہُمُ الۡمَوۡجُ مِنۡ کُلِّ مَکَانٍ وَّ ظَنُّوۡۤا اَنَّہُمۡ اُحِیۡطَ بِہِمۡ دَعَوُا اللّٰہَ مُخۡلِصِیۡنَ لَہُ الدِّیۡنَ لَئِنۡ اَنۡجَیۡتَنَا مِنۡ ہٰذِہٖ لَنَکُوۡنَنَّ مِنَ الشّٰکِرِیۡنَ فَلَمَّاۤ اَنۡجٰہُمۡ اِذَا ہُمۡ یَبۡغُوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ بِغَیۡرِ الۡحَقِّ (यूनुस-23,24)

अर्थात् जब तुम किश्ती में होते हो और किश्ती के सवारों को एक खुश हवा के साथ लेकर किश्तियां चलती हैं और वे उन किश्तियों के चलने से बहुत प्रसन्न होते हैं कि सहसा एक तीव्र हवा चलनी शुरू होती है और हर ओर से उन पर लहर आती है और अत्यधिक गुमान यह हो जाता है कि बस अब हम घेरे गए अर्थात् मारे गए। तब उस समय निष्कपटता से ख़ुदा तआला को स्मरण करते हैं कि हे सामर्थ्यवान ख़ुदा यदि अब हमें मुक्ति दे तो हम कृतज्ञ होंगे। फिर जब ख़ुदा तआला उनको मुक्ति देता है तो फिर अत्याचार और उपद्रव की ओर रुजू करते हैं जिस पर पहले जमे हुए थे।

द्वितीय आरोप -

आथम साहिब पन्द्रह महीने में नहीं मरे इस से सिद्ध हुआ कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने ख़ुदा पर झूठ बांधा।

उत्तर - क्या नऊज़ुबिल्लाह यूनुस नबी ने भी ख़ुदा पर झूठ बांधा था कि उसका निर्धारित वादा टल गया बल्कि उस वादे में जो हमारे इल्हाम में था स्पष्ट शर्त थी। अर्थात् यह कि बशर्ते कि सच की ओर रुजू न करे। परन्तु यूनुस के अज़ाब के वादे में कोई भी शर्त नहीं थी अपितु बिना किसी शर्त के केवल ये शब्द थे कि चालीस दिन तक उस क़ौम पर अज़ाब उतरेगा और ख़ुदा तआला ने हज़रत यूनुस की परीक्षा के लिए इस ईमान की शर्त को गुप्त रख लिया था, जिस के

कारण हज़रत यूनुस पर वह परीक्षा आई जो क़ुर्आन और हदीसों में दर्ज है। यदि इस शर्त पर हज़रत यूनुस को ज्ञान होता तो वह इस शर्त की जासूसी करते और ख़ुदा तआला ने भी उनको इल्हाम द्वारा सूचित नहीं किया क्योंकि परीक्षा अभीष्ट थी। तब वह इस देश से भाग गए और समझा कि काफ़िर झुठलाएंगे और ठट्ठा करेंगे। इस क़िस्से से बड़े उलेमा ने बहुत कुछ (परिणाम) निकाला। अतः सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ि. अपनी किताब 'फ़ुतूहुलग़ैब' में लिखते हैं कि कभी ख़ुदा के संयमी लोगों को जो उसके विशेष बन्दे हैं ख़ुदा तआला की ओर से एक वादा मिलता है और वह पूरा नहीं होता। यही बहस 'फ़ुयूज़लहरमैन' में शाह वली उल्लाह साहिब ने की है और उदाहरण के तौर पर नबियों की कुछ घटनाएं लिखी हैं। अन्त में फैसला यह किया है कि ख़ुदा तआला पर अनिवार्य नहीं कि मुल्हम व्यक्ति पर अपनी वह्यी और इल्हाम की सब शर्तें खोल दे। अपितु जहां कोई परीक्षा अभीष्ट होती है कुछ शर्तों को गुप्त रख लेता है। जिस प्रकार हज़रत यूनुस के क़िस्से में रखा इस में क्या सन्देह है कि हज़रत यूनुस की भविष्यवाणी एक मैदान की भविष्यवाणी थी परन्तु अल्लाह तआला ने ईमान की शर्त को हज़रत यूनुस पर प्रकट न किया जिस से उन को बड़ी आजमायश का सामना करना पड़ा और इस आज़मायश से हज़रत मसीह भी बाहर न रहे क्योंकि जिस पहली भविष्यवाणी पर उनकी नुबुव्वत के सही होने का आधार था, वह भविष्यवाणी अपने मूल रूप में पूरी न हुई। अर्थात् एलिया नबी का दोबारा दुनिया में आना और अन्ततः हज़रत मसीह ने तावील (प्रत्यक्ष अर्थों से हट कर अर्थ करना) से काम लिया। परन्तु तावीलों में बहुत ही कठिन बात यह थी

कि वे तावीलें यहूदी उलेमा के इज्मा (सर्वसम्मति) से सर्वथा विरुद्ध थीं तथा एक भी उनके साथ सहमत नहीं था। हज़रत मसीह ने कहा था कि एलिया से अभिप्राय यह्या है और एलिया की विशेषताएं यह्या में उतर आई हैं मानो एलिया ही उतर आया। परन्तु यह तावील बड़े ज़ोर से रद्द की गई और हज़रत मसीह को नऊज़ुबिल्लाह नास्तिक कहा गया कि पहली किताबों तथा स्पष्ट आदेशों के उल्टे मायने करता है। इसलिए एक ईसाई या एक मुसलमान के लिए सभ्यता से दूर है कि **यदि किसी भविष्यवाणी को अपने रूप पर पूर्ण होती देखे तो तुरन्त मुल्हम*को झूठा कह दे।** हज़रत मसीह की कुछ भविष्यवाणियां अपने समय पर भी पूरी नहीं हुईं अर्थात् समय कोई बताया गया और उनका प्रकटन किसी अन्य समय में हुआ। जैसे दिन से अभिप्राय वर्ष लिया गया। मूल वास्तविकता यह है कि कभी दिन या सप्ताह या महीने से ख़ुदा के नज़दीक युग का एक समानुपातिक (मुतनासिब) भाग अभिप्राय होता है जिस के समस्त भाग सदृश और एक समान होते हैं। फिर जब दूसरा युग आता है जो प्रथम युग से विशेषता एवं भिन्नता रखता है तो कहा जाता है कि वह दूसरा दिन या दूसरा सप्ताह या दूसरा महीना है। उदाहरणतया जैसा कि दिन से अभिप्राय वह सीमित समय है जो दो परिवर्तनों के मध्य में है अर्थात् सूर्य का उदय और अस्त। वैसा ही रूहानी तौर पर उस सीमित समय का नाम दिन होगा जो दो रूहानी परिवर्तनों के अन्दर है जैसा कि बद्र युद्ध की विजय के लिए एक दिन का वादा दिया गया और लिखा गया कि केवल एक दिन की अवधि है फिर विजय होगी हालांकि उस दिन

* **मुल्हम -** जिसे ख़ुदा तआला की ओर से इल्हाम होता हो (अनुवादक)

से तात्पर्य वर्ष था और उस दिन से समानता यह थी कि यह विजय भी दो परिवर्तनों के अन्दर थी एक यह महान परिवर्तन कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने पैतृक शहर से हिजरत के तौर पर निकले और इस सच्चाई के सूर्य ने मदीने की ओर रूजू किया। दूसरे यह कि इस सूर्य का मदीना मुनव्वरा पर उदय करना मक्का वालों के लिए अस्त होने के सामान हो गया अतः उदय भी सिद्ध हो गया और अस्त भी जैसा कि अमरीका में सूर्य का उदय होना हमारे लिए अस्त के आदेश में है तो जब वह सूर्य मक्का से छुप गया और वह ख़ुदा का आशिक़ इन गलियों से निकल गया तो फिर मक्का में क्या था, एक अंधकारमय रात थी। न वह प्रकाश रहा न वे बरकतें रहीं। पहले तो मक्का को फ़रिश्तों की पंक्तियों ने घेरा हुआ था और फिर शैतानों की जमाअतों ने घेर लिया। प्रकाश जाता रहा और अंधकार आ गया। इस की ओर संकेत था कि

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيهِمْ (अलअन्फ़ाल-34)

अर्थात् ख़ुदा ऐसा नहीं कि मक्का वालों पर अज़ाब उतारे और तू उनमें हो। क्योंकि वह सूर्य था और यह असंभव है कि सूर्य के होते अज़ाब का अंधकार उतरे। तो जब उस सूर्य ने मदीना में उदय किया तो मदीना वालों के लिए दिन चढ़ गया और मक्का में अस्त होने के लक्षण पैदा हुए और वे दो महान परिवर्तन प्रकटन में आ गए जिन में दिन सीमित होता है परन्तु जब ताकीद और पुनरावृत्ति के तौर पर किसी दिन या तिथि का वादा हो जाए तो इस से मानवीय दिन और तिथियां अटल और निश्चित तौर पर अभिप्राय होती हैं, अन्यथा कभी परीक्षा के तौर पर ख़ुदाई परिभाषाएं मध्य में आ जाती हैं परन्तु

इसके बावजूद मूल भविष्यवाणी में अन्तर नहीं आता। भविष्यवाणी के बारे में यह पूर्ण पड़ताल है जिस पर समस्त नबियों और वलियों की सहमति है। फिर उन लोगों के ईमान का क्या हाल है जो शीघ्र जीभ को खोलते हैं और सच के खुलने तक प्रतीक्षा नहीं करते।

लानतों के प्रकार जिन से मियां अब्दुलहक़ ग़ज़नवी अनभिज्ञ हैं और उन पर स्पष्ट तौर पर पड़ रही हैं

पहली लानत

यह कि ईसाइयों के समर्थक बने और ऐसी बहस में जो अल्लाह और रसूल की सच्चाई सिद्ध करने के लिए थी ईसाइयों की सहायता की और उनके विजयी होने का इक़रार किया। हम सिद्ध कर चुके हैं कि ये पादरी ही दज्जाल हैं। फिर जिन लोगों ने दज्जाल की हां के साथ हां मिला दी। ये वही यहूदी हैं जिन के बारे में सही मुस्लिम में हदीस है कि वे लगभग सत्तर हज़ार दज्जाल के साथ हो जाएंगे। साथ होना यही है कि उनकी बात की पुष्टि करना और हदीस में इस बात की व्याख्या है कि वे यहूदी वास्तव में मुसलमान होंगे, परन्तु यहूदियों की तरह अपनी ग़लतियों पर जमेंगे और बाह्य रूप पर मुग्ध होने वाले होंगे इसलिए यहूदी कहलाएंगे। और हदीसों को अनुकरण की दृष्टि से देखने से ज्ञात होता है कि ये यहूदी उस समय दज्जाल के अधीन होंगे। जब एक फ़ित्न: होगा और मुसलमानों का ईसाइयों के साथ कुछ मुकाबला आ पड़ेगा। ईसाई अपनी शरारत से कहेंगे कि हमें विजय हुई और मुस्लमान कहेंगे हमें विजय हुई। मुसलमानों के

लिए आकाश गवाही देगा और आकाशीय आवाज़ आएगी। अर्थात् ख़ुदा का इल्हाम कि الحق فی اٰل محمد और ईसाइयों के लिए शैतानी आवाज़ आएगी। अर्थात् वे लोग छल और धोखे से जो एक शैतानी तरीक़ा है लोगों को बड़ा धोखा देंगे जैसे वह शैतानी आवाज़ होगी जिन का यह विषय होगा الحق فی اٰل عیسٰی अर्थात् ईसा के लोगों के साथ सच है। तब यहूदी स्वभाव के लोग शैतानी आवाज़ की ओर झुक जाएंगे और हां में हां मिलाकर दज्जाल के अधीन हो जाएंगे। अन्त में ख़ुदा फ़ैसला कर देगा और इस्लाम की सच्चाई के लिए स्पष्ट निशान प्रकट होंगे। तब दज्जाल के अधीन कुछ लोग अपमान के साथ रुजू करेंगे। यह खुलासा संकेतों, इबारतों और हदीसों से है। चाहिए कि इस में भली भांति विचार करें।

(2) दूसरी लानत

यह लानत सूर्य-ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण है। यह भी हमारे विरोधियों को अपमानित करने के लिए कुछ थोड़ी नहीं बशर्ते कि कुछ शर्म हो। आकाशीय गवाही ख़ुदा तआला की गवाही है। हदीस की भविष्यवाणी पूरी हुई। इस से इन्कार किया यह लानत है या नहीं? यदि यह लानत नहीं तो कोई उदाहरण बताओ कि किसी दावेदार के साथ कभी सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण रमज़ान के महीने में जमा हुआ जब से दुनिया की नींव डाली गई है।

(3) तीसरी लानत

यह लानत उन पुस्तकों के मुकाबले से असमर्थ होना है जिन में उन लोगों पर स्पष्ट लानतें भेजी गई थीं जो काफ़िर कहने वाले तथा धर्म के इन्कारी होकर फिर मुकाबला न कर सकें। वास्तव में

यह लानत भी कुछ कम नहीं, अपितु एक हज़ार लानत है कि यदि ज़ंजीरों की भांति एक दूसरे के साथ जोड़ कर उनकी लम्बाई दिखाई जाए तो एक बड़ा रस्सा बनता है जो समस्त काफ़िर कहने वालों के गले में डालने के लिए पर्याप्त होगा। फिर अद्भुत शर्म है कि अब तक कहते हैं कि हम पर कोई लानत नहीं पड़ी। क्या ईसाइयों की इस बहस में सहायता करना जो शुद्ध रूप से अल्लाह और रसूल के लिए थी लानत नहीं? क्या यह हज़ार लानत का लम्बा रस्सा कुछ भी चीज़ नहीं और इस से कुछ अपमान नहीं हुआ? इस से सिद्ध होता है कि हमारे काफ़िर कहने वालों की इज़्ज़त बड़ी पक्की है। कि मार पर मार पड़ती गई परन्तु इस इज़्ज़त में अन्तर नहीं आता।

(4) चौथी लानत

ईसाई पक्ष पर भविष्यवाणी का पूरा होना है जिसे हम वर्णन कर चुके हैं। यह लानत वास्तव में कई लातनों का मिश्रण है जिसके विवरण की आवश्यकता नहीं।

(5) पांचवी लानत

शीघ्र पड़ने वाली है और वह यह कि यदि इस स्पष्ट विजय के बावजूद जो हमें ख़ुदा तआला की कृपा से ईसाइयों की बहसों के पक्ष पर प्राप्त हुई। अर्थात् उनमें से कोई मरा और कोई मौत तक पहुंचा और शोक करने वाला बना और किसी पर अपमान की लानत पड़ी और किसी पर इतना भय पड़ा कि न जीवितों में रहा न मुर्दों में। अब भी यदि हमारी विजय का ये ग़ज़नवी लोग तथा अन्य काफ़िर कहने वाले इक़रार न करें और न आथम को इस बात पर तैयार करें कि वह क़सम खाए और दो हज़ार रुपया ले, और एक

वर्ष गुज़रने के बाद उसका मालिक बन जाए तो निस्सन्देह उन पर ख़ुदा तआला की लानत है और ये विकृत हो गए और कंठमाला (गले का रोग) से जा मिले तथा जान बूझ कर वह पहलू ग्रहण किया जिसमें अल्लाह और रसूल का अनादर है। अब हम इस बारे में अधिक नहीं लिखेंगे और इसी पर समाप्त करते हैं। मियाँ अब्दुल हक़ को इस उत्तर से शोक ग्रस्त नहीं होना चाहिए कि यह वही पत्थर है जो तूने मेरे सर पर मारा।

وافوض امری الی اللہ ھو نعم المولٰی و نعم النصیر ⁕

हे काफ़िर कहने वाले उलेमा! उन लक्षणों और खबरों के बारे में क्या कहते हो★ जिन को इमाम अब्दुल वहाब शौरानी तथा

⁕ एक फ़ैसला करने वाला हज़ार रुपए के इनाम का विज्ञापन मियां रशीद अहमद गंगोही इत्यादि की ईमानदारी परखने के लिए जिन्होंने इस ख़ाकसार के बारे में यह विज्ञापन प्रकाशित किया है कि यह व्यक्ति काफ़िर, दज्जाल और शैतान है और इस पर लानत तथा गाली-गलौज करते रहना पुण्य की बात है और इस विज्ञापन के वे सब काफ़िर कहने वाले सम्बोधित हैं जो काफ़िर और महा काफ़िर कहने से नहीं रुकते चाहे लुधियानवी हैं या अमृतसरी या ग़ज़नवी या बटालवी या गंगोही या पंजाब और हिन्दुस्तान के किसी अन्य मुक़ाम में

الا لعنۃ اللہ علی الکافرین المکفرین الذین یکفرون المسلمین

अब इन सब पर अनिवार्य है अपने सजातीय मौलवी मुहम्मद हसन साहिब लुधियानवी को क़सम दिलवा कर हम से हज़ार रुपया ले लें अन्यथा याद रखें कि वे सब मुस्लिम को काफ़िर कहने तथा सच्चाई के इन्कार के कारण अनश्वर लानत में ग्रस्त होकर समस्त शैतानों के साथ नर्क में पड़ेंगे और याद रहे क़सम उस लेख की होगी जो विज्ञापन में दर्ज है।

★ यह कहना अनुचित होगा कि ये हदीसें कमज़ोर हैं या कुछ रिवायते मजरूह हैं या हदीस मुनकते और मुर्सल है क्योंकि जिस हदीस की भविष्यवाणी वास्तविक

अन्य बुज़ुर्ग मुतक़द्दिमीन (पहले लोग) ने अपनी-अपनी पुस्तकों में विस्तारपूर्वक नक़ल किया है जिन में से कुछ भाग मौलवी सिद्दीक़ हसन खान भोपालवी ने अपनी फ़ारसी पुस्तकों हुजजुल किरामः इत्यादि में संक्षिप्त तौर पर लिखा है कि महदी मौऊद के चार निशान विशेष हैं जिन में उन के अतिरिक्त भागीदार नहीं।

(1) यह कि उलेमा उसे काफ़िर कहेंगे और उसका नाम काफ़िर, दज्जाल और बेईमान रखेंगे और सब मिल कर उसे झुठलाएंगे तथा उसके तिरस्कार और गाली-गलौज के लिए कटिबद्ध होंगे और उसके बारे में अत्यन्त वैर पैदा करेंगे और उसे नास्तिक एवं मुर्तद समझेंगे तथा उसके बारे में प्रसिद्ध करेंगे कि यह तो इस्लाम का उन्मूलन कर रहा है। यह कैसा महदी है और लानत एवं काफ़िर-कफ़िर कहने को पुण्य का कारण तथा प्रतिफल समझेंगे और उसे इस युग के मौलवी कदापि स्वीकार नहीं करेंगे। परन्तु अन्तिम दिनों में जब उसकी सच्चाई खुल जाएगी तो केवल निफ़ाक़ (बाहर से कुछ दिल में कुछ और) से मान लेंगे दिल से नहीं और महदी को स्वीकार करने वाले प्रायः जन सामान्य या एकान्तवासी या पवित्र हृदय वाले फ़क़ीर लोग होंगे जो अपने सही कश्फों से उसे पहचान लेंगे। परन्तु मौलवियों को इसके अतिरिक्त अन्य कोई भाग नहीं मिलेगा कि उसे नास्तिक काफ़िर और दज्जाल कहेंगे। उस समय के मौलवी उन सब से निकृष्टतम होंगे जो पृथ्वी पर रहते हैं। उनकी प्रतिभा और विवेक

तौर पर सच्ची निकली उसका दर्जा वास्तव में सिहाह से भी बढ़कर है क्योंकि उसकी सच्चाई अत्यन्त स्पष्ट तौर पर प्रकट हो गई। तो जब हदीस की भविष्यवाणी सच्ची निकली तो फिर भी उसमें सन्देह करना स्पष्ट बेईमानी है।

जाता रहेगा, वे गहरी बातों को सुन कर तुरन्त इन्कार कर देंगे कि ये बातें तो हमारी प्राचीन आस्थाओं के विरुद्ध हैं।

(2) महदी मौऊद का दूसरा निशान यह है कि उसके समय में रमज़ान के महीने में सूर्य-ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण होगा तथा इस से पूर्व जैसा कि हदीस का कथन स्पष्ट बता रहा है कभी किसी रसूल या नबी या मुहद्दिस के समय में सूर्य-ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण का जमा होना रमज़ान में नहीं हुआ और जब से कि दुनिया पैदा हुई है किसी रिसालत, या नुबुव्वत या मुहद्दिसियत का दावा करने वाले के समय में कभी चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण इक्ट्ठे नहीं हुए और यदि कोई कहे कि इकट्ठे हुए हैं तो सबूत का देना उसका दायित्त्व है। परन्तु हदीस का अर्थ यह नहीं कि महदी के प्रादुर्भाव से पहले चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण रमज़ान के महीने में होगा। क्योंकि इस स्थिति में तो संभावनाओं में से था कि चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण को रमज़ान के महीने में देख कर प्रत्येक झूठ गढ़ने वाला महदी मौऊद होने का दावा करे और मामला संदिग्ध हो जाए, क्योंकि बाद में दावेदार होना आसान है और जब बाद में कई मुद्दई प्रकट हो गए तो स्पष्ट तौर पर कोई चरितार्थ न रहा। अपितु हदीस का मतलब यह है कि महदी मौऊद के दावे के बाद अपितु एक अवधि गुज़रने के पश्चात् यह निशान दावे के समर्थन के तौर पर प्रकट हो। जैसा कि

انَّ لمهدینا اٰیتین ای لتائید دعوی مهدینا اٰیتین

स्पष्ट बता रही है तथा इस तौर से किसी झूठ गढ़ने वाला किसी बात में आगे नहीं जा सकता और कोई योजना नहीं चल सकती, क्योंकि महदी का प्रकटन बहुत पहले होकर फिर दावे के समर्थन

के तौर पर सूर्य-ग्रहण भी हो गया। न यह कि इन दोनों को देख कर महदी ने सर निकाला। इस प्रकार के समर्थन करने वाले निशान हमारे सय्यद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी पहली किताबों में लिखे गए थे जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के बाद प्रकटन में आए और दावे के सत्यापन करने वाले तथा समर्थक हुए। अतः ऐसे निशान दावे से पूर्व निरर्थक और बेकार होते हैं क्योंकि उनमें झूठ गढ़ने की गुंजायश बहुत है तथा इस पर और भी प्रसंग है और वह यह है कि चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण तथा महदी का रमज़ान के महीने में मौजूद होना विलक्षण है और केवल चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण एकत्रित होना विलक्षण नहीं।

(3) तीसरा निशान महदी मौऊद का यह है कि उसके समय में एक उपद्रव होगा और ईसाइयों तथा महदी के लोगों का एक झगड़ा पड़ जाएगा। ईसाइयों के लिए शैतान आवाज़ देगा कि الحق فی اٰل عیسٰی अर्थात् सच ईसा के लोगों में है और विजय ईसाइयों की है तथा महदी के लोगों के लिए आकाशीय आवाज़ आएगी अर्थात् निशानों और समर्थनों के साथ ख़ुदाई गवाही यह होगी कि الحق فی اٰل محمد अर्थात् सच महदी के लोगों में है। अन्त में इस आवाज़ के बाद शैतानी अंधकरा उठ जाएगा और लोग अपने इमाम की पहचान कर लेंगे।

(4) चौथी निशानी महदी की यह है कि उसके समय में बहुत से यहूदी प्रकृति के दज्जाल से मिल जाएंगे। अर्थात् वे लोग बाह्य तौर पर मुसलमान कहलाएंगे और दज्जाल की हां के साथ हां मिलाएंगे अर्थात् ईसाइयों की विजय के दावे के सत्यापनकर्ता होंगे। ये चार निशानियां ऐसी हैं जो महदी के लिए विशेष हैं। और यद्यपि इस युग से पहले

भी बहुत से अल्लाह के वलियों तथा बुज़ुर्गों को काफ़िर ठहराया गया परन्तु निशानी का शब्द इस बात को बताता है क महदी मौऊद की इस ज़ोर शोर से तक्फ़ीर की जाएगी कि इस से पूर्व कभी मौलवियों ने ऐसे ज़ोर-शोर से किसी की तक्फ़ीर (काफ़िर ठहराना) नहीं की होगी और न किसी को ऐसे ज़ोर-शोर से दज्जाल कहा होगा। अतः ऐसा ही हुआ और इस ख़ाकसार को न केवल काफ़िर अपितु महाकाफ़िर कहा गया। ऐसा ही संभव है कि पहले भी किसी महीने में चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण इकट्ठे हो गए हों परन्तु यह कभी नहीं हुआ और हरगिज़ नहीं हुआ कि सिवाए हमारे इस ज़माने के दुनिया के आरम्भ से आजतक कभी चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण रमज़ान के महीने में इस प्रकार से इकट्ठे हो गए हों कि उस समय कोई रिसालत, या नुबुव्वत या मुहद्दिसियत का दावेदार भी मौजूद हो। ऐसा ही यद्यपि पहले भी ईसाइयों से धार्मिक मुबाहसे होते रहे हैं परन्तु जो ईसाइयों ने अब गुस्ताख़ियां दिखाईं और सम्पूर्ण देश में शैतानी आवाज़ें सुनाईं और गधों पर सवार हुए और बहरूप बनाए, ऐसा उपहास उनकी ओर से कभी प्रकटन में नहीं आया और न इस उपहास का बदल जो ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट होने वाला है जो ख़ुदाई आवाज़ है कभी ऐसा प्रकट हुआ जैसा कि इसके बाद प्रकट होगा। सुनने वाले स्मरण रखें। ऐसा ही यद्यपि कुछ मुसलमान जो कपट स्वाभाव रखने वाले हैं पादरियों के साथ इस से पहले भी चापलूसी के साथ व्यवहार करते रहे हैं परन्तु जो अब मौलवियों और उनके अल्पबुद्धि चेलों ने इन पादरी दज्जालों की हां के साथ हां मिलाई और उन्हें विजय प्राप्त बताया और उनकी खुशी के साथ खुशी मनाई तथा धृष्टता और चालाकी से

सैकड़ों विज्ञापन लिखे और वलियों पर लानतें भेजीं और उन लानतों से ईसाइयों को खुश किया और ईसाइयों को विजयी ठहराया। इस का उदाहरण तेरह सौ वर्ष में किसी सदी में नहीं पाया जाता। तो यह उसी भविष्यवाणी का प्रकटन है कि जो हदीसों में आया है कि सत्तर हज़ार मुसलमान कहलाने वाले दज्जाल के साथ मिल जाएंगे अब काफ़िर ठहराने वाले उलेमा बताएं कि ये बातें पूरी हो गईं या नहीं अपितु ये दो निशानियां अर्थात् महदी होने के मुद्दई को बड़े ज़ोर शोर से काफ़िर और दज्जाल कहना तथा ईसाइयों का समर्थन करना और उन्हें विजय प्राप्त ठहराना अपने हाथ से मौलवियों ने इस प्रकार से पूर्ण कीं जिन का उदाहरण पहले युगों में नहीं पाया जाता। मूर्खता से पहले परस्पर मशवरा कर के सोच न लिया कि इस प्रकार तो हम दो निशानियों का स्वयं ही सबूत दे देंगे। जिस शोर और ज़ोर से इस ख़ाकसार को काफ़िर कहा गया है यदि पहले भी किसी महदी होने के मुद्दई को इस ज़ोर-शोर से काफ़िर कहा गया है और यह लानत और निन्दा की वर्षा और काफ़िर तथा दज्जाल कहना और धर्म का उन्मूलन करने वाला कहना और सम्पूर्ण देश के उलेमा का इस पर सहमत होना और समस्त देशों में उसे प्रसिद्धि देना पहले भी हुआ है तो इसका उदाहरण प्रस्तुत करें जो जूती के बराबर जूती का चरितार्थ हो अन्यथा महदी मौऊद की एक विशेष निशानी उन्होंने अपने हाथ से स्थापित कर दी और यदि पहले भी ऐसी सहमति उन्होंने ईसाइयों से की है और उन्हें विजयी ठहराया है तो उसका भी उदाहरण बताएं और यदि पहले भी किसी ऐसे व्यक्ति के समय में जो महदी होने का दावा करता हो चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण रमज़ान में इकट्ठे हो

गऐ हों तो उसका उदाहरण प्रस्तुत करें। और यदि पहले भी किसी महदी के लोगों तथा ईसाइयों का कुछ झगड़ा पड़ा हो और ईसाइयों ने अपनी विजय-प्राप्ति के लिए ऐसी शैतानी आवाज़ें निकाली हों तो इसका उदाहरण भी बता दें। हम हर चार उदाहरण प्रस्तुत करने वाले के लिए हज़ार रुपया नक़द इनाम निर्धारित करते हैं। हम इस रुपए के देने में कोई शर्त निर्धारित नहीं करते केवल इतना होगा कि दरख़्वास्त के बाद यह हज़ार रुपया मौलवी मुहम्मद हसन साहिब लुधियानवी के पास तीन सप्ताह के अन्दर जमा करा दिया जाएगा और मौलवी साहिब एक तिथि पर जो उनकी ओर से निर्धारित हो दोनों पक्षों को अपने मकान पर बुला कर तीन बार ऊंची आवाज़ से क़सम खाएंगे और कहेंगे कि मैं महा प्रतापी ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि ये घटनाएं जो प्रस्तुत की गईं, अद्वितीय नहीं हैं और जो कुछ उनके उदाहरण बताए गए हैं वे वास्तव में सही, दुरुस्त, विश्वसनीय और अटल हैं और ख़ुदा की क़सम इन निशानियों का चरितार्थ होने का मुद्दई वास्तव में काफ़िर है और मैं पूर्ण विवेक से कहता हूं कि अवश्य काफ़िर है और यदि मैं झूठ बोलता हूं तो मुझ पर वह अज़ाब और ख़ुदा का प्रकोप उतरे जो झूठों पर हुआ करता है और हम सामूहिक तौर पर आमीन कहेंगे और रुपए की वापसी की कोई शर्त नहीं और न अज़ाब के लिए कोई अवधि निर्धारित है। हमारे लिए यह पर्याप्त होगा कि या तो मौलवी साहिब ख़ुदा तआला से डरें और क़सम न खाएं और या समस्त काफ़िर कहने वालों के प्रमुख बन कर क़सम खा लें और उसके फल देखें। हम यहां समय के उलेमा की सेवा में सविनय निवेदन करते हैं कि वे कफ़िर कहने

तथा इन्कार करने में जल्दी न करें। क्या संभव नहीं कि जिसको वे झूठा कहते हैं असल में सच्चा वही हो, अत: जल्दी करके अकारण का मुंह काला क्यों कराते हैं। क्या किसी झूठे के लिए आकाशीय निशान प्रकट होते हैं या कभी ख़ुदा ने किसी झूठे को ऐसी लम्बी छूट दी कि वह बारह वर्ष से निरन्तर इल्हाम और ख़ुदा से वार्तालाप का दावा करके दिन-रात ख़ुदा तआला पर झूठ बांधता हो और ख़ुदा तआला उसे न पकड़े। भला यदि कोई उदाहरण है तो एक तो वर्णन करें अन्यथा शक्तिशाली प्रतिशोध लेने वाले ख़ुदा से डरें जिस का क्रोध इन्सान के क्रोध से कहीं बढ़कर है और इस बात पर प्रसन्न हों कि कुछ मामलों में मतभेद है और थोड़ा दिल में सोच लें कि यदि महदी मौऊद के समस्त मामलों में समय के उलेमा से सहमत होने वाला होता तो पहले से क्यों हदीसों में यह लिखा जाता कि उलेमा उसे काफ़िर कहेंगे और समझेंगे कि यह धर्म का उन्मूलन कर रहा है। इस से प्रकट है कि महदी को काफ़िर कहने के लिए अपने पास अपनी समझ के अनुसार कुछ कारण रखते होंगे जिन के आधार पर उसे काफ़िर और दज्जाल ठहराएंगे।

فاتقوا اللّٰہ یا اولی الابصار و السلام علٰی من خشی الرحمٰن
واتقٰی و اتّبع الحق و اھتدٰی

हमारा अंजाम क्या होगा

ख़ुदा के अतिरिक्त अंजाम कौन बता सकता है और उस अन्तर्यामी के अतिरिक्त अन्तिम दिनों की किसे खबर है। शत्रु कहता है कि अच्छा हो कि यह व्यक्ति अपमान के साथ मर जाए और

ईर्ष्यालु की अभिलाषा है कि उस पर कोई अज़ाब आए कि उसका कुछ भी शेष न रहे, परन्तु ये सब लोग अंधे हैं और क़रीब है कि इनके बुरे विचार और बुरे इरादे इन्ही पर पड़ें। इसमें सन्देह नहीं कि झूठ गढ़ने वाला शीघ्र तबाह हो जाता है और जो व्यक्ति कहे कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से हूं, हालांकि न वह ख़ुदा तआला की ओर से है और न उस के इल्हाम और कलाम से सम्मानित है वह बहुत ही बुरी मौत से मरता है और उसका अंजाम बहुत ही बुरा और इब्रत योग्य होता है परन्तु जो सच्चे और उसकी ओर से हैं वे मर कर भी जीवित हो जाया करते हैं क्योंकि ख़ुदा तआला की कृपा का हाथ उन पर होता है और सच्चाई की रूह उनके अन्दर होती है यदि वे आज़मायशों से कुचले जाएं और पीसे जाएं और धूल के साथ मिलाए जाएं और चारों ओर से उन पर लानत एवं कटाक्ष की वर्षाएं हों और उनके तबाह करने के लिए सारा संसार योजनाएं बनाए तब भी वे नहीं मरते, क्यों नहीं मरते? उस सच्चे पैवन्द की बरकत से जो उनको वास्तविक प्रियतम के साथ होता है। ख़ुदा उन पर सब से अधिक संकट उतारता है परन्तु इसलिए नहीं कि तबाह हो जाएं अपितु इस लिए ताकि अधिक से अधिक फल-फूल में उन्नति करें। प्रत्येक योग्य जौहर के लिए प्रकृति का यही नियम है कि सर्वप्रथम आघातों का अभ्यास होता है उदाहरणतया इस भूमि को देखो। जब किसान कई महीने तक अपनी खेती करता है और हल चलाने से उसका जिगर फाड़ता रहता है यहां तक कि वह भूमि जो पत्थर की भांति सख़्त और कठोर मालूम होती थी सुर्मे की भांति पिस जाती है और वायु उसे इधर-उधर उड़ाती है तथा परेशान करती रहती है और वह बहुत ही और कमज़ोर दुर्दशाग्रस्त और

टूटी हुई मालूम होती है और एक अनजान समझता है कि किसान ने अच्छी-भली भूमि को ख़राब कर दिया तथा बैठने और लेटने के योग्य न रही। परन्तु उस दक्ष किसान का कार्य व्यर्थ नहीं होता। वह भली भांति जानता है कि इस भूमि का श्रेष्ठतम जौहर इस श्रेणी मनस्ताप के अतिरिक्त प्रकट नहीं हो सकता। इसी प्रकार किसान उस भूमि में बहुत उत्तम प्रकार के दाने बीजारोपण के समय बिखेर देता है और वे दाने मिट्टी में मिल कर अपने रूप और हालत में लगभग-लगभग मिट्टी के हो जाते हैं और उनका वह रंग-व-रूप सब जाता रहता है परन्तु वह दक्ष किसान इसलिए उनको मिट्टी में नहीं फेंकता कि वे उसकी दृष्टि में तुच्छ हैं नहीं, बल्कि दाने उसकी दृष्टि में बहुत ही बहुमूल्य हैं। अपितु वह उनको मिट्टी में इसलिए फेंकता है ताकि एक-एक दाना हज़ार-हज़ार दानः होकर निकले और वे बढ़ें, फूलें, उनमें बरकत पैदा हो और ख़ुदा के बन्दों का लाभ पहुंचे तो इसी प्रकार वह वास्तविक किसान कभी अपने विशेष बन्दों को मिट्टी में फेंक देता है और लोग उनके ऊपर चलते हैं और पैरों के नीचे कुचलते हैं तथा हर प्रकार से उनका अपमान प्रकट होता है। तब थोड़े दिनों के बाद वे दाने सब्ज़े के रूप में होकर निकलते हैं और एक अद्भुत रंग एवं चमक के साथ प्रकट होते हैं कि एक देखने वाला आश्चर्य करता है। यही सदैव से ख़ुदा के चुने हुए लोगों के साथ अल्लाह का नियम है कि वे महाभंवर में डाले जाते हैं, किन्तु डुबोए जाने के लिए नहीं अपितु इसलिए ताकि उन मोतियों के वारिस हों कि जो एकेश्वरवाद के अधीन हैं और वे आग में डाले जाते हैं परन्तु इसलिए नहीं कि जलाए जाएं अपितु इसलिए ताकि ख़ुदा तआला की क़ुदरतें प्रकट हों और उन से ठट्ठा किया जाता है

और लानत की जाती है और वे हर प्रकार से सताए जाते और दु:ख दिए जाते और उन के बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियां बोली जाती हैं और कुधारणाएं बढ़ जाती हैं, यहां तक कि बहुत से लोगों की कल्पना और गुमान में भी नहीं होता कि वे सच्चे हैं अपितु जो व्यक्ति उन्हें दुख देता और लानतें भेजता है वह अपने हृदय में सोचता है कि बहुत ही पुण्य का कार्य कर रहा है एक अवधि तक ऐसा ही होता रहता है और यदि उस चुने हुए पर मनुष्य होने की दृष्टि से कुछ तंगी छा जाए तो ख़ुदा तआला उसको इन शब्दों से सांत्वना देता है कि सब्र कर जैसा कि पहलों ने सब्र किया और फ़रमाता है कि मैं तेरे साथ हूं, सुनता हूं और देखता हूं। तो वह सब्र करता रहता है यहां तक कि तब निर्धारित मामला निर्धारित अवधि तक पहुंच जाता है तब ख़ुदा का स्वाभिमान उस ग़रीब के लिए जोश मारता है और एक ही चमकार में शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देता है। तो प्रथम बारी शत्रुओं की होती है और अन्त में उसकी बारी आती है। इसी प्रकार कृपालु ख़ुदावन्द ने बहुत बार मुझे समझाया कि हंसी होगी, ठट्ठा होगा और लानतें करेंगे तथा बहुत सताएंगे परन्तु अन्तत: ख़ुदा की सहायता तेरे साथ होगी और ख़ुदा शत्रुओं को पराजित एवं लज्जित करेगा। अत: बराहीन अहमदिया में भी बहुत सा इल्हामों का भाग इन्हीं भविष्यवाणियों को बता रहा है और कश्फ़ भी यही बता रहे हैं। अत: मैंने एक कश्फ़ में देखा कि एक फ़रिश्ता मेरे सामने आया और वह कहता है कि लोग फिरते जाते हैं। तब मैंने उसको कहा कि तुम कहां से आए तो उसने अरबी भाषा में उत्तर दिया और कहा جئت من حضرة الوتر अर्थात् मैं उसकी ओर से आया हूं जो अकेला है। तब मैं उसको एक ओर एकान्त में ले गया

और मैंने कहा कि लोग फिरते जाते हैं परन्तु क्या तुम भी फिर गए तो उसने कहा कि हम तो तुम्हारे साथ हैं। तब मैं उस हालत से परिवर्तित हो गया परन्तु ये सब बातें दरमियान की हैं और जो बात के अन्त पर आयोजित हो चुका है वह यही है कि बार-बार के इल्हामों और कश्फ़ों से जो हमारों तक पहुंच गए हैं और सूर्य के समान प्रकाशमान हैं ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि मैं अन्ततः तुझे विजय दूंगा और प्रत्येक आरोप से तेरा बरी होना प्रकट करूंगा और तुझे विजय होगी। तेरी जमाअत क़यामत तक अपने विरोधियों पर विजयी रहेगी और फ़रमाया कि मैं शक्तिशाली आक्रमणों से तेरी सच्चाई प्रकट करूंगा और स्मरण रहे कि ये इल्हाम इसलिए नहीं लिखे गए कि अभी कोई इन्हें स्वीकार कर ले अपितु इसलिए कि प्रत्येक चीज़ के लिए एक मौसम और समय है, तो जब इन इल्हामों के प्रकट होने का समय आएगा तो उस समय यह लेख तैयार हृदयों के लिए प्रायः ईमान, सांत्वना तथा विश्वास का कारण होगा। والسلام علیٰ من اتبع الھدٰی

अन्वारुल इस्लाम का परिशिष्ट

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लाम के बारे में संक्षिप्त वर्णन

अमृतसर के मुबाहसः में जो ईसाइयों के साथ हुआ था। उसमें हमने जो भविष्यवाणी की थी उस के दो भाग थे -

(1) प्रथम यह कि विरोधी पक्ष जो सच पर नहीं हावियः में गिरेगा और उसे अपमान पहुंचेगा।

(2) दूसरा यह कि यदि सच की ओर रुजू करेगा तो अपमान और हावियः से बच जाएगा।

अब हम विरोधी पक्ष की उस जमाअत का हाल पीछे से वर्णन करेंगे जिन्होंने स्वयं बहस नहीं अपितु सहयोगी या समर्थक या प्रमुख होने की हैसियत से उस पक्ष में सम्मिलित थे। पहले हम संक्षिप्त शब्दों में मिस्टर अब्दुल्लाह आथम का हाल वर्णन करते हैं जो विरोधी पक्ष से विशेष तौर पर मुबाहसः के लिए इस पक्ष के लिए प्रस्तावित किए गए थे इनके बारे में इल्हामी वाक्य अर्थात् हावियः के शब्द की व्याख्या हमने यह की थी कि इस से अभिप्राय मृत्यु है बशर्ते कि वह सच की ओर रुजू न करें। अब हमें ख़ुदा तआला ने अपने विशेष इल्हाम से जतला दिया कि इन्होंने इस्लाम की श्रेष्ठता का भय, दुख और ग़म अपने दिल में डाल कर एक सीमा तक सत्य की ओर रुजू किया जिस से मौत के वादे में विलम्ब हुआ क्योंकि ज़रूरी था कि ख़ुदा तआला अपने दिल में ध्यान रखता और वही कृपालु और दयालु ख़ुदा है जिसने अपनी पवित्र किताब में फ़रमाया है कि-

مَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرًا يَّرَهٗ (अज़्ज़लज़ाल-8)

अर्थात् जो व्यक्ति एक कण भर भी नेक कार्य करे वह भी व्यर्थ नहीं होगा और इसका प्रतिफल अवश्य पाएगा तो मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने इल्हामी शर्त के अनुसार कुछ इस्लामी सच्चाई की ओर झुकने से अपना प्रतिफल पा लिया। हां जब फिर से धृष्टता, गाली और गुस्ताखी की ओर झुकेगा तो वह वादा अपना कार्य अवश्य करेगा। हमारे इस वादे का सबूत यदि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने अपनी भयावह हालत, भ्रम और उद्विग्नता तथा शहर-शहर भागते फिरने से स्वयं दिखा दिया, परन्तु हम अपनी विजय-प्राप्ति का अटल फैसला करने के लिए और सब दुनिया को दिखाने के लिए कि हमें स्पष्ट विजय कैसे प्राप्त हुई। फैसले का यह आसान और सरल उपाय प्रस्तुत करते हैं कि यदि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के नज़दीक हमारा यह वर्णन झूठ, असत्य और इफ़्तिरा है तो वह मर्दे मैदान बन कर इस विज्ञापन के प्रकाशित होने से एक★ सप्ताह तक हमारे निम्नलिखित प्रस्ताव को स्वीकार करके हमें सूचना दें। और प्रस्ताव यह है कि यदि इस पन्द्रह महीने की अवधि में कभी उनको इस्लाम की सच्चाई के विचार ने हृदय पर डराने वाला प्रभाव नहीं किया और न इल्हाम की श्रेष्ठता और सच्चाई ने ग़म के भंवर में डाला और न ख़ुदा तआला के सामने इन्होंने इस्लामी तौहीद (एकेश्वरवाद) को ग्रहण किया और न

★**नोट -** एक सप्ताह की अवधि कम नहीं बल्कि बहुत है क्योंकि अमृतसर से क़ादियान में दूसरे दिन पत्र पहुंच जाता है और हर बार इतनी अवधि देना हित के विरुद्ध है क्योंकि जो सदस्य वास्तव में पराजित है वह इन्हीं कुछ दिनों में ही सरल स्वभाव लोगों को धोखा देकर हज़ारों को आश्चर्य के भंवर में डाल सकता है परन्तु समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए अवधि दी गई है।

इन को इस्लामी भविष्यवाणी से हृदय में थोड़ा सा भी भय आया और न तस्लीस की आस्था से वह एक कण भर डगमगाए तो वह दोनों पक्षों की जमाअत के सामने इन्हीं बातों का तीन बार इन्कार करें कि मैंने ऐसा कदापि नहीं किया और इस्लाम की श्रेष्ठता ने एक पल के लिए भी दिल को नहीं पकड़ा और मैं मसीह की इब्नियत और ख़ुदाई का ज़ोर से क़ायल रहा और क़ायल हूं तथा इस्लाम का शत्रु हूं और यदि मैं झूठ बोलता हूं तो मुझ पर एक ही वर्ष के अन्दर अपमान की वह मृत्यु और तबाही आए जिस से ख़ुदा की प्रजा पर यह बात खुल जाए कि मैंने सच को छुपाया। जब मिस्टर आथम यह इक़रार करें तो हर बार के इक़रार में हमारी जमाअत आमीन कहेगी। तब उस समय एक हज़ार रुपए का कानूनी दस्तावेज़ लेकर उनको दिया जाएगा और वह दस्तावेज़ डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और पादरी इमामुद्दीन की ओर से बतौर ज़मानत के होगा जिसका लेख यह होगा कि यह हज़ार रुपया बतौर अमानत मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के पास रखा गया और यदि वह अपने इक़रार के अनुसार एक वर्ष के अन्दर मृत्यु पा गए तो इस रुपए को हम दोनों ज़मानत देने वाले अविलम्ब वापस कर देंगे और वापस करने में कोई बहाना और उज्र नहीं होगा।

यदि वह अंग्रेज़ी महीनों की दृष्टि से एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त न हुए तो यह रुपया इनका स्वामित्त्व हो जाएगा और इनकी विजय प्राप्ति की एक निशानी होगी और यदि हमारा रजिस्ट्री किया हुआ विज्ञापन पाकर जो उनके नाम और डॉक्टर मार्टिन क्लार्क साहिब के नाम होगा। वुसूली की तिथि से एक सप्ताह तक उन्होंने

मुक़ाबले के लिए निवेदन न किया तो समझा जाएगा कि इस्लाम की विजय पर इन्होंने मुहर लगा दी और हमारे इल्हाम की पुष्टि कर ली। यह फ़ैसला है जो ख़ुदा तआला अपने सच्चे बन्दों की सच्चाई प्रकट करने के लिए करेगा और झूठ के षड्यंत्र को मिटा देगा और झूठ के पुतले को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और इस इक़रार के लिए हम मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को यह कष्ट नहीं देते हैं कि वह अमृतसर में हमारे मकान पर आएं। अपितु हम उनके बुलाने के बाद हज़ार रुपए के साथ उनके मकान पर आएंगे और उनके बुलाने की तिथि से हमें अधिकार होगा कि तीन सप्ताह तक किस तिथि में रुपया लेकर उन के पास अपनी जमाअत सहित उपस्थित हो जाएं और उन पर आवश्यक होगा कि हमारे बुलाने के लिए रजिस्ट्री द्वारा पत्र भेजें हम फिर सूचना पा कर तीन सप्ताह के अन्दर हज़ार रुपए सहित उपस्थित न हों तो निस्सन्देह वादे के विरुद्ध करने वाले और झूठे ठहरें और हम स्वयं उनके मकान पर आएंगे और उनको किसी पदार्पण का कष्ट न देंगे। हम उनको इतना भी कष्ट नहीं देंगे कि इस इक़रार के लिए खड़े हो जाएं या बैठ जाएं अपितु वह खुशी के साथ अनपे बिस्तर पर ही लेटे रहें और वह तीन बार इक़रार कर दें जो लिख दिया गया है और हम दर्शकों को दोबारा स्मरण कराते हैं कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में हमारी भविष्यवाणी के दो पहलू थे, अर्थात् या तो उनकी मौत और उनका सच की ओर रुजू (लौटना) करना। और रुजू करना दिल का कार्य है जिसे लोग नहीं जानते और ख़ुदा तआला जानता है और लोगों के जानने के लिए यह फ़ैसला है जो हमने कर दिया। और ख़ुदा तआला की दूरदर्शिता

और हित ने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब को इस बात की ओर प्रेरणा न दी कि वह इस बीच गाली-गलौज और अपशब्दों को चरमोत्कर्ष तक पहुंचा कर अपने लिए मृत्यु के सामान एकत्र करते अपितु उनके हृदय में इस्लाम का भय डाल दिया ताकि वे उस शर्त से लाभ उठा लें जो रुजू करने वालों के लिए इल्हामी शब्दों में लिखी गई थी और ख़ुदा चाहता था कि ईसाइयों का कुछ समय तक झूठी प्रसन्नता पहुंचाए और फिर वह फ़ैसला करे जिससे वास्तव में अंधे आखें पाएंगे और बहरों के कान खुलेंगे और मुर्दे जीवित होंगे। कंजूस और ईर्ष्यालु समझेंगे कि उन्होंने कैसी ग़लती की। अमृतसर के ईसाई अपने विज्ञापन में लिखते हैं कि ख़ुदावन्द मसीह ने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को बचा लिया। तो अब यदि वे स्वयं को सच्चा समझते हैं तो उन पर अनिवार्य है कि मुकाबले से हिम्मत न हारें। क्योंकि यदि वह बनावटी ख़ुदा वास्तव में उनका बचाने वाला ही है तो अवश्य इस अन्तिम फ़ैसले पर बचा लेगा। क्योंकि यदि मौत आ गई तो सब ईसाइयों का मुंह काला है। चाहिए कि अपने इस बनावटी ख़ुदावन्द पर भरोसा करके अपनी पीठ न दिखाएं। परन्तु स्मरण रखें कि उनकी विजय कदापि नहीं होगी। जो व्यक्ति स्वयं मृत्यु-प्राप्त हो गया है वह दूसरे को मृत्यु से कैसे रोक सकता है। रोकने वाला एक है जो जीवित रहने वाला और स्थापित रहने वाला है जिसके हम उपासक हैं। यह तो हम ने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम का हाल वर्णन किया जो विरोधी पक्ष से बहस के लिए चुने गए थे किन्तु यहां प्रश्न यह है कि विरोधी पक्ष में से जो लोग बतौर सहयोगी या समर्थक या प्रमुख थे उनका क्या हाल हुआ। उन्होंने

भी कुछ हाविय: का स्वाद चखा है या नहीं तो उत्तर यह है कि अवश्य चखा और अवधि के अन्दर प्रत्येक ने पूर्ण तौर पर चखा। अत: पादरी रायट साहिब जो बतौर प्रमुख थे निर्धारित अवधि के अन्दर बिल्कुल जवानी में इस संसार से कूच कर गए और मिस्टर अब्दुल्लाह आथम अपने संकट में रहे। संभवत: वह उनके जनाज़े पर भी उपस्थित नहीं हो सके। डॉक्टर मार्टिन क्लार्क के हृदय को उनकी असमय मृत्यु का ऐसा आघात पहुंचा कि बस ज़ख़्मी कर दिया और विरोधी पक्ष के गिरोह में से बतौर सहयोगियों के थे। उनमें से एक पादरी टॉम्स होविल था जिस ने बार-बार अक्षरांतरित पुस्तकों को पढ़ कर अपना हलक़ फाड़ा और लोगों का दिमाग़ खाया। वह मुबाहस: के वाद ही ऐसा पकड़ा गया और ऐसी भयानक बीमारी में ग्रस्त हुआ कि मर-मर के बचा और एक सहयोगी अब्दुल्लाह पादरी था जो चुपके-चुपके पवित्र क़ुर्आन की आयतें दिखाता और इब्रानी के टूटे फूटे अक्षर पढ़ता था उसे भी निर्धारित अवधि के अन्दर भयानक बीमारी ने मौत तक पहुंचाया और मालूम नहीं बचा या गुज़र गया। शेष रहा पादरी इमादुद्दीन उसके गले में हज़ार लानत के अपमान का लम्बा रस्सा पड़ा जो 'नूरुलहक़' के उत्तर से असमर्थ होने से उसे और उसके समस्त भाइयों को प्राप्त हुआ। अब बताइए इस सम्पूर्ण पक्ष में से हाविय: से कौन बचा। किसी एक का तो निशान दें हमारे ये सबूत हैं जो हम ने लिख दिए। अन्त में यह भी लिखते हैं कि यदि अब भी कोई विरोधी मौलवी जो अपने दुर्भाग्य से ईसाई धर्म का सहायक है या कोई ईसाई अथवा हिन्दू या आर्य या केशधारी सिक्ख हमारी स्पष्ट विजय का क़ाइल न हो तो

उसके लिए उपाय यह है कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम प्रथम कथित क़सम के खाने पर तैयार करे और उनको हज़ार रुपया नक़द दिला दे जिस के देने में हम उनको शपथ के बाद एक मिनट के विलम्ब का भी वादा नहीं करते और यदि ऐसा न करे और केवल लोफरों और बाज़ारी बदमाशों की तरह हंसी ठट्ठा करता फिरे तो समझा जाएगा कि वह सुशील नहीं है अपितु उसकी प्रकृति में विकार है। तो यदि इस जांच-पड़ताल की बजाए झुठलाए तो वह झूठा है और झूठों पर ख़ुदा की लानत का चरितार्थ। और यदि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के पास जाने के लिए उसको कुछ दूरी तय करना पड़ती है तो हम वादा करते हैं कि हम अपने खर्च से उसके लिए यक्का या टट्टू या डोली जो कुछ चाहे उपलब्ध कर देंगे और यदि वह हिन्दू है या केशधारी सिक्ख या कोई ग़ैर धर्म वाला है तो उसकी ख़ुराक के लिए भी हम नक़द दे देंगे। यह बहुत ही सफाई का फ़ैसला है और किसी कुलीन का काम नहीं जो इस फ़ैसले को ध्यान में रखे बिना हमें झूठा और हारा हुआ बताए या बाज़ार में हंसी ठट्ठा करता फिरे तथा बग़लें बजाता फिरे। हां जो लोग अवैध प्रकार का स्वभाव रखते हैं वे अवैध इल्ज़ामों को बांधकर अकारण इस्लाम के शत्रु बन जाते हैं। परन्तु स्मरण रखें कि इस्लाम का ख़ुदा सच्चा ख़ुदा है जो न किसी स्त्री के पेट से निकला और न कभी भूखा और प्यासा हुआ वह उन सब इल्ज़ामों से पवित्र है जो उसके बारे में कोई सोचे कि एक अवधि तक उसकी ख़ुदाई का प्रबन्ध सही न था और मुक्ति देने का कोई मार्ग और उपाय उसे नहीं मिलता था यह तो लम्बे समय के बाद जैसे समस्त आयु व्यतीत करके सूझा

कि मरयम से अपना बेटा पैदा करे और मरयम के जन्म से पहले यह कफ़्फ़ारे का उपाय उसके विचार में नहीं गुज़रा और न पूर्ण ख़ुदा के बारे में हम यह कह सकते हैं कि वह केवल नाम ही का परमेश्वर है अन्यथा सब कुछ जीव और प्रकृति इत्यादि अनादिकाल से स्वयंभू हैं नहीं अपितु वह सर्वशक्तिमान और कुल का स्रष्टा है।

और यदि कोई प्रश्न करे कि इसमें क्या राज़ है कि भविष्यवाणी के दो पहलुओं में से मौत के पहलू की ओर ख़ुदा तआला ने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के लिए मुख न किया और दूसरा पहलू ले लिया। तो इसका उत्तर यह है कि मौत का पहलू ज़ख़्मी और बहुत अधिक आरोपों का हो गया था। कोई कहता था कि मरना क्या नई बात है एक डॉक्टर साहिब पहले मौत का फ़त्वा दे चुके हैं कि छः महीने तक मर जाएगा और कोई कहता था कि बूढ़ा है, कोई कहता था कमज़ोर है मौत क्या आश्चर्य है। कोई कहता था कि जादू से मार देंगे। यह आदमी बड़ा जादूगर है। तो दूरदर्शी और सर्वज्ञ ख़ुदा ने देखा कि ऐतराज़ करने वालों ने इस पहलू को बहुत कमज़ोर और संदिग्ध कर दिया है और विचारों पर से इस का प्रभाव दूर कर दिया है। इसलिए दूसरा पहलू ग्रहण किया और इस पहलू से जादू का गुमान करने वाले भी लज्जित होंगे क्योंकि हृदयों को सच्चाई की ओर फेरना जादूगरों का काम नहीं अपितु ख़ुदा और उसके नबियों तथा रसूलों का काम है। अतः इस समय तक ख़ुदा तआला ने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम की मौत को इन कारणों से टाल दिया और मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के हृदय पर इस्लाम की श्रेष्ठता का रोब डाल कर उसे दूसरे पहलू से हिस्सा दे दिया। परन्तु अब ईसाइयों की रायें

परिवर्तित हो गईं और भूला-बिसरा ख़ुदावन्द मसीह कहीं से निकल आया। यह उन जीभों पर जारी हो गया कि ख़ुदावन्द मसीह बड़ा ही सामर्थ्यवान ख़ुदा है जिसने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम को बचा लिया। इसलिए अवश्य हुआ कि ख़ुदा तआला उस बनावटी ख़ुदा की वास्तविकता दुनिया पर प्रकट करे कि क्या यह असहाय इन्सान जिसका नाम हमारा रब्ब मसीह रखा गया किसको मौत से बचा सकता है। अतएव अब मौत के पहलू का समय आ गया। अब हम देखेंगे कि ईसाइयों का ख़ुदा कहां तक शक्ति रखता है और कहां तक इस बनावटी ख़ुदा पर इन लोगों का भरोसा है। अब हम इस निबंध को समाप्त करते हैं और उत्तर के प्रतीक्षक हैं।

والسلام علی من اتبع الهدی

विज्ञापनदाता - ख़ाकसार मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद
क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर
9 सितम्बर 1894 ई०

फ़त्ह इस्लाम फ़त्ह इस्लाम फ़त्ह इस्लाम

दो हज़ार रुपए के इनाम का दोबारा विज्ञापन

यह दो हज़ार रुपया डिप्टी अब्दुल्लाह आथम साहिब की क़सम पर अविलम्ब उनके सुपुर्द किया जाएगा।

(दो हज़ार का विज्ञापन) (दो हज़ार का विज्ञापन)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहक़्क़ मअ आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि-वसल्लम

हमने 9 सितम्बर 1894 ई० के विज्ञापन में लिखा था कि आथम साहिब ने भविष्यवाणी के दिनों में सच्चाई की ओर अवश्य रुजू कर लिया और इस्लाम की श्रेष्ठता का प्रभाव अपने हृदय पर डाल लिया। यदि यह सच नहीं तो वह नक़द एक हज़ार रुपया लें और क़सम खा लें कि उन्होंने इस भय के समय में रुजू नहीं किया। अत: इस वास्तविकता को पब्लिक पर प्रकट करने के लिए तीन रजिस्ट्री किए हुए पत्र आथम साहिब★ और डॉक्टर मार्टिन क्लार्क

★हाशिया :- मिस्टर अब्दुल्लाह आथम की ओर पत्र - मिस्टर आथम साहिब आप को ज्ञात है कि कितने झूठे बेईमान नाम के मुसलमान या मौलवी या ईसाइयों ने यह ग़लत खबर उड़ा दी है कि आप ने इसके बावजूद कि ख़ुदा के सच्चे और पवित्र धर्म इस्लाम की ओर कुछ भी रुजू नहीं किया फिर भी मौत के वादे से बच गए और ईसाई विजयी रहे और भविष्यवाणी झूठी निकली और महा तेजस्वी ख़ुदा जिसकी बड़ाई और धाक से पृथ्वी और आकाश कांपते हैं उसने मुझे ख़बर दी है कि आप ने भय के दिनों में अत्यन्त रंज व ग़म की हालत में गुप्त तौर पर इस्लाम

पादरी इमामुद्दीन साहिब की सेवा में भेजे गए। कल डॉक्टर मार्टिन क्लार्क की ओर से वकील के तौर पर इन्कारी पत्र आया जिस से स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो गया कि आथम साहिब किसी प्रकार से क़सम खाना नहीं चाहते और इसके बावजूद कि 10 सितम्बर 1894 ई० से एक सप्ताह का समय दिया गया था परन्तु वह समय भी गुज़र गया किन्तु एक इन्कारी पत्र के अतिरिक्त अन्य कोई पत्र

शेष हाशिया -की ओर रुजू कर लिया अर्थात् इस्लामी श्रेष्ठता को आप ने दिल में बिठा लिया जिसे आप गुप्त रखते हैं। इसलिए उसने जो अन्तर्यामी है और इन्सान के गहरे और छुपे हुए विचारों को देखने वाला है अपने वादे और शर्त के अनुसार उस अज़ाब से आपको बचा लिया जो इस स्थिति में आप पर उतरता जबकि आप इस शर्त के अनुसार अपना कुछ भी सुधार न करते और न इस्लामी श्रेष्ठता से हताश होते और यदि नऊज़ुबिल्लाह यह ख़ुदा का इल्हाम आप के नज़दीक सही नहीं है तो मैं आप को उस पवित्र अस्तित्त्व की क़सम देता हूं जिसने आप को पैदा किया और जिसकी ओर आप को जाना है कि सार्वजनिक जल्से में तीन बार क़सम खा कर मेरे सामने इस को झुठलाएं और साफ़ कह दें कि यह इल्हाम झूठा है और यदि सच्चा है और मैंने ही झूठ बोला है तो हे सामर्थ्यवान और स्वाभिमान ख़ुदा मुझे कठोर अज़ाब में ग्रस्त कर और उसी में मुझे मृत्यु दे। तब मैं अपने कुछ विनम्र निष्कपट लोगों सहित जो लानतों का लक्ष्य हो रहे हैं आमीन कहूंगा और अर्श के रब्ब से चाहूंगा कि मेरा और आप का अन्तिम फैसला कर दे। मैंने जो कुछ इल्हाम सुनाया है ख़ुदा तआला और मेरे तथा आप के हृदय के अतिरिक्त अन्य किसी को ख़बर नहीं। तो मैं उसी मालिक की आपको क़सम देता हूं कि यदि आप मेरे इल्हाम के झुठलाने वाले हैं तो मेरे सामने कथित इक़रार करके आकाशीय फैसले का दरवाज़ा खोल दें। हम सताए गए और दु:ख दिए गए और हम पर लानतें हुईं और हम झूठे समझे गए इसलिए विवश होकर मैं तीसरी बार आप को क़सम देता हूं कि आप को उस सामर्थ्यवान और शक्तिशाली ख़ुदा की क़सम है जिसके प्रताप से फ़रिश्ते

नहीं आया। तो क्या अब भी यह सिद्ध नहीं हुआ है कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब ने सच्चाई की ओर रुजू कर लिया था परन्तु अब भी कुछ पक्षपाती मन्दबुद्धि लोग सन्देह रखते हैं **तो अब हम यह दूसरा विज्ञापन दो हज़ार रुपए के इनाम की शर्त के साथ निकालते हैं।** यदि आथम साहिब सार्वजनिक जल्से में तीन बार क़सम खा कर कह दें कि मैंने भविष्यवाणी की अवधि के अन्दर इस्लामी श्रेष्ठता को अपने हृदय में स्थान नहीं दिया और निरन्तर इस्लाम का शत्रु रहा और हज़रत ईसा की इब्नियत (बेटा

शेष हाशिया -भी कापंते हैं कि आप सार्वजनिक जल्से में मेरे सामने उस प्रकार की क़सम खाकर जिसे मैं विज्ञापन में बता चुका हूं मुझ से फ़ैसला करो ताकि झूठा मरे और तबाह हो जाए और यदि ऐसा न करो तो आप ने मेरी सच्चाई पर मुहर लगा दी और उन उपद्रवी मुसलमानों और ईसाइयों का झूठा और मुंह काला होना सिद्ध कर दिया जो गधे की तरह ज़ोर-ज़ोर से चीखें मार कर कह रहे हैं ईसाइयों की विजय हुई। अब दुआ पर समाप्त करता हूं। हे जीवित और स्थापित रहने वाले ख़ुदा सच्चाई को प्रकट कर और अपने वादे के अनुसार झूठों को कुचल दे।

नोट - इल्हामी भविष्यवाणी न केवल आथम साहिब के संबंध में थी अपितु उस सम्पूर्ण विरोधी पक्ष के संबंध में थी जो इस जंगे मुक़द्दस के लिए अपने अपने तौर पर सेवाओं पर नियुक्त थे। आथम साहिब के हाथ में तो वह अधम और टूटी तलवार पकड़ाई गई थी जो सच्चाई का एक बाल भी नहीं काट सकती थी और शेष पक्ष में से कोई बतौर सहयोगी और कोई जंग का परामर्शदाता तथा कोई प्रमुख था। तो अन्ततः इस जंग का परिणाम यह हुआ कि कोई उनमें से पन्द्रह महीने के अन्दर मारा गया, कोई ज़ख़्मी हुआ और कोई लानत की हज़ार कड़ी वाली जंजीर में गिरफ्तार होकर हमेशा के अपमान के कारावास में डाला गया और आथम साहिब भय के मारे भाग गए और इस्लामी श्रेष्ठता के झण्डे के नीचे शरण ली। इसी से

होना) और ख़ुदाई तथा कफ़्फ़ार: पर सुदृढ़ ईमान रखा तो उसी समय दो हज़ार रुपया नक़द उनको 9 सितम्बर 1894 ई० के विज्ञापन में दी गई शर्तों के अनुसार अविलम्ब दिया जाएगा। और यदि हम क़सम के बाद दो हज़ार रुपया देने में एक मिनट का भी विलम्ब करें तो वे समस्त लानतें जो मूर्ख विरोधी कर रहे हैं हम पर पड़ेंगी और हम निस्सन्देह झूठे ठहरेंगे और बिल्कुल इस योग्य ठहरेंगे कि हमें मृत्यु-दण्ड दिया जाए और हमारी पुस्तकें जला दी जाएं और हमारे नाम मलऊन इत्यादि रखे जाएं और यदि आथम साहिब अब भी इतने अधिक इनाम के बावजूद क़सम खाने से मुंह फेर लें तो समस्त दोस्त-दुश्मन स्मरण रखें कि उन्होंने केवल ईसाइयों से डर कर सच्चाई को छुपाया है तथा इस्लाम विजयी और सच्चाई विजय प्राप्त है। पहले तो उनके सच्चाई की ओर लौटने का केवल एक गवाह था अर्थात् उनका वह भयग्रस्त रूप जिसमें उन्होंने पन्द्रह महीने गुज़ारे और **दूसरा गवाह** यह खड़ा हुआ कि उन्होंने हज़ार रुपया नक़द मिलने के बावजूद क़सम खाने से इन्कार किया है। **अब तीसरा गवाह** यह दो हज़ार रुपए का विज्ञापन है। यदि अब भी क़सम खाने से इन्कार करें तो रुजू सिद्ध। क्या कोई सच्चा मौत से डर कर इन्कार कर सकता है, क्या प्रत्येक प्राण ख़ुदा तआला के हाथ में नहीं जबकि ईसाइयों का कहना है कि उनके प्राण मसीह ने बचाए और हम कहते हैं नहीं, कदापि नहीं अपितु इस्लामी श्रेष्ठता को अपने हृदय में स्थान देने से इल्हामी शर्त के अनुसार प्राण बच गए। तो अब इस झगड़े का फैसला उनकी क़सम के अतिरिक्त और कैसे हो। यदि यही बात सच्ची है कि केवल मसीह ने उन पर

कृपा की तो अब इस मैदान की लड़ाई में जिसके साथ कोई भी शर्त नहीं मसीह अवश्य उन पर कृपा (फ़ज़्ल) करेगा और यदि यह बात सच्ची है कि उन्होंने वास्तव में भय के दिनों में अपने हृदय में इस्लाम की ओर रुजू कर लिया था तो अब क़सम खाने से इन्कार के बाद अवश्य वादा ख़िलाफ़ी और बिना किसी शर्त के अपवाद उन पर मृत्यु आएगी। अतः यह फ़ैसला तो अत्यन्त अवश्य है। इस से वह कहां और कैसे बच सकते हैं!★ और यदि अब भी इन दो हज़ार रुपए नक़द **बिना कष्ट बिना धुएं के अग्नि पर पके हुए हल्वे की तरह उन को मिलता है क़सम खाने से इन्कार करें तो समस्त संसार गवाह रहे कि हमें पूर्ण विजय हुई** और ईसाई स्पष्ट तौर पर पराजित हो गए और हमारा तो यह अधिकार था कि

★**नोट -** मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ने मुबाहसः की शर्तें तय होने के दिनों में अपने एक लिखित वचन से जो हमारे पास मौजूद है हमें सूचना दी थी कि वह किसी निशान के देखने से अपनी आस्थाओं का अवश्य सुधार कर लेंगे अर्थात् इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेंगे। तो यह पत्र भी उनकी आन्तरिक दशा का एक गवाह है कि वह सच्चाई के स्वीकार करने के लिए पहले ही से तैयार थे। फिर जब यह इल्हाम अपने रोब से मेरे निबंध में उन्हीं के बारे में हुआ तथा उन्हीं पर पड़ा और इल्हाम भी मौत का इल्हाम जो स्वाभाविक तौर पर प्रत्येक पर भारी पड़ता है और प्रत्येक अपने कुछ दिनों के जीवन को प्रिय रखता है और यह अपने इस्लाम लाने का वादा उन्होंने उस समय किया था कि जब उन्हें इस बात का विचार भी नहीं था कि वह मांगा हुआ निशान उन्हीं की मौत के बारे में होगा बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करें और वह इल्हाम अत्यन्त धूम धाम और बल देकर ऐसे ज़बरदस्त शब्दों में सुनाया गया था जिस से बढ़कर संभव नहीं तो क्या यह बहुत अधिक अनुमान के निकट नहीं कि ऐसे तैयार और लज्जा-योग्य हृदय पर इस ज़ोरदार

पहली बार के विज्ञापन को ही पर्याप्त समझते। क्योंकि जब हज़ार रुपया नक़द देने से वह क़सम न खा सके तो उन पर स्पष्ट तौर पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा हो गया। परन्तु हमने अत्यन्त मोटी बुद्धि के लोगों और ईर्ष्यालुओं तथा पक्षपातियों की हालत पर दया करके पुनः यह दो हज़ार रुपए का विज्ञापन **तीसरे गवाह** के तौर पर अपनी सच्चाई के लिए जारी किया है। हमारे काफ़िर कहने वाले मौलवी जो ईसाइयों की विजय को दिल-व-जान से चाहते हैं सब मिलकर उनको समझाएं कि क़सम अवश्य खाएं और उनका भी सम्मान रख लें और अपना भी। और अन्तिम फैसला तो यह है जो क़सम खाने या इन्कार करने से हो न वह यकतरफ़ा इल्हाम जिसके साथ सच्चाई की ओर रुजू करने की स्पष्ट शर्त लगी हुई थी तथा

वर्णन ने बहुत बुरा प्रभाव किया होगा और उन्होंने ऐसे डराने वाले इल्हाम को सुन कर अवश्य प्रभावित होकर अन्दर ही अन्दर अपना सुधार किया होगा। जैसे उनकी दूसरी व्याकुलतापूर्ण परिस्थितियां भी इस पर गवाह हैं। फिर इस पत्र से इस बात का सबूत मिलता है कि वह तस्लीस, मसीह के ख़ून और कफ़्फ़ारे पर सन्तुष्ट नहीं थे क्योंकि एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी आस्थाओं पर सच्चे दिल से सन्तुष्ट हो वह जीभ पर यह बात कदापि नहीं ला सकता कि कुछ निशान देखने से इन आस्थाओं को छोड़ दूंगा। उनके हाथ का लिखा हुआ असल पत्र हमारे पास मौजूद है जो सज्जन सन्देह रखते हैं देख लें। इसी से

कठिनाई का हल - कुछ विरोधी मौलवी साहिबों ने ऐतराज़ किया है कि यह एक अपशब्दों वाली क़सम है कि विरोधी मौलवियों और अनुकरणकर्ताओं को इस प्रकार तथा इस शर्त से अकुलीन और वर्णसंकर ठहराया है कि न तो वे इस सच्चाई के विरुद्ध बात से मुंह बन्द करें कि इस्लाम और ईसाइयत की बहस में ईसाइयों की विजय हुई और न मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब को क़सम खाने पर तैयार

जिस शर्त पर कार्रवाई का सबूत आथम साहिब ने अपनी भयावह हालत दिखाने से स्वयं ही दे दिया, अपितु नूर अफ़्शां 14 सितम्बर 1894 ई०, पृष्ट-12 कालम-1 की पहली ही पंक्ति में उनका यह बयान लिखा है कि मेरा विचार था कि शायद मैं मारा भी जाऊंगा। इसी कालम में यह भी लिखा है कि ये बातें कह कर रो दिया और रोने से जतला दिया कि मैं बड़े दु:ख में रहा। अत: उन का रोना भी एक गवाही है कि उन पर इस्लामी भविष्यवाणी का बहुत अधिक प्रभाव रहा। अन्यथा यदि मुझे काफ़िर जानते थे तो ऐसा क्या संकट पड़ा था जिसे याद करके अब तक रोना आता है। फिर अब सब से बढ़कर गवाह यह है कि उन्होंने हज़ार रुपया लेकर क़सम खाना स्वीकार नहीं किया और न जिस मनुष्य को पन्द्रह महीने के निरन्तर

करें। और ऐतराज़ का कारण यह वर्णन किया गया है कि आथम साहिब पर हमारा कुछ ज़ोर और आदेश तो नहीं ताकि अकारण क़सम खाने पर उनको तैयार करें। तो इसका उत्तर यही है कि हे बेईमानो और दिल के अंधो तथा इस्लाम के शत्रुओ यदि आथम साहिब क़सम खाने से बच रहे हैं तो इस से क्या यह परिणाम कि वास्तव में आथम साहिब ने दिल में इस्लाम की ओर रुजू कर लिया है तभी तो वह झूठी क़सम खाने से बचते हैं जबकि तुम आधे ईसाई होकर दिल-व-जान से ज़ोर लगा रहे हो कि आथम साहिब किसी प्रकार से इक़रार कर दें कि मैं वास्तव में भविष्यवाणी की निर्धारित अवधि के दिनों में अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शत्रु रहा और असहाय इन्सान को ख़ुदा जानता रहा तो फिर यदि आथम साहिब वास्तव में पक्के ईसाई और इस्लाम के शत्रु हैं तो उनको ऐसी क़सम से कौन रोकता है जिस के खाने के साथ उनको दो हज़ार रुपया नक़द मिलेगा और जिस क़सम के न खाने से यह सिद्ध होगा कि इस्लाम की श्रेष्ठता अवश्य उनके हृदय में समा गई। और ईसाइयत के ग़लत सिद्धान्त उनकी दृष्टि

अनुभव से झूठा सिद्ध कर चुके हैं उसके सर्वथा झूठे बयान के रद्द करने के लिए अकारण स्वाभिमान को जोश मारना चाहिए था और चाहिए था कि न एक बार अपितु हज़ार बार क़सम खाने को तैयार हो जाते क्योंकि स्वयं को सच्चा समझते थे और मुझे स्पष्ट झूठा।

ख़ैर अब हम आरोप पर आरोप लगाने के लिए एक और हज़ार रुपया खर्च कर देते हैं और **यह दो हज़ार रुपए का विज्ञापन** जो हमारी सच्चाई के लिए बतौर तीसरा गवाह है, जारी करते हैं और हमारे विरोधी याद रखें कि अब भी आथम साहिब क़सम कदापि नहीं खाएंगे और क्यों नहीं खाएँगे अपने झूठा होने के कारण से। तथा यह कहना कि शायद उनको यह धड़का हो कि एक वर्ष में

में तुच्छ तथा घृणित मालूम हुए। हे आधे ईसाइयो! थोड़ा और ज़ोर लगाओ और आथम साहिब के पैरों पर सर रख दो शायद वह मान लें और गन्दी लानत तुम से टल जाए हाय अफ़सोस ईसाई बचें और तुम आग्रह करो अद्भुत प्रकृति है। हे आधे ईसाइयो! आज तुम ने वह भविष्यवाणी पूरी कर दी जो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि सत्तर हज़ार लोग मेरी उम्मत में से दज्जाल के साथ मिल जाएंगे। अत: आज तुम ने दज्जालों की हां के साथ हां मिला दी ताकि जो उस पवित्र ज़बान से निकला था वह पूर्ण हो जाए। तुम्हें वह हदीस भी भूल गई जिस से यह प्रकट होता है कि एक उपद्रव होगा जिस में ईसाई कहेंगे कि हमारी विजय हुई और महदी के लोग कहेंगे कि हमारी विजय हुई और ईसाइयों के लिए शैतान गवाही देगा कि الحق فی اٰلِ عیسٰی और महदी के लोगों के लिए ख़ुदा गवाही देगा कि الحق فی اٰلِ محمد तो अब सोचो कि वही समय आ गया। ईसाइयों ने शैतानी षडयंत्रों से पंजाब और हिन्दुस्तान में क्या कुछ न किया यही शैतानी आवाज़ है। अब रहमानी (ख़ुदाई) आवाज़ के प्रतीक्षक रहो। والسلام علی من اتبع الھدٰی (इसी से)

मरना संभव है। अतः हम कहते हैं कि कौन मारेगा। क्या उनका ख़ुदावन्द मसीह या कोई अन्य जबकि यह दो ख़ुदाओं की लड़ाई है। एक सच्चा ख़ुदा जो हमारा ख़ुदा है और एक बनावटी ख़ुदा जो ईसाइयों ने बना लिया है तो फिर यदि आथम साहिब हज़रत मसीह की ख़ुदाई और सत्ता पर ईमान रखते हैं बल्कि आज़मा भी चुके हैं तो फिर उनकी सेवा में निवेदन कर दें कि अब इस अन्तिम फ़ैसले के समय में मुझे अवश्य जीवित रखियो। यों तो मौत की गिरफ़्त से कोई बाहर नहीं। यदि आथम साहिब चौंसठ वर्ष के हैं तो ख़ाकसार लगभग साठ वर्ष का है और हम दोनों पर प्रकृति का नियम एक समान प्रभावी है परन्तु यदि इसी प्रकार की क़सम किसी सच्चाई की परीक्षा के लिए हम को दी जाए तो हम एक वर्ष क्या दस वर्ष तक जीवित रहने की क़सम खा सकते हैं। क्योंकि जानते हैं कि धार्मिक बहस के समय में ख़ुदा तआला अवश्य हमारी सहायता करेगा और ऐसा मनुष्य तो बहुत बड़ा बेईमान और नास्तिक होगा कि जिसे ऐसी

निस्सन्देह समझना चाहिए कि हमारा इल्हाम की दृष्टि से आथम साहिब की गुप्त हालत पर सूचना पाना कि उन्होंने अवश्य इस्लाम की श्रेष्ठता और सच्चाई की ओर रुजू किया है आथम साहिब के लिए एक निशान है और यद्यपि कोई दूसरा समझे या न समझे परन्तु आथम साहिब का दिल अवश्य गवाही देगा कि यह वह गुप्त बात है जो उन के दिल में थी और ख़ुदा तआला ने जो सर्वज्ञ और दूरदर्शी है अपने बन्दे को इस से सूचना दी और उनके उस रंज-व-ग़म से अवगत किया जो केवल इस्लामी प्रतिष्ठा और सच्चाई के स्वीकार करने के कारण न किसी अन्य कारण से। और यही कारण है कि अब वह मेरे सामने मुकाबले पर कदापि नहीं आएंगे, क्योंकि मैं सच्चा हूं और इल्हाम सच्चा है। इसी से

बहस में यह विचार आए कि शायद मैं संयोग से मर जाऊं। क्या जीवित रहना और मरना उसके ख़ुदा के हाथ में नहीं। क्या हाकिम के हुक्म के बिना यों ही संयोग के तौर पर लोग मर जाते हैं। फिर संयोग और संभावना तो दोनों पहलू रखते हैं मरना भी और न मरना भी। अपितु न मरने का पहलू शक्तिशाली और विजयी है क्योंकि मर जाना तो एक नयी दुर्घटना है जो अभी नहीं है और जीवित रहना एक साधारण बात है जो क्रियात्मक तौर पर मौजूद है। फिर मौत से शोक करना इस बात का स्पष्ट सबूत है कि अपने ख़ुदा के पूर्ण शासन पर ईमान नहीं। हज़रत यह तो दो ख़ुदाओं की लड़ाई है अब वही विजयी होगा जो सच्चा ख़ुदा है जबकि हम कहते हैं कि हमारे ख़ुदा की यह क़ुदरत अवश्य प्रकट होगी कि इस क़सम वाले वर्ष में हम नहीं मरेंगे परन्तु यदि आथम साहिब ने झूठी क़सम खा ली तो अवश्य मर जाएंगे तो इन्साफ़ का स्थान है कि आथम साहिब के ख़ुदा पर दुर्घटना उतरेगी कि वह उनको बचा नहीं सकेगा और मुक्तिदाता होने से त्याग पत्र देगा। अतः अब बचाव का कोई कारण नहीं या तो मसीह को सामर्थ्यवान ख़ुदा कहना छोड़ें और या क़सम खालें। हां यदि सार्वजनिक सभा में यह इक़रार कर दें कि उनके ख़ुदा के बेटे मसीह को वर्ष तक जीवित रखने की क़ुदरत नहीं परन्तु वर्ष के तीसरे भाग या तीन दिन तक यद्यपि क़ुदरत है और इस अवधि तक अपने पुजारी को जीवित रख सकता है। तो हम इस इक़रार के बाद चार महीने या तीन दिन ही स्वीकार कर लेंगे। यदि अब भी दो हज़ार रुपए का विज्ञापन पाकर मुंह फेर लिया तो प्रत्येक स्थान पर **हमारी पूर्ण विजय** का नगाड़ा बजेगा और ईसाई तथा नीम

(अधूरे) ईसाई सब अपमानित और नीचे हो जाएंगे और हम इस विज्ञापन के प्रकाशन के दिन से भी एक सप्ताह की अवधि आथम साहिब को देते हैं और शेष शर्तें वही हैं जो 9 सितम्बर 1894 ई० में स्पष्ट तौर पर लिख चुके हैं। वस्सलामो अला मनित्तबअल हुदा।

विज्ञापन दाता

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमदी क़ादियानी

20 सितम्बर 1894 ई०

मुद्रक रियाज़ हिन्द प्रेस अमृतसर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, नहमदुहू व नुसल्ली रब्बनफ्तह बैनना व बैना क़ौमिना बिलहक़्क़े व अन्ता ख़ैरुल फ़ातिहीन

विज्ञापन
तीन हज़ार रुपए का इनाम
तीसरी बार

इस लेख में आथम साहिब के लिए तीन हज़ार रुपए का इनाम निर्धारित किया गया है और यह इनाम क़सम के बाद अविलम्ब दो विश्वसनीय मालदार लोगों का लिखित ज़मानत नामा लेकर उनके सुपुर्द किया जाएगा और यदि चाहें तो क़सम से पहले ही क़ानूनी तौर पर तहरीर लेकर यह रुपया उनके सुपुर्द हो सकता है या ऐसे दो व्यक्तियों के हवाले हो सकता है जिन को वह पसन्द करें। और यदि हम उपरोक्त शर्तों के साथ रुपया देने से बचें तो हम झूठे ठहरेंगे। परन्तु चाहिए कि ऐसा निवेदन प्रकाशन के दिन से **एक सप्ताह** के अन्दर आए और हम मुख़तार होंगे कि तीन सप्ताह के अन्दर किसी

तिथि पर रुपया लेकर आथम साहिब की सेवा में उपस्थित हो जाएं, परन्तु यदि आथम साहिब की ओर से रजिस्ट्री किया हुआ पत्र आने के बाद हम तीन सप्ताह के अन्दर तीन हज़ार रुपया नक़द लेकर अमृतसर या फ़ीरोज़पुर या पंजाब के शहरों में से जिस जगह आथम साहिब कहें उनके पास उपस्थित न हों तो निस्सन्देह हम झूठे होंगे और बाद में हमें कोई अधिकार शेष नहीं रहेगा जो उन्हें दोषी करें अपितु हम स्वयं हमेशा के लिए दोषी और पराजित तथा झूठे समझे जाएंगे।

हमारे इस लेख के दो भागों में से **पहला भाग** उन मौलवियों और अपरिचित मुसलमानों तथा ईसाइयों से संबंधित है जो अकारण ईसाइयों को विजय प्राप्त ठहराते हैं और हमारी विजय के ठोस तर्कों को कमज़ोर समझते हैं और अपनी अन्तः मालिनता, कृपणता और मंदबुद्धि के कारण उस सीधी और साफ़ बात को नहीं समझते जो अत्यन्त व्यापक और स्पष्ट है और **दूसरे भाग में** आथम साहिब की सेवा में **एक पत्र है** जिसमें हम ने उन पर **ख़ुदा की हुज्जत** (समझाने का अन्तिम प्रयास) को **पूर्ण कर दिया** है। अब समझना चाहिए कि कृपण मौलवियों और अपरिचित मुसलमानों और ईसाइयों के आरोप ये हैं जो हम नीचे लिखकर दूर करते हैं -

(1) पहला आरोप - भविष्वाणी तो झूठी निकली अब तावीलें की जाती हैं।

उत्तर - न्यायकर्ता बनो और सोचो और ख़ुदा तआला से डरो तथा आंखें खोल कर उस इल्हाम को पढ़ो जो मुबाहसे के अन्त पर लिखवाया गया था। क्या उसके दो पहलू थे या एक था। क्या उसमें स्पष्ट और साफ़ तौर पर नहीं लिखा था कि हाविय: में गिराया जाएगा

बशर्ते सच्चाई की ओर न लौटे। अब क़सम खाकर कहो क्या इसको तावील कह सकते हैं या स्पष्ट शर्त मौजूद है। क्या ख़ुदा तआला का अधिकार न था कि दो पहलुओं में से जिसको चाहता उसी को पूरा होने देता? क्या हम ने पीछे से तावील के तौर पर कोई बात बना ली या पहले से साफ और खुली-खुली शर्त मौजूद है।

(2) दूसरा आरोप - निस्सन्देह शर्त मौजूद तो है परन्तु यह कहां से और कैसे सिद्ध हुआ कि आथम साहिब ने भय के दिनों में इस्लामी श्रेष्ठता को दिल में बिठा लिया था। क्या किसी ने उसको कलिमा पढ़ते सुना या नमाज़ पढ़ते देखा अपितु वह तो अब भी अखबारों में ही छठपवाता है कि मैं ईसाई हूं और ईसाई था।

उत्तर - आथम साहिब का बयान अभीष्ट गवाह की हैसियत से है न कि प्रतिवादी की हैसियत से। तो आथम साहिब उस मोटी क़सम के बिना जिसकी हम मांग कर रहे हैं और जिसके लिए अब हम **तीन हज़ार रुपया नक़द** उनको देते हैं जो कुछ वर्णन कर रहे हैं या अखबारों में छपवा रहे हैं वह सब बयान एक प्रतिवादी की हैसियत में हैं और स्पष्ट है कि जब कोई व्यक्ति प्रतिवादी की हैसियत से अदालत में खड़ा होता है तो अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों और सोसायटी तथा अपने अन्य सांसारिक हितों की दृष्टि से न एक बार बल्कि लाख बार झूठ बोलने पर तैयार हो सकता है क्योंकि वह जानता है कि ख़ुदा तआला क़सम के समय झूठ बोलने वाले को अवश्य पकड़ता है। इसलिए यदि झूठे, बेईमान को कोई मोटी क़सम दी जाए उदाहरणतया बेटा मर जाने की ही क़सम हो तो वह उस समय अवश्य डरता है और सच्चाई का रोब उस पर विजयी हो

जाता है। तो यही कारण है कि आथम साहिब **क़सम नहीं खाते** और केवल प्रतिवादी की हैसियत से इन्कार किए जाते हैं। अतः इस विचित्र तमाशे को लोग देख लें कि हम तो उनको गवाह की हैसियत से खड़ा करके अन्य गवाहों की तरह एक मोटी क़सम देकर उस इल्हाम का फैसला करना चाहते हैं जिस से वह इन्कारी हैं और वह बार-बार एक प्रतिवादी की हैसियत से अपना ईसाई होना प्रकट करते हैं। यह कितना बड़ा धोखा है जो लोगों को दे रहे हैं। इस **दज्जाली समुदाय** के मकरों को देखो जो कैसे बारीक हैं। हमारा मुद्दा तो यह है कि यदि वह वास्तव में भय के दिनों में और उन दिनों में जो पागलों की तरह भागते फिरते थे और जबकि उन पर बहुत सा धाक का प्रभाव पड़ा हुआ था वास्तव में इस्लामी श्रेष्ठता और सच्चाई से प्रभावित नहीं थे तो अब क्यों एक गवाह की हैसियत से खड़े होकर क़सम नहीं खाते और क्यों इस फैसले के तरीक़े से बच रहे हैं और क्या कारण है उस तौर से क़सम खाने★ से उनकी जान निकलती है जिस तौर को हमने अपने हज़ार रुपए के विज्ञापन और फिर दो हज़ार रुपए के विज्ञापन में स्पष्टतापूर्वक वर्णन किया है। अर्थात् यह कि वह सामान्य मज्लिस में हमारी उपस्थिति के समय इन साफ और स्पष्ट शब्दों में क़सम खाएं कि मैंने भविष्यवाणी की मीआद में इस्लाम की ओर लेशमात्र भी रुजू नहीं किया और न इस्लामी

★**नोट -** इस प्रकार का नाम क़ानूनी क़सम है। अर्थात् वह मौत के अज़ाब की ताकीद की गई क़सम खाएं और हम आमीन कहें। और अन्तिम फ़ैसला क़सम है। इसलिए अंग्रेज़ी कानून ने भी प्रत्येक क़ौम ईसाई इत्यादि के लिए आवश्यकता के समय क़सम पर निर्भर रखा है। इसी से

सच्चाई तथा श्रेष्ठता ने मेरे हृदय पर कोई भयंकर प्रभाव डाला और न इस्लामी भविष्यवाणी की रूहानी धाक ने एक कण भर भी मेरे हृदय को पकड़ा अपितु मैं मसीह की ख़ुदाई, इब्नियत (बेटा होने) तथा कफ़्फ़ारे पर पूरा और कामिल विश्वास रखता रहा और यदि मैं घटना के विरुद्ध कहता हूं और सच्चाई को छुपाता हूं तो शक्तिमान ख़ुदा मुझे एक वर्ष के अन्दर ऐसी मौत के अज़ाब से मिटा दे कि जो झूठों पर उतरना चाहिए। यह क़सम है जिसकी हम **विज्ञापन प्रकाशित करते-करते** आज तीन हज़ार रुपए तक पहुंचे हैं। **हम क़सम खाकर कहते हैं** कि हम कानूनी तौर पर तहरीर लेकर अर्थात् विज्ञापन की शर्तों के अनुसार 9 सितम्बर 1894 ई० इक़रारनामा लिखवा कर यह तीन हज़ार रुपया क़सम खाने से पहले दे देंगे और बाद में क़सम लेंगे। फिर क्यों आथम साहिब पर इस बात के सुनने से मूर्च्छा पर मूर्च्छा छा रही है? क्या अब वह बनावटी ख़ुदा मृत्यु पा गया जिसने पहले मुक्ति दी थी या उस से अब मुक्तिदाता होने के अधिकार छीन लिए गए हैं। हमें बिल्कुल समझ नहीं आता कि कैसी धृष्टता और दज्जालियत है कि यों तो आथम साहिब एक प्रतिवादी की हैसियत से बहुत बातें करें यहां तक कि इस्लाम को झूठा धर्म भी ठहरा दें और शेखी बघारने की बातें मुंह से निकालें परन्तु जब एक गवाह की हैसियत से उन से उपरोक्त तथा कथित ढंग से क़सम लेने की मांग हो तो ऐसी खामोशी के दरिया में डूब जाएं कि जैसे वह दुनिया में ही नहीं रहे। **हे दर्शकगण!** क्या उनके इस ढंग से सिद्ध नहीं होता कि अवश्य दाल में काला है। बड़ी विचित्र बात है कि एक हज़ार रुपया देना किया और **रजिस्ट्री** करके विज्ञापन भेजा परन्तु वह चुप रहे,

फिर दो हज़ार रुपया देना किया और **रजिस्ट्री** करके विज्ञापन भेजा फिर भी उनकी ओर से कोई आवाज़ नहीं आई और दोनो **मीआदें गुज़र गईं**। अब ये तीन हज़ार रुपए का विज्ञापन जारी किया जाता है क्या किसी को आशा है कि अब वह क़सम खाने के लिए मैदान में आएंगे। **कदापि नहीं, कदापि नहीं।** वह तो झूठ की मौत से मर गए, **अब क़ब्र से कैसे निकलें**। उन को तो ये बातें सुनकर बेहोशी आती है क्योंकि वह झूठे हैं। एक असहाय और पार्थिव मनुष्य को ख़ुदा बना कर उसकी उपासना कर रहे हैं। प्रारंभ में जब वह मीआद की **क़ैद** से निकले तो बोलते भी नहीं थे तथा नतमस्तक रहते थे, फिर धीरे-धीरे **शैतानी सोसायटी** से मिलकर तथा दज्जाली वायु के लगने से हृदय कठोर हो गया और ख़ुदा तआला के उपकार को भुला दिया। तो उनका उदाहरण ऐसा ही है कि जैसे एक कठोर हृदय और संसार का पुजारी आदमी एक ऐसे मुक़द्दमे में फंस जाए जिस से उसे प्राण की आशंका या **उम्र क़ैद** होने का भय हो तब वह हृदय में ख़ुदा तआला को पुकारता है और अपने दुष्कर्मों से रुके और फिर जब रिहाई पा जाए तो उस रिहाई को भाग्य और संयोग पर चरितार्थ करे और ख़ुदा तआला के उपकारों को भुला दे। क़ुर्आन को खोल कर देखो कि ख़ुदा तआला ने ऐसे लोगों के लिए कि जो फ़िरऔनी विशेषता का कोई विभाग अपने अन्दर रखते हैं कितने उदाहरण दिए जाएं अत: उन सब में **एक कश्ती** का भी उदाहरण है जब डूबने लगी। तो अब आथम साहिब अपनी नास्तिकता पर गर्व न करें थोड़ी क़सम खाएं फिर अतिशीघ्र देखेंगे कि **ख़ुदा है और वही ख़ुदा है जिसको इस्लाम ने प्रस्तुत किया है** न कि वह जो करोड़ों तथा

असंख्य वर्षों के पश्चात् **असहाय मरयम** के पेट से निकला और फिर बुलबुले के समान लुप्त हो गया।

(3) तीसरा आरोप - यह है कि प्राय: देखा जाता है कि किसी पंडित, पाहिन्दे, रुम्माल या जाफ़री की भविष्यवाणी पर भी जब किसी की मृत्यु के बारे में वह वर्णन करे तो मनुष्य होने के कारण अवश्य उस भविष्यवाणी का भय और धाक हृदय में पैदा हो जाती है। फिर यदि आथम साहिब के हृदय पर भी इस्लामी भविष्यवाणी की धाक छा गई हो तो क्यों उस भय को भी मनुष्यता की ओर संबद्ध न किया जाए?

उत्तर - बशर (मनुष्य) तो बशरियत (मनुष्यता) से कभी अलग नहीं होता, परन्तु जब आप के कथनानुसार इस्लामी भविष्यवाणी की श्रेष्ठता और सच्चाई ने आथम साहिब के हृदय पर प्रभाव डाला और उनको एक भारी भय में डाल दिया तो पवित्र क़ुर्आन की व्याख्या के अनुसार यह भी रुजू का एक प्रकार है क्योंकि इस्लामी भविष्यवाणी की पुष्टि वास्तव में इस्लाम की पुष्टि है। उदाहरणतया नुजूमी की भविष्यवाणी से वह मनुष्य डरता है जो नुजूम को कुछ चीज़ समझता है और रम्माल की भविष्यवाणी से वही व्यक्ति भयभीत होता है जो रमल को कुछ वास्तविकता समझता है। इसी प्रकार इस्लामी भविष्यवाणी से वही व्यक्ति हताश और कांपता है जिसका हृदय उस समय इस्लाम को झुठलाने वाला नहीं अपितु सत्यापन करने वाला है और हम बार-बार लिख चुके हैं कि इस्लाम की महानता और सच्चाई को इतना स्वीकार कर लेना यद्यपि परलोक की मुक्ति हेतु लाभदायक नहीं परंतु सांसारिक अज़ाब से रिहाई पाने के लिए लाभदायक है

जैसा कि क़ुर्आन करीम ने इस बारे में बार-बार उदाहरण प्रस्तुत किए हैं और अनेकों बार फ़रमाया है कि हमने भय और गिड़गिड़ाने के समय काफ़िरों को अज़ाब से मुक्ति दे दी। हालांकि हम जानते थे कि वे पुनः कुफ़्र की ओर लौटेंगे। तो इसी क़ुर्आनी सिद्धान्त के अनुसार आथम साहिब अत्यन्त भय में ग्रस्त होकर कुछ दिनों के लिए मृत्यु से मुक्ति पा गए, क्योंकि उन्होंने उस समय इस्लामी श्रेष्ठता और सच्चाई को स्वीकार किया तथा रद्द न किया जैसा कि हमारे इल्हाम के अतिरिक्त उनका परेशान हाल उनकी इस आन्तरिक हालत पर गवाह रहा और यदि ये बातें सही नहीं हैं और उनके नज़दीक इस्लाम का ख़ुदा **सच्चा ख़ुदा** नहीं तो वह क़सम खाने से क्यों भागते हैं और उन पर कौन सा पहाड़ गिरेगा जो उन्हें कुचल डालेगा, क्या वह अनुभव नहीं कर चुके कि हम झूठे हैं तो झूठों के मुकाबले पर तो पहले से अधिक निर्भीकता के साथ **मैदान** में आना चाहिए।★

★**हाशिया :-** कुछ विरोधी मौलवी नाम के मुसलमान और उनके चेले कहते हैं कि जब एक बार ईसाइयों की विजय हो चुकी तो फिर बार-बार आथम साहिब का मुकाबले पर आना न्याय की दृष्टि से उन पर अनिवार्य नहीं। तो इसका उत्तर यह है कि हे बेईमानो, आधे ईसाइयो, दज्जाल के साथियो, इस्लाम के शत्रुओ क्या भविष्याणी के दो पहलू नहीं थे? फिर क्या आथम साहिब ने दूसरे पहलू सच की ओर रुजू की संभावना को अपने कार्यों तथा अपने कथनों से सुदृढ़ नहीं किया? क्या वह नहीं डरते रहे? क्या उन्होंने अपनी जीभ से डरने का इक़रार नहीं किया? फिर यदि वह डर इन्सानी तलवार से न कि आकाशीय तलवार से तो इस सन्देह को मिटाने के लिए क्यों क़सम नहीं खाते? फिर जब कि इस ओर से हज़ारों रुपए के इनाम का वादा नक़द की तरह पाकर फिर भी क़सम से इन्कार और उपेक्षा है तो ईसाइयों की विजय क्या हुई, क्या तुम्हारी ऐसी तैसी है। इसी से

परन्तु वास्तविकता यह है कि वही झूठे और उन का **धर्म** झूठा और उनकी समस्त बातें झूठी हैं और इस पर यही तर्क पर्याप्त है कि जैसा कि झूठे, कायर और हताश होते हैं तथा डरते हैं कि अपने झूठ के फल से सचमुच मर ही न जाएं। यही हाल उनका हो रहा है यदि आथम साहिब पन्द्रह महीने के अनुभव से मुझे **झूठा** मालूम कर लेते तो उन से अधिक मेरे मुकाबले पर अन्य कोई भी निडर न होता और वह क़सम खाने के लिए तैयार होकर मैदान में इस प्रकार दौड़ कर आते कि जिस प्रकार **चिड़िया** के शिकार की ओर **बाज़ दौड़ता** है क़सम की मांग पर उनको अत्यन्त आनंदित होना चाहिए था कि अब **झूठा शत्रु काबू** में आ गया। परन्तु यह क्या **आफ़त पड़ी,** क्यों अब अनुभव के पश्चात् मुकाबले पर नहीं आते। यही कारण है कि उन्हें मेरे इल्हाम की सच्चाई मालूम है। दूसरे **मूर्ख** ईसाई और मुसलमान नहीं जानते परन्तु वे भली भांति जानते हैं।

दर्शको! क्या तुम समझते हो कि वे मैदान में क़सम खाने के लिए आ जाएंगे, कदापि नहीं आएंगे। क्या तुम नहीं जानते कि कभी झूठे भी ऐसी **बहादुरी** दिखाते हैं जो **ईमानी शक्ति** पर आधारित हो। उनके तो डर-डर के दस्त निकलते रहे, मूच्छा पर मूर्च्छा छाती रही। तो ख़ुदा ने जो दण्ड देने में धीमा और दया में सब से बढ़ कर है अपनी इल्हामी शर्त के अनुसार उन से मामला किया। **अब चिड़िया अपने पिंजरे से निकली हुई** फिर क्योंकर उसी पिंजरे में दाखिल हो जाए? **प्यारे दर्शको!** क्या तुम हमारे निबंधों को ध्यानपूर्वक नहीं देखते, क्या सच्चाई का वैभव तुम्हें उनके अन्दर मालूम नहीं होता? क्या तुम्हारी प्रवीणता का प्रकाश गवाही नहीं देता कि यह ईमानी शक्ति और बहादुरी और यह

दृढ़ता झूठे से कभी प्रकट नहीं हो सकती। क्या मैं पागल हो गया या मैं दीवाना हूं कि यदि मुझे निश्चित तौर पर ज्ञान नहीं दिया गया तो यों ही **तीन हज़ार** रुपया बरबाद करने को तैयार हो गया हूं। तनिक सोचो और अपनी सही संवेदन शक्ति से काम लो। यह कहना कि कोई ऐसी बात दिखाई नहीं देती जिसका प्रभाव अब्दुल्लाह आथम पर हुआ हो सच्चाई का कितना खून करना है। यदि प्रभाव नहीं था तो क्यों आथम साहिब चोरों के समान भागते फिरे, और क्यों अपनी सच्चाई के आधार पर अब क़सम खाने के लिए मैदान में नहीं आते, पत्र पर पत्र रजिस्ट्री द्वारा भेजे गए वह मुर्दे की तरह बोलते नहीं।

(4) चौथा आरोप - यह है कि एक सज्जन अपने विज्ञापन में मुझे सम्बोधित करके लिखते हैं कि तुम ने मुबाहसे में आथम साहिब को सम्बोधित करके कहा था कि तुम जान बूझ कर सच को छुपा रहे हो। तो इस से सिद्ध हुआ कि वह उस समय भी तुम्हारे कथनानुसार इस्लाम को सच्चा जानते थे तो भविष्यवाणी की मीआद में कौन सी नई बात उन से प्रकटन में आई?

उत्तर - जानना चाहिए कि अमन की हालत में अपने कुफ्र की सहायता करके सच को छुपाना और अपने विरोधपूर्ण तर्कों को कमज़ोर समझ कर फिर भी बहस के समय उन्हीं को प्रस्तुत करना और इस्लामी तर्कों को बहुत शक्तिशाली पाकर फिर भी उन से जान बूझ कर सच छुपा कर मुंह फेरना यह और बात है परन्तु भय के दिनों में वास्तव में इस्लामी सच्चाई का भय अपने हृदय पर डाल लेना यहां तक कि भय की अधिकता से दीवाना सा हो जाना यह और चीज़ है तथा दोनों बातों में पृथ्वी और आकाश का अन्तर है और अज़ाब में

विलम्ब का कारण दूसरा भाग है न कि प्रथम भाग।

(5) पांचवा आरोप - यह है कि एक वर्ष की मीआद की क्या आवश्यकता है ख़ुदा एक दिन में झूठे को मार सकता है।

उत्तर - हां निस्सन्देह शक्तिमान तेजस्वी ख़ुदा एक दिन में क्या एक पलक झपकने में मार सकता है परन्तु जब उसने इल्हाम को समझा कर अपना इरादा प्रकट कर दिया तो उसका अनुकरण करना अनिवार्य है क्योंकि वह हाकिम है। उदाहरणतया वह अपनी क़ुदरत के अनुसार एक दिन में मनुष्य के वीर्य को बच्चा बना सकता है परन्तु जब उसने अपने प्रकृति के नियम द्वारा हमें समझा दिया कि यही उसका इरादा है कि नौ महीने में बच्चा बनाए तो इसके बाद नितान्त चालाकी और धृष्टता होगी कि हम ऐसा ऐतराज़ करें। क्या हमें ख़ुदा तआला के इरादों और आदेशों का अनुकरण करना अनिवार्य है या यह कि अपने इरादों का उसको अनुयायी बनाएं। उसकी क़ुदरत तो दोनों पहलू रखती है, चाहे तो एक पलक झपकने में किसी को मार दे और चाहे तो किसी अन्य अवधि तक उदहाहरणतया एक वर्ष तक किसी पर मौत लाए और फिर जब उसी के समझाने से ज्ञात हुआ कि अपनी क़ुदरत के लाने में उसने एक वर्ष की अवधि का इरादा किया है तो यह कहना अत्यन्त अनुचित है कि यह इरादा उसकी क़ुदरत के विरुद्ध है। सैकड़ों कार्य हैं जो वह एक पल में कर सकता है परन्तु नहीं करता। संसार को भी छः दिन में बनाया और खेतों को भी उस अवधि तक पकाता है जो उसने निर्धारित कर रखी है तथा प्रत्येक वस्तु के लिए उसके प्रकृति के नियम में समय निश्चित है तो इल्हाम का नियम भी उसी प्रकृति के नियम के समान स्रष्टा की विशेषताओं को प्रकट करता है। परन्तु यह मातम ऐसे

लोग क्यों कर रहे हैं जो हज़रत मसीह को सर्वशक्तिमान समझते हैं। क्या उन का वह बनावटी ख़ुदा एक वर्ष तक आथम साहिब को बचा नहीं सकता, हालांकि उनकी आयु भी कुछ ऐसी बड़ी नहीं है अपितु मेरी आयु से केवल कुछ वर्ष ही अधिक हैं। फिर उस बनावटी ख़ुदा पर कौन सी कमज़ोरी छा जाएगी कि एक वर्ष भी उनको बचा नहीं सकेगा ऐसा ख़ुदा ख़तरनाक है जो एक वर्ष की सुरक्षा से भी असमर्थ है। क्या हमने अहद नहीं किया कि हमारा ख़ुदा इस वर्ष में हमें मरने से अवश्य बचाएगा और आथम साहिब को इस संसार से रुख़सत कर देगा क्योंकि वही सामर्थ्यवान और सच्चा ख़ुदा है जिस से दुर्भाग्यशाली ईसाई इन्कारी हैं और अपने समान इन्सान को ख़ुदा बना बैठे हैं तभी तो कायर हैं और एक वर्ष के लिए भी उस पर भरोसा नहीं आ सकता और सच है झूठे उपास्यों (माबूदों) पर भरोसा कैसे हो सके और स्वभाव का प्रकाश कैसे गवाही दे कि ऐसा असमर्थ उपास्य एक वर्ष तक बचा सकेगा। अपितु हम ने तो 20 सितम्बर 1894 ई० के विज्ञापन में यह भी लिख दिया है कि यदि आथम साहिब अपने बनावटी ख़ुदा को ऐसा ही कमज़ोर तथा गुजरा विश्वास कर बैठे हैं तो इतना कह दें कि वह इब्नुल्लाह (अल्लाह का बेटा) नाम का ख़ुदा मुझे एक वर्ष तक बचा नहीं सकता तो हम इस इक़रार के बाद **तीन दिन ही स्वीकार कर लेंगे,** परन्तु वह किसी प्रकार मैदान में नहीं आएंगे क्योंकि झूठे को अपने झूठ का धड़का आरंभ हो जाता है और सच्चे के मुकाबले पर आना उसे एक मौत का मुकाबला प्रतीत होता है।

(6) छठा आरोप - यह है कि क्या ख़ुदा आथम के छलपूर्ण रुजू से अपने ज़बरदस्त वादे को टाल सकता था? हालांकि वह स्वयं

ही फ़रमाता है-

(अलमुनाफ़िक़ून-12) وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا

अर्थात् जब वादा पहुंच गया तो किसी जान को छूट नहीं दी जाती।

उत्तर - आप सुन चुके हैं कि वह वादा ख़ुदा तआला के इल्हाम में अटल वादा न था और न फैसला अन्तिम था बल्कि शर्त के साथ प्रतिबंधित था और शर्त की पाबन्दी की स्थिति में वह निर्धारित शर्त भी वादे में सम्मिलित थी। तो आथम ने भय के दिनों में निस्सन्देह सच की ओर रुजू किया और वह रुजू छलपूर्ण नहीं था। इसलिए ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार मृत्यु में विलम्ब डाल दिया। अफ़सोस कि अनाड़ी लोग इस बात को नहीं समझते कि मनुष्य की प्रकृति में यह भी एक विशेषता है कि वह अनादि दुर्भाग्यशाली होने के बावजूद डर और भय के समय में ख़ुदा तआला की ओर रुजू कर लेता है परन्तु अपने दुर्भाग्य के कारण फिर विपत्ति से छुटकारा पाकर उसका हृदय कठोर हो जाता है। जैसे फ़िरऔन का हृदय प्रत्येक रिहाई के समय कठोर होता रहा तो ऐसे रुजू का नाम ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम में छलपूर्ण रुजू नहीं रखा क्योंकि कपटाचारी के हृदय में कोई सच्चा भय नहीं उतरता और उसके हृदय पर सच का रोब प्रभाव नहीं डालता परन्तु उस दुर्भाग्यशाली के हृदय में सद्मार्ग की श्रेष्ठता को कल्पना में लाकर भविष्यवाणी के सुनने के समय में एक सच्चा भय बाल-बाल में फिर जाता है परन्तु चूंकि दुर्भाग्यशाली है इसलिए यह भय उसी समय तक रहता है जब तक अज़ाब के उतरने की उसे आशंका रहती है इसके उदाहरण पवित्र क़ुर्आन और बाइबल में प्रचुर मात्रा में हैं जिन को हमने पुस्तक '**अन्वारुल इस्लाम**' में विवरण

सहित लिख दिया है इसलिए कपटपूर्ण रुजू वास्तव में रुजू नहीं है परन्तु जो भय के समय में एक दुर्भाग्यशाली के हृदय में वास्तविक तौर पर एक हताशा और आशंका पैदा होती है उसको ख़ुदा तआला ने रुजू में ही सम्मिलित रखा है और ख़ुदा की सुन्नत ने ऐसे रुजू को सांसारिक अज़ाब में विलम्ब पड़ने का कारण ठहराया है यद्यपि पारलौकिक अज़ाब ऐसे रुजू से टल नहीं सकता परन्तु सांसारिक अज़ाब हमेशा टलता रहा है तथा दूसरे समय पर पड़ता रहा है। क़ुर्आन को ध्यानपूर्वक देखो और मूर्खता की बातें मत करो और स्मरण रहे कि आयत لَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا (अलमुनाफ़िकून-12) का इस स्थान से कुछ संबंध नहीं। इस आयत का तो उद्देश्य यह है कि जब अटल तक़्दीर (प्रारब्ध) आ जाती है तो टल नहीं सकती, परन्तु यहां बहस मुअल्लक़ तक़्दीर के बारे में है जो शर्तों से प्रतिबंधित है जबकि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में स्वयं फ़रमाता है कि मैं इस्तिग़फार, गिड़गिड़ाने और भय के प्रभुत्त्व के समय में काफ़िरों के सर से अज़ाब को टाल देता हूं और टालता रहा हूं। तो इस से बढ़कर सच्चा गवाह और कौन है जिस की गवाही स्वीकार की जाए।

(7) सातवां आरोप - यह है कि यदि रुजू (पश्चाताप) के बाद अज़ाब टल सकता है तो अब भी यदि आथम क़मस खाकर फिर अन्दर ही अन्दर रुजू कर ले तो चाहिए कि अज़ाब टल जाए तो इस स्थिति में एक बुरे इन्सान के लिए बड़ी गुंजायश है और ख़ुदाई भविष्यवाणियों का विश्वास बिल्कुल उठ जाएगा।

उत्तर - क़सम खाने के पश्चात् ख़ुदा तआला का वादा है कि फ़ैसला अन्तिम करे। फिर क़सम के पश्चात् ऐसे मक्कार का गुप्त

रुजू कदापि स्वीकार नहीं होगा क्योंकि इसमें एक संसार की तबाही है और क़सम फैसले के लिए है और जब फ़ैसला न हुआ तथा कोई मक्कार गुप्त रुजू करके सच पर पर्दा डाल सका तो दुनिया में गुमराही फैल जाएगी। इसलिए क़सम के बाद ख़ुदा तआला का निश्चय यह इरादा होता है कि सच को झूठ से पृथक कर दे ताकि संदिग्ध मामले का फैसला हो जाए।

(8) आठवां आरोप - यह है कि यदि सच्चाई का केवल इक़रार या स्वीकार करना मृत्यु में विलम्ब का कारण है तो हम मुसलमानों पर कभी मृत्यु नहीं आनी चाहिए क्योंकि सच्चाई के अनुयायी हैं जबकि ख़ुदा का शत्रु थोड़े से कपटपूर्ण रुजू के कारण कि वह भी गुप्त है मृत्यु से बच जाए तो हम जो गवाहों के सामने रुजू किए बैठे हैं निस्सन्देह अनश्वर जीवन के अधिकारी हैं।

(9) नवां आरोप - यह है कि यदि पादरी रायट विरोधी पक्ष में से भविष्यवाणी की मीआद में मर गए तो इस के मुकाबले में कई सानिध्य प्राप्त ईसाई हो गए।

उत्तर - हे साहिब! आप ध्यान से सुनें। हम सच कहते हैं और झूठे पर ख़ुदा की लानत है कि हमारा कोई सानिध्य प्राप्त (मुक़र्रब) या बैअत का सच्चा संबंध रखने वाला ईसाई नहीं हुआ। हां दो **बदचलन** और आन्तरिक तौर पर ख़राब आदमी आंखों के अंधे जिन को धर्म से कुछ भी संबंध नहीं था कपटपूर्ण तौर पर बैअत करने वालों में सम्मिलित हो गए थे परन्तु हम ने यह मालूम करके कि ये बदचलन और ख़राब हालत के आदमी हैं उनको अपने मकान से निकाल दिया था और अपवित्र स्वभाव देख कर बैअत के सिलसिले से अलग कर

दिया था। अब बताइए कि उनका हम से क्या संबंध रहा और उनके मुर्तद होने से हमें क्या कष्ट पहुंचा। पादरियों पर यह भी पतन आया कि उनको उन्होंने स्वीकार किया और अन्ततः देखेंगे कि परिणाम क्या निकलता है। हराम ख़ोर आदमी किसी क़ौम के लिए गर्व का स्थान नहीं हो सकता। यदि आप को इस बयान में सन्देह हो तो **क़ादियान** में आएं और हम से पूरा-पूरा सबूत ले लें परन्तु रायट को अपनी उस पद की हैसियत और प्रमुख होने के सम्मान से निलंबित नहीं किया गया था और वही था जिसने मुबाहसे से पहले अंग्रेज़ी में शर्तें लिखी थीं। फिर आप क्यों ऐसी स्पष्ट और चमकती हुई सच्चाई पर धूल डालते हैं। यह बात नितान्त स्पष्ट है और इस जंग में जिसका नाम पादरियों ने स्वयं अपने मुंह से जंगे मुक़द्दस रखा था पराजय के चारों रूप इन इन्सान परस्त ईसाइयों को प्राप्त हुए। क्योंकि कोई उनमें से मारा गया और कोई ज़ख़्मी हुआ अर्थात् सख़्त बीमार हुआ और मर-मर के बचा तथा कोई लानतों की ज़ंजीर में गिरफ़्तार हुआ और कोई भाग गया और इस्लामी झण्डे के नीचे शरण लेकर जान बचाई। तो इस खुली-खुली और स्पष्ट पराजय से इन्कार करना न केवल मूर्खता अपितु परले दर्जे की बेईमानी और हठधर्मी है। परन्तु यदि पराजित और अपमानित पादरियों को अकारण विजयी ठहराना है तो हम आपकी जीभ को नहीं पकड़ सकते। अन्यथा सच तो यही है कि इस भविष्यवाणी के बाद पादरियों पर अपमान की बहुत बड़ी मार पड़ी है। बिल्कुल भविष्यवाणी की मीआद में पादरी रायट साहिब ठीक जवानी में नर्क की शोभा बढ़ाने के लिए इस संसार से बुलाए गए और उन की मौत पर इतने सियापे और दर्दनाक मातम हुए कि ईसाइयों ने स्वयं इक़रार किया कि हम पर

असमय प्रकोप उतरा। फिर दूसरा अपमान देखो कि पचास वर्ष की मौलवियत का दावा जिसके आधार पर इमादुद्दीन इत्यादि का इस्लामी शिक्षा में हस्तक्षेप करना मूर्खों की दृष्टि में विश्वसनीय समझा जाता था गन्दगी की तरह झूठ की दुर्गन्ध से भरा हुआ निकला और सहसा सड़ी-गली बुनियाद के समान गिर गया और हज़ार लानत का रस्सा हमेशा के लिए समस्त उन पादरियों के गले में पड़ गया जो अरबी के ज्ञान में महारत रखने का दम मारते थे। क्या यह ऐसा अपमान बदनामी है जो किसी के छुपाने से छुप सके और क्या यह वह पहला अपमान नहीं है जो पादरियों को हिन्दुस्तान और पंजाब में प्राप्त हुआ, जिस के विज्ञापन यूरोप, अमरीका और समस्त देशों में फैलकर सामान्य तौर पर इन पादरियों जो मौलवी कहलाते थे की मूर्खता और झूठ बोलना सिद्ध हुआ और उनके माथे पर हमेशा के लिए यह दाग़ लग गया जो अब क़यामत तक दूर नहीं हो सकता। क्या ऐसे अपमान का कोई उदाहरण हमारे पक्ष में भविष्यवाणी के बाद आप ने देखा। भला तनिक कलिमा तय्यिबा पढ़कर वर्णन तो करो ताकि हम भी सुनें और फिर ये अपमान तथा बदनामियां अभी समाप्त कहां हुईं। हमारा विज्ञापन पर विज्ञापन निकालना यहां तक कि तीन हज़ार तक इनाम देना और आथम साहिब का क़सम खाने से जान निकलना क्या इस से इस्लाम की धाक और सच्चाई स्पष्ट तौर पर सिद्ध नहीं। क्या अब भी ईसाइयों के अपमानित और झूठे होने में कुछ कमी शेष रह गयी है और आप का यह कहना कि रात को आथम की मौत के लिए दुआएं मांगना यह भी एक अज़ाब था। सुब्हान अल्लाह! मुसलमान कहला कर कितनी व्यर्थ बातें आप के मुंह से निकल रही हैं। सच्चे मुसलमान हमेशा इस्लाम की विजय के

लिए दुआएं मांगते हैं और तहज्जुद भी पढ़ते हैं और नमाज़ में भी उन पर भावुकता हावी हो जाती है और आयत-

يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّ قِيَامًا (अलफ़ुरक़ान-65)

का चरितार्थ होते हैं। यदि यही अज़ाब है तो हमारी दुआ है कि क़यामत में भी यह अज़ाब हम से पृथक न हो। दुआ करना हमेशा नबियों का तरीका और नेक लोगों की सुन्नत है और बिल्कुल इबादत है इसका नाम अज़ाब रखना उन्हीं लोगों का कार्य है जो दुनिया के कीड़े हैं और रूहानी संसार से अनभिज्ञ हैं। मैं सच-सच कहता हूं कि सच्चे मोमिन पर उस समय दुख और अज़ाब की हालत आती है कि जब नमाज़ की आर्द्रता तथा आर्द्रता से भरपूर दुआ उस से छूट जाती है। हे लापरवाहो! यह तो धार्मिक और ईमानदारों का स्वर्ग है न कि अज़ाब -

हर दम बराह जानां सोजेश्त आशिकां रा
ज़ जहां चैदीद आं कस कि नदीद ईंजहां रा

(10) दसवां आरोप - यह है कि पादरी इमादुद्दीन तो एक मूर्ख आदमी है और अरबी से वंचित वह बेचारा अरबी पुस्तकों का उत्तर कैसे लिखता।

उत्तर - ऐसा मूर्ख एक लम्बे समय से मौलवी कहलाता था और हज़ारों अनाड़ी उसे मौलवी समझते थे तो क्या उसका इन पुस्तकों से अपमान नहीं हुआ और क्या वह असमर्थ रह जाने के कारण उस हज़ार **लानत** का पात्र न हुआ जो 'नूरुलहक़' के चार पृष्ठों में लिखी गई। इसके अतिरिक्त हे हज़रत! इस से तो उन समस्त पादरियों की नाक कट गई जो मौलवी कहलाते थे और मौलवियत के धोखे से मूर्खों पर बुरा प्रभाव डालते थे न केवल इमादुद्दीन की नाक । क्या ऐसा प्रमाणित

अपमान और लानत का उदाहरण हमारी जमाअत के भी सामने आता। आप ईसाइयों के सहायक तो बने अब क़सम खाकर पूरा-पूरा उत्तर दें।

(11) ग्यारहवां आरोप - यह है कि एक हिन्दू लड़का **सादुल्लाह** नामक लुधियाना से अपने 16 दिसम्बर 1894 ई० के विज्ञापन में लिखता है कि केवल हृदय में सच्चाई की श्रेष्ठता को मानना और अपनी झूठी आस्थाओं को ग़लत समझना किसी प्रकार अच्छा कर्म नहीं बन सकता। यह क़ादियानी दज्जाल का ही काम है कि इस का नाम सच की ओर रुजू रखे।

उत्तर - हे मूर्ख! दिल के अंधे दज्जाल तो तू ही है जो पवित्र क़ुर्आन के विरुद्ध वर्णन करता है और अपनी पुरानी बेईमानी हमारे बयान को अक्षरांतरित करके लिखता है। हमने कब और किस समय कहा कि ऐसा रुजू जो भय के समय में हो और फिर इन्सान उस से फिर जाए पारलौकिक मुक्ति के लिए लाभप्रद है अपितु हम तो बार-बार कहते हैं कि ऐसा रुजू पारलौकिक मुक्ति के लिए कदापि लाभप्रद नहीं और हम ने कब आथम नजासत ख़ोर मुश्रिक को **जन्नती ठहराया** है। यह तो सर्वथा तेरा ही बनाया हुआ झूठ और बेईमानी है। हम ने तो पवित्र क़ुर्आन की शिक्षानुसार केवल यह वर्णन किया था कि कोई काफ़िर या दुराचारी जब अज़ाब के भय से इस्लाम की श्रेष्ठता और सच्चाई का भय अपने हृदय में डाल ले और अपनी धृष्टताओं और गुस्ताखियों का कुछ रुजू के साथ सुधार कर ले तो ख़ुदा तआला सांसारिक अज़ाब में विलम्ब डाल देता है। यही शिक्षा सम्पूर्ण क़ुर्आन में मौजूद है जैसा कि महा प्रतापी ख़ुदा काफ़िरों का कथन वर्णन करके फ़रमाता है -

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ----- (अद्दुख़ान-13)

और फिर उत्तर में फ़रमाता है -

(अद्दुख़ान-16) اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ

अर्थात् काफ़िर अज़ाब के समय कहेंगे कि हे ख़ुदा! हम से अज़ाब दूर कर कि हम ईमान लाए और हम थोड़ा सा या थोड़ी अवधि तक अज़ाब दूर कर देंगे परन्तु तुम हे काफ़िरो! फिर कुफ्र की ओर लौटोगे। तो इन आयतों से तथा इसी प्रकार उन आयतों से जिन में डूबने के निकट वाली कश्तियों का वर्णन है जो क़ुर्आन के स्पष्ट कलाम से सिद्ध होता है कि सांसारिक अज़ाब ऐसे काफ़िरों तथा समयों में सच और एकेश्वरवाद (तौहीद) की ओर रुजू करें यद्यपि अमन पाकर पुनः बेईमान हो जाएं। भला यदि हमारा यह वर्णन सही नहीं है तो अपने शिक्षक शेख़ बटालवी को कहो कि क़सम खाकर लिखित रूप से यह प्रकट करे कि हमारा यह वर्णन ग़लत है क्योंकि तुम तो मूर्ख हो तुम कदापि नहीं समझोगे और वह समझ लेगा। और स्मरण रखो कि वह कदापि क़सम नहीं खाएगा क्योंकि हमारे वर्णन में सच्चाई का प्रकाश देखेगा और क़ुर्आन के अनुसार पाएगा। तो अब बता कि क्या **दज्जाल तेरा ही नाम सिद्ध हुआ** या किसी अन्य का। सच से लड़ता रह अतएव हे मुर्दार देखेगा कि तेरा क्या अंजाम होगा। हे **ख़ुदा के शत्रु!** तू मुझ से नहीं अपितु ख़ुदा से लड़ रहा है। ख़ुदा की क़सम मुझे इसी समय 29 सितम्बर 1894 ई० को तेरे संबंध में इल्हाम हुआ है - اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ और हमने इस प्रकार से आथम का सच की ओर रुजू करना (लौटना) बिना सबूत नहीं कहा। क्या तू सोचता नहीं कि यदि वह सच्चा है तो क्यों क़सम नहीं खाता। यदि यही सच है तो वह सच्ची क़सम खाने से किस पहाड़ के नीचे आकर दब जाएगा

और हम वर्णन कर चुके हैं कि आथम साहिब का केवल प्रतिवादी की हैसियत से इन्कार करते रहना कुछ भी चीज़ नहीं, झूठ बोलना ईसाइयों के स्वभाव में सम्मिलित है। यदि बन्दा परस्त (मनुष्य के उपासक) लोग झूठ न बोलें तो और कौन बोले। हमारा तो यह मतलब और उद्देश्य है कि एक गवाह की हैसियत से खड़ा होकर सार्वजनिक सभा में इस लेख की क़सम खा जाएं जिसकी हम बार-बार शिक्षा देते हैं। परन्तु क्या उसने अब तक क़सम खाई? कदापि नहीं। और आश्चर्य कि हम ने लिखा था कि जो कुलीन है और वास्तव में ईसाई धर्म को ही विजयी समझता है तो चाहिए कि हम से दो हज़ार रुपया ले और आथम साहिब से हमारी इच्छानुसार क़सम दिला दे फिर जो कुछ चाहे हमें कहता रहे अन्यथा यों ही इस्लामी बहस पर विरोधपूर्ण आक्रमण करना और जीभ से मुसलमान कहलाना किसी कुलीन का काम नहीं परन्तु मियां सादुल्लाह साहिब ने आज तक आथम साहिब को क़सम खाने पर तैयार न किया किन्तु ईसाइयों को विजयी समझता रहा और स्वयं पर जान बूझ कर वह उपाधि ले ली जिसे कोई नेक स्वभाव व्यक्ति ले नहीं सकता और फिर यह मूर्ख कहता है कि यदि मरना ही अज़ाब की निशानी है तो क़ादियानी भी अवश्य एक दिन इस अज़ाब में ग्रस्त होगा। हे मूर्ख! तेरी बुद्धि क्यों मारी गई? क्या तू क़ुर्आन नहीं पढ़ता? यों तो अंबिया भी मृत्यु पा गए अपितु कुछ शहीद हुए और उनके शत्रु फ़िरऔन तथा अबू जहल इत्यादि भी मर गए या मारे गए परन्तु वह मौत जो मुकाबले के समय वलियों की दुआ से या वलियों के कष्ट से या वलियों की भविष्यवाणी से अभागों पर आती है वह अज़ाब की मौत कहलाती है क्योंकि नर्क तक पहुंचाती है परन्तु वली लोग यदि

शहीद भी हो जाएं तो वे ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से स्वर्ग में जाते हैं।

(12) बारहवां आरोप - उसी हिन्दू लड़के का यह है कि जब कोई अमल (कर्म) न चला तो ढकोसला बना लिया कि आथम ने सच की ओर रूजू किया है।

उत्तर - हां हे हिन्दू पुत्र! अब सिद्ध हो गया कि अवश्य तू कुलीन है हमारी इस शर्त पर कि कोई आथम को क़सम देने से पहले झुठलाए नहीं तू ने खूब ही अमल किया शाबाश, शाबाश। सच कह कि यह ढकोसला अब बना लिया या इल्हाम में पहले से शर्त थी और क्या इस शर्त के फ़ैसले के लिए अवश्य न था कि आथम क़सम खा लेता। क्या क़सम के दो अक्षर मुंह पर लाना और तीन हज़ार रुपया नक़द लेना एक सच्चे आदमी के लिए कुछ कठिन है!!!

(13) कुछ सन्देह ऐसे लोगों की ओर से हैं जो निष्कपटता रखते हैं परन्तु जानकारियों की कमी के कारण अनभिज्ञ हैं। तो हम यहां उन के भ्रमों का भी बतौर उसका कथन मेरा कथन निवारण करते हैं।

उसका कथन - आथम इस्लाम की ओर रुजू करने से स्पष्ट तौर पर अपने प्रकाशित पत्र में इन्कार करता है। केवल क़सम खा लेना और रुपया लेना शेष रहा है।

मेरा कथन - यह इन्कार गवाही के रंग में इन्कार नहीं अपितु इस प्रकार का इन्कार है जैसे बेईमान प्रतिवादी किया करते हैं। तो ऐसा इन्कार उस दावे को तोड़ नहीं सकता जो स्वयं आथम साहिब की वर्तमान गवाही से सिद्ध है। क्या इस में कुछ सन्देह है कि आथम साहिब ने अपनी उद्विग्नता और दिन-रात की परेशानी, रोने-धोने, तथा हर समय शोकाकुल और भयभीत रहने से दिखा दिया कि वह अवश्य

उस भविष्यवाणी से प्रभावित एवं भयभीत रहे हैं अपितु आथम साहिब ने स्वयं रो-रो कर मज्लिसों में इस बात का इक़रार किया है। क्या वह इस भविष्यवाणी के पश्चात् मृत्यु से अवश्य डरते रहे। अत: अभी सितम्बर 1894 ई० के महीने में वह इक़रार 'नूर अफ़्शां' में छप भी गया है जिसकी अब वह यह तावील करते हैं कि भविष्यवाणी से हमें भय नहीं था और न इस्लामी श्रेष्ठता का प्रभाव था अपितु यह डर था कि कोई मुझे मार न दे। परन्तु उन्होंने भय का स्पष्ट इक़रार करके फिर इसका कोई सबूत नहीं दिया कि ऐसा भय जिसने उनको जानवरों की भांति बना रखा था क्या उस का समस्त दारोमदार उस भ्रम पर था कि कोई मुझे क़त्ल न कर दे। तो जबकि हमारी भविष्यवाणी के बाद यह सब भय था जिसके वे स्वयं इक़रारी हैं। जिसको स्मरण करके अब भी फूट-फूट कर रोते हैं तो हमारा यह अधिकार है कि हम उनकी इस तावील को अस्वीकार की मद में रख कर उनसे वह सबूत मांगें तो सन्तुष्टि का कारण हो। क्योंकि वह उस भय के स्वयं इक़रारी हैं तो हमें इन्साफ़ और कानून की दृष्टि से अधिकार पहुंचता हैं कि उन से वह सघन क़सम लें जिसके द्वारा वह सच वर्णन कर सकें, बिना क़सम के उन के बयान निरर्थक हैं क्योंकि वे बातें प्रतिवादी की हैसियत से हैं।

उसका कथन - आथम साहिब के ज़िम्मे इस प्रकार से क़सम खाना न्याय की दृष्टि से आवश्वयक नहीं।

मेरा कथन - जब आथम साहिब की वे परिस्थितियाँ जो भविष्यवाणी की मीआद में उन पर आईं जिन्होंने उनको भय से दीवाना बना दिया था बुलन्द आवाज़ से पुकार रही हैं कि एक डरने वाला प्रभाव अवश्य उनके दिल पर पड़ा था और फिर इसके पश्चात्

उनकी जीभ का इक़रार भी 'नूर अफ़्शां' में छप गया कि वह अवश्य उस अवधि में भय और डर की हालत में रहे और डर के जो कारण उन्होंने वर्णन किए हैं वह ऐसा दावा है जिसे वह सिद्ध नहीं कर सकते। तो इस स्थिति में वह स्वयं न्याय एवं कानून के अनुसार इस मांग के नीचे आए कि वह उस आरोप से क़सम के साथ अपना बरी होना प्रकट करें जो स्वयं उनके कार्यों तथा उनके बयान से सन्देह के तौर पर उनके हाल पर लागू होता है। तो उनका बरी होना उस सन्देह से जिसको उन्होंने अपनी हाथों से स्वयं पैदा किया इसी में है कि वह ऐसी क़सम जो मुझ मुद्दई को सन्तुष्ट कर सकती हो अर्थात् मेरी इच्छानुसार हो सार्वजनिक सभा में खा लें और स्मरण रहे कि वास्तव में उनके ऐसे कार्यों से जो उनकी भयभीत करने वाली हालत पर और उनके डर से भरे हुए दिल पर पन्द्रह महीने तक गवाही देते रहे और उनके ऐसे बयान से जो रो-रो कर उस समय के बारे में बताया जो नूर अफ़्शां माह सितम्बर 1894 ई० छप गया। यह बात निश्चित तौर पर सिद्ध हो गई है कि वह अवश्य भविष्यवाणी के दिनों में डरते रहे। अत: उनका यह दावा कि सच की श्रेष्ठता के भय से नहीं डरे अपितु क़त्ल किए जाने से डरे। इस दावे का सबूत देने का दायित्त्व कानून और न्याय के अनुसार उन्हीं का था जिस से वे निवृत्त नहीं हो सके। इसलिए हमें यह कानूनी अधिकार प्राप्त है कि एक सन्तोषजनक सबूत के लिए उनको क़सम पर विवश करें और उन पर कानून के अनुसार आवश्यक है कि वह उस फ़ैसले के तरीक़े से इन्कार न करें जिस तरीक़े से पूर्णरूप से उनके सर से हमारा सन्देह और आरोप दूर हो जाए यही वह तरीक़ा है जिसे क़ानून और न्याय चाहता है। अब तुम

चाहे किसी वकील, बैरिस्टर या जज से भी पूछ कर देख लो। हां यदि आथम साहिब अब हमारे निर्धारित प्रस्ताव के अनुसार क़सम खा लें तो निस्सन्देह उनकी सफ़ाई हो जाएगी और यदि क़सम की हानि से बच गए तो सिद्ध हो जाएगा कि वह वास्तव में इस्लामी भविष्यवाणी से थोड़े भी नहीं डरे अपितु वह इसलिए भयभीत रहे कि उनको यह पुराना अनुभव था कि यह ख़ाकसार ख़ूनी आदमी है हमेशा अकारण ख़ून करता रहा है, इसलिए अब उनका भी अवश्य ख़ून करेगा।

उसका कथन - इस प्रकार की ललकार और फिर गुप्त तरीकों से उस का सबूत।

मेरा कथन - बुद्धिमान के लिए यह गुप्त तरीक़ा नहीं, जिस हालत में पन्द्रह महीने तक आथम साहिब के भय के क़िस्से और उनकी उद्विग्नता की हालत संसार में प्रसिद्ध हो गयी। फिर जब तक वह जीभ से भी रो-रो कर इक़रार करते हैं कि मैं अवश्य डरता रहा परन्तु तलवारों का भय था जैसे किसी राजा, नवाब या किसी डाकू ने उनके क़त्ल की धमकी दी थी और जब कहा जाता है कि यह कमाल श्रेणी का भय जो आप से प्रकट हुआ यदि यह तलवार का भय था, सच्चे धर्म की श्रेष्ठता और ख़ुदा के प्रकोप का भय नहीं था तो आप क़सम खा लें क्योंकि अब आप के दिल का यह भेद क़सम के अतिरिक्त फ़ैसला नहीं पा सकता और आप क़सम खाने से बच रहे हैं न हज़ार रुपया लें, न दो हज़ार रुपया। अब इसी उद्देश्य से तीन हज़ार रुपए का विज्ञापन जारी किया गया परन्तु क़सम की अब भी आशा नहीं। तो अब न्याय के अनुसार कहिए कि क्या अब भी हमारे सबूत का तरीक़ा गुप्त है। शत्रु तो उसी समय से पकड़ा गया

जब उसने भय का इक़रार करके फिर क़सम खाने से इन्कार किया। आप को याद होगा कि हुदैविया के क़िस्से को ख़ुदा तआला ने स्पष्ट विजय का नाम रखा है और फ़रमाया -

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا (अलफ़त्ह-2)

वह विजय अधिकांश सहाबा पर भी छुपी हुई थी अपितु कुछ कपटाचारियों के मुर्तद होने का कारण हुई परन्तु वास्तव में वह स्पष्ट विजय थी यद्यपि उसकी भूमिकाएं अस्पष्ट और गहरी थीं तो वास्तव में यह विजय भी हुदैबिया की विजय के समान अत्यन्त मुबारक विजय तथा बहुत सी विजयों की भूमिका और कुछ के लिए आज़मायश का कारण तथा कुछ के लिए प्रतिष्ठा का कारण है। और उस भविष्यवाणी को भी पूरा करती है जिस के शब्द ये हैं कि **الحق فی اٰلِ محمد** और **الحق فی اٰلِ عیسٰی** और जो लोग आज़मायश में गिरफ़्तार हुए उन्होंने अपने दुर्भाग्य से इस भविष्यवाणी के समस्त पहलू ध्यानपूर्वक नहीं देखे और इसके पूर्व कि विचार करते केवल मूर्खता और सादगी से अपनी नासमझी का भेद प्रकट कर दिया और कहा कि यह भविष्यवाणी कदापि पूरी नहीं हुई। यदि वह इस ख़ुदाई सुन्नत को जानते जिसे पवित्र क़ुर्आन ने प्रस्तुत किया है। जैसा कि वह फ़रमाता है -

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذابَ اِذا هُمْ يَنْكُثُوْنَ (अज़्ज़ुखरुफ-51)

तो जल्दी करके स्वयं को लज्जा के गढ़े में न डालते परन्तु अवश्य था कि जो कुछ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे इस युग के लिए पहले से फ़रमाया था वह सब पूरा हुआ और दूसरा धोखा इन कच्चे ऐतराज़ करने वालों को यह भी लगा कि वह भविष्यवाणी की श्रेष्ठता और प्रकटन की खूबी को केवल इसी सीमा

तक समाप्त कर बैठे, हालांकि जिस इल्हाम पर इस भविष्यवाणी की हालत आधारित है उसमें ये वाक्य भी हैं -

اطلع اللہ علی ھمہ وغمہ ولن تجد لسنۃ اللہ تبدیلا۔ ولا تعجبوا ولا تحزنوا وانتم الاعلون ان کنتم مؤ منین۔ وبعزتی وجلالی انک انت الاعلی۔ ونمزق الاعداء کل ممزق۔ ومکر اولئک ھو یبور۔ انا نکشف السرعن ساقہ۔ یو مئذ یفرح المؤ منون۔ ثلۃ من الاٰخرین وھذۃ تذکرۃ فمن شاء اتخذ الی ربۃ سبیلا (देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-2)

यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक इल्हाम के लिए वह ख़ुदा की सुन्नत बतौर **इमाम, दारोगा** और **पथ-प्रदर्शक** के है जो पवित्र क़ुर्आन में आ चुकी है और संभव नहीं कि कोई इल्हाम इस सुन्नत (नियम) को तोड़ कर प्रकटन में आए क्योंकि इस पवित्र लेख पत्रों का झूठा होना अनिवार्य आता है। फिर जबकि क़ुर्आन की शिक्षा ने स्पष्ट तौर पर बता दिया कि ऐसा रुजू भी सांसारिक अज़ाब में विलम्ब डाल देता है जो केवल हृदय के साथ हो और इसके साथ ऐसा अपूर्ण भी हो जो अमन के दिनों में स्थापित न रहे। तो फिर क्योंकर संभव था कि आथम अपने इस रुजू से लाभ न उठाता अपितु यदि यह शर्त इल्हाम में भी मौजूद न होती तब भी इस ख़ुदा की सुन्नत से लाभ उठाना आवश्यक था। क्योंकि कोई इल्हाम इन सुन्नतों को झूठा नहीं कर सकता जो पवित्र क़ुर्आन में आ चुकी हैं अपितु ऐसे अवसर पर इल्हाम में गुप्त शर्त का इक़रार करना पड़ेगा। जैसा कि इस पर समस्त नेक लोगों और ख़ुदा के वलियों की सहमति है।

(14) चौदहवां आरोप - वास्तव में आथम साहिब की

ज्ञानेन्द्रियां क़ायम नहीं हैं और अब तक कुछ भयभीत हैं। इसलिए पादरी लोग उनको क़सम खाने पर तैयार नहीं कर सकते, इस आशंका से कि शायद क़सम खाने के समय इस्लाम का इक़रार ही न कर लें।

उत्तर - यदि आथम साहिब के हवास में विकार है तो प्रश्न यह है कि क्या यह विकार भविष्यवाणी से पहले भी मौजूद था या भविष्यवाणी के बाद ही प्रकटन में आया। यदि भविष्यवाणी के पहले मौजूद था तो ऐसा विचार स्पष्ट तौर पर ग़लत है क्योंकि वह इस हालत में बहस के लिए कैसे और क्यों चुने गए और अद्भुत यह कि स्वयं डॉक्टर ने उनको इस बहस के लिए चुना था। तो इसके अतिरिक्त क्या कह सकते हैं कि उस समय डॉक्टर मार्टिन क्लार्क के हवास में भी विकार था और यदि यह विकार भविष्यवाणी के बाद में पैदा हुआ तो फिर वह भविष्यवाणी के प्रभावों में से एक प्रभाव समझा जाएगा, और निश्चित अज़ाब का एक भाग समझा जाएगा। इस स्थिति में यह भी मानना पड़ेगा कि जैसा कि अधिकांश लोगों का विचार है कि जो लेख आथम साहिब की ओर से नूर अफ़्शां में प्रकाशित किए गए हैं या जो उनके पत्र कुछ लोगों को पहुंचे हैं ये बातें उनके दिल-व-दिमाग़ से नहीं निकलीं अपितु तोते की तरह उनके मुंह से निकलवाई गईं या लिखवाई गई हैं, अन्यथा उनको मालूम नहीं कि उनके मुंह से क्या निकला या उनके क़लम ने क्या लिखा क्योंकि जब हवास में विकार है तो किसी बात पर क्या विश्वास।

दूसरा भाग
इस विज्ञापन का विशेष तौर पर आथम साहिब की सेवा में बतौर पत्र के है और वह यह है

एक ख़ुदा के बन्दे की ओर से अल्लाह उसे क्षमा करे और सहायता। आथम साहिब को ज्ञात हो कि मैंने आप का वह पत्र पढ़ा जो आप ने नूर अफ़्शां में 21 सितम्बर 1894 ई० के पृष्ठ-10 में छपवाया है परन्तु अफ़सोस कि आप उस पत्र में दोनों हाथ से प्रयास कर रहे हैं कि सच प्रकट न हो। मैंने ख़ुदा से सच्चा और पवित्र इल्हाम पाकर निश्चित एवं ठोस तौर पर जैसा कि सूर्य दिखाई देता है, मालूम कर लिया है कि आपने भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर इस्लामी श्रेष्ठता और सच्चाई का गहरा प्रभाव अपने हृदय पर डाला और इसी आधार पर भविष्यवाणी के घटित होने का रंज-व-ग़म आप के हृदय पर पूर्ण श्रेणी तक विजयी हुआ। मैं महा तेजस्वी ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि यह बिल्कुल सही है और ख़ुदा तआला के वार्तालाप से मुझे यह सूचना मिली है और पवित्र हस्ती ने यह सूचना दी है और कि इन्सान के हृदय की कल्पनाओं का जानता तथा उसके गुप्त विचारों को देखता है।★ यदि मैं इस वर्णन में सच पर नहीं तो ख़ुदा मुझे आप से पहले

★**नोट -** कुछ अज्ञानी कहते हैं कि यह इल्हाम पन्द्रह महीने के अन्दर क्यों प्रकाशित न किया। तो स्पष्ट हो कि पन्द्रह महीने के अन्दर ही यह इल्हाम हो चुका था। फिर जब इल्हाम ने अपनी सच्चाई का पूरा सबूत दे दिया तो प्रमाणित बात का इन्कार करना बेईमानी है। इसी से

मृत्यु दे। तो इसी कारण से मैंने चाहा कि आप सार्वजनिक सभा में मौत के अज़ाब की ताकीद के साथ साधन क़सम खाएं ऐसे तरीक़े से जो मैं वर्णन कर चुका हूं ताकि मेरा और आपका फ़ैसला हो जाए तथा संसार अंधकार में न रहे। यदि आप चाहेंगे तो मैं भी एक वर्ष या दो वर्ष या तीन वर्ष के लिए क़सम खा लूंगा क्योंकि मैं जानता हूं कि **सच्चा कदापि बरबाद नहीं हो सकता अपितु वही मरेगा जिसको झूठ ने पहले से मार दिया है।** यदि इल्हाम की सच्चाई तथा इस्लाम की सच्चाई पर मुझे क़सम दी जाए तो मैं आप से एक पैसा नहीं लेता, परन्तु आप के क़सम खाने के समय **तीन हज़ार के थैले पहले प्रस्तुत किए जाएंगे** या कानून के अनुसार तहरीर लेकर पहले ही दे दिए जाएंगे। यदि मैं रुपये देने में थोड़ा भी विलम्ब करूं तो उसी मज्लिस में झूठा ठहर जाऊंगा, **परन्तु वह रुपया एक वर्ष तक आप के ज़मानतदारों के पास रहेगा**। फिर आप जीवित रहे तो आप का स्वामित्त्व हो जाएगा और यदि इसके अतिरिक्त मेरे लिए मेरे झूठे निकलने की स्थिति में मृत्यु-दण्ड भी प्रस्तावित हो तो ख़ुदा की क़सम उसको भुगतने के लिए भी तैयार हूं। किन्तु अफ़सोस से लिखता हूं कि अब तक आप इस क़सम के खाने के लिए **तैयार नहीं हुए यदि आप सच्चे हैं और मैं ही झूठा हूं** तो क्यों मेरे सामने सार्वजनिक जल्से में मृत्यु के अज़ाब के साथ प्रतिबंधित क़सम क्यों नहीं खाते। परन्तु आप के ये लेख जो अखबारों में या पत्रों के द्वारा आप प्रकाशति कर रहे हैं सच्चाई और ईमानदारी के **सर्वथा विरुद्ध** हैं क्योंकि ये बात एक प्रतिवादी की हैसियत से आप के मुंह से निकल रही हैं जो कदापि विश्वसनीय नहीं और मैं जानता हूं कि एक गवाह की हैसियत से सार्वजनिक जल्से में उपस्थित हों कुछ

ऐसे विशेष लोगों के जल्से में जिनकी संख्या दोनों पक्षों की स्वीकृति से क़ायम हो जाए। आप भली भांति समझते हैं कि फ़ैसला करने के लिए **अन्तिम उपाय क़सम है**। यदि आप इस फ़ैसले की ओर ध्यान न दें तो आपको अधिकार नहीं पहुंचता कि भविष्य में कभी **ईसाई कहलाएं**। मुझे आश्चर्य पर आश्चर्य है कि यदि आप वास्तविक तौर पर सच्चे और मैं झूठ गढ़ने वाला हूं तो फिर आप क्यों ऐसे फ़ैसले से इन्कार करते हैं जो आकाशीय होगा और केवल सच्चे की सहायता करेगा और **झूठे को मिटा देगा**। कुछ मूर्ख ईसाइयों का यह कहना कि जो होना था हो चुका अजीब मूर्खता और नास्तिकता है वे इस वास्तविक मामले को कैसे और कहां छुपा सकते हैं कि वह पहली भविष्यवाणी दो पहलुओं पर आधारित थी। तो **यदि एक ही पहलू पर फैसले का आधार रखा जाए** तो इस से बड़ी और कौन सी बेईमानी होगी और दूसरे पहलू की परीक्षा का वही माध्यम है जो ख़ुदा के समझाने ने मुझ पर व्यक्त किया। अर्थात् यह कि आप मृत्यु के अज़ाब से प्रतिबंधित क़सम खा जाएं। अब यदि आप क़सम न खाएं और यों ही **बेकार की बातें करने वाले प्रतिवादियों की तरह** अपनी ईसाइयत की अभिव्यक्ति करें तो ऐसे बयान गवाही का आदेश नहीं रखते अपितु पक्षपात् और सच्चाई को छुपाने पर आधारित समझे जाते हैं। तो यदि आप सच्चे हैं तो मैं आप को उस पवित्र शक्तिमान और महा प्रतापी ख़ुदा की क़सम देता हूं कि आप अवश्य तिथि निर्धारित करके सामान्य या विशेष जल्से में उपरोक्त कथित क़सम मृत्यु के अज़ाब से प्रतिबंधित क़सम खाएं ताकि ख़ुदा तआला के हाथ से सत्य और असत्य में फैसला हो जाए।

अब मैं आप को उस अनर्गल वर्णन का जो आप ने नूर अफ़्शां

अखबार में 21 सितम्बर 1894 ई० में छपवाया है **वास्तविकता** व्यक्त करता हूं। क्या वह एक साक्ष्य है जो फ़ैसले के लिए उपयोगी हो सके, कदापि नहीं। वह तो प्रतिवादियों के रंग में एक यकतरफ़ा बयान है जिसमें आप ने झूठ बोलने और सच छुपाने से तनिक भय न किया क्योंकि आप जानते थे कि यह बयान बतौर बयान साक्षी क़सम के साथ प्रतिबंधित नहीं अपितु मूर्खों के लिए एक बच्चे को बहलाने वाली बात है। फिर आप ज़बान दबा कर उसमें यह भी संकेत करते हैं कि **मैं सामान्य ईसाइयों की आस्था ख़ुदा का बेटा उनकी ख़ुदाई के साथ सहमत नहीं** और न मैं उन ईसाइयों से सहमत हूं जिन्होंने आप के साथ कुछ असभ्यता की। फिर आप लिखते हैं कि मेरी आयु लगभग सत्तर वर्ष है तथा इस से पहले इसी वर्ष के नूर अफ़्शां अखबार के किसी पर्चे में छपा था कि आप की आयु चौंसठ वर्ष के लगभग है तो मैं आश्चर्य में हूं इस चर्चा से **क्या लाभ?** क्या आप आयु की दृष्टि से डरते हैं कि शायद मैं मर न जाऊं परन्तु **आप नहीं सोचते कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा के इरादे के अतिरिक्त कोई मृत्यु नहीं पा सकता,** जबकि मैं भी क़सम खा चुका और आप भी खाएंगे। तो जो व्यक्ति हम दोनों में झूठा होगा वह संसार पर हिदायत का प्रभाव डालने के लिए इस संसार से उठा लिया जाएगा। यदि आप चौंसठ वर्ष के हैं तो मेरी आयु भी लगभग साठ वर्ष हो चुकी। **दो ख़ुदाओं की लड़ाई है**। एक इस्लाम का और एक ईसायों का। तो जो **सच्चा** और शक्तिमान ख़ुदा होगा वह अवश्य अपने बन्दे को बचा लेगा। यदि आपकी दृष्टि में कुछ सम्मान **उस मसीह का** है जिसने मरयम सिद्दीक़ा से जन्म पाया तो उस सम्मान की सिफ़ारिश प्रस्तुत करके फिर मैं आप को सर्वशक्तिमान ख़ुदावन्द की क़सम देता हूं आप उस विज्ञापन

के आशय के अनुसार सामान्य मज्लिस में मृत्यु के अज़ाब से प्रतिबंधित क़सम खाएं। अर्थात् यह कहें कि मुझे ख़ुदा तआला की क़सम है कि मैंने भविष्यवाणी की मीआद में इस्लामी श्रेष्ठता एवं सच्चाई का अपने हृदय पर कुछ प्रभाव नहीं डाला और न इस्लाम की ख़ुदाई धाक मेरे हृदय पर छाई और न मेरे हृदय ने इस्लाम को ख़ुदाई धर्म समझा, अपितु मैं वास्तव में मसीह उसके ख़ुदा का बेटा होने उसकी ख़ुदाई और कफ़्फ़ारे पर पूर्ण विश्वास के साथ आस्था रखता रहा। यदि मैं इस बयान में झूठा हूं तो हे शक्तिमान ख़ुदा जो हृदय की कल्पनाओं को जानता है इस धृष्टता के बदले में बड़ा **अपमान** और दुख के साथ **मृत्यु का अज़ाब** एक वर्ष के अन्दर मुझ पर उतरा। यह तीन बार कहना होगा और हम तीन बार आमीन कहेंगे।

अब हम देखते हैं कि आप को मसीह की मौत का कुछ भी पास है या नहीं। अधिक क्या लिखूं।★

وَالسَّلَامُ عَلٰی من اتبع الھدٰی

★**नोट -** मैं यहां डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और पादरी इमादुद्दीन साहिब तथा अन्य पादरी साहिबों को भी हज़रत ईसा मसीह बिन मरयम के सम्मान और प्रतिष्ठा को अपने इस कथन का मध्यस्थ सिफ़ारिश करने वाला ठहराकर महा तेजस्वी ख़ुदा वन्द की क़सम देता हूं कि वे आथम साहिब को मेरी इच्छानुसार क़सम खाने के लिए तैयार करें अन्यथा सिद्ध होगा कि उनके हृदय में हज़रत मसीह को सत्कार और प्रतिष्ठा का लेशमात्र सम्मान नहीं। इसी से।

लेखक मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी

ज़िला गुरदासपुर, 5 अक्टूबर 1894 ई०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

चार हज़ार रुपए के इनाम का विज्ञापन चौथी बार

यह चार हज़ार रुपया 9 सितम्बर 1894 ई० के विज्ञापन की शर्तों के अनुसार तथा 20 सितम्बर 1894 ई० और 5 अक्टूबर 1894 ई० मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब के क़सम खाने पर उनको अविलम्ब दिया जाएगा।

पाठकगण! इस निबंध को ध्यानपूर्वक पढ़ो कि हम इस से पूर्व तीन विज्ञापन भारी इनामी राशि अर्थात् इनामी विज्ञापन एक हज़ार रुपया और इनामी विज्ञापन दो हज़ार रुपया और इनामी विज्ञापन तीन हज़ार रुपया मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब के क़सम खाने के लिए प्रकाशित कर चुके हैं और बार-बार लिख चुके हैं कि यदि मिस्टर आथम हमारे इस इल्हाम से इन्कारी हैं जिसमें ख़ुदा तआला की ओर से हम पर यह प्रकट हुआ कि आथम साहिब भविष्यवाणी के दिनों में ख़ुदा के अज़ाब से इस कारण से मृत्यु नहीं पा सके कि उन्होंने **सच की ओर रुजू कर लिया**। तो वह सामान्य जल्से में क़सम खा लें कि यह बयान सर्वथा बनाया हुआ झूठ है और यदि बनाया हुआ झूठ नहीं बल्कि सच और ख़ुदा की ओर से है और मैं ही झूठ बोलता हूं तो हे शक्तिमान ख़ुदा इस झूठ का दण्ड मुझ पर उतार कि मैं एक वर्ष के अन्दर कठोर अज़ाब उठा कर मर जाऊं तो यह क़सम है जिसकी हम मांग करते हैं।★ और हम यह भी खोल

★**नोट -** आथम साहिब ने 10 अक्टूबर 1894 ई. के नूर अफ़्शां में क़सम की मांग के बारे में यह उत्तर प्रकाशित किया है कि यदि मुझे क़सम देना है तो अदालत में मुझे तलब (मांग) कराइए। अर्थात् बिना जब्र अदालत में क़सम नहीं खा सकता। जैसे उनका ईमान

कर लिख चुके हैं कि इन्साफ़ का कानून आथम साहिब पर अनिवार्य करता है कि वह इस फैसले के लिए क़सम अवश्य खाएं कि वह भविष्यवाणी के दिनों में **इस्लामी सच्चाई** से भयभीत नहीं हुए बल्कि

अदालत के जब्र पर निर्भर है, परन्तु जो सच्चाई की अभिव्यक्ति करने के लिए क़सम नहीं खाते वे मिटा दिए जाएंगे। यरमियाह 14 \ 14

★**नोट -** ईसाई लोग इसलिए बन्दापरस्त हैं कि ईसा मसीह जो एक असहाय बन्दा है उनकी दृष्टि में वही ख़ुदा है और उनका यह कथन सर्वथा व्यर्थ, कपट तथा झूठ बोलने पर आधारित है वे कहते हैं कि हम ईसा को तो एक इन्सान समझते हैं यदि इस बात के हम क़ाइल हैं कि उसके साथ उक़्नूम इब्न का संबंध था, क्योंकि मसीह ने इंजील में कहीं यह दावा नहीं किया कि उक्नूम इब्न से मेरा एक विशेष संबंध है और वही उक़्नूम अल्लाह का बेटा कहलाता है न मैं। अपितु इंजील यह बताती है कि स्वयं मसीह ख़ुदा का बेटा कहलाता था। और जब मसीह को जीवित ख़ुदा की क़सम देकर सरदार काहिन ने पूछा कि क्या तू ख़ुदा का बेटा है तो उसने यह उत्तर न दिया कि मैं तो ख़ुदा का बेटा नहीं अपितु मैं तो वही इन्सान हूं जिसे तीस वर्ष से देखते चले आए हो। हां ख़ुदा का बेटा वह दूसरा उक्नूम है जिसने अब मुझ से लगभग दो वर्ष पूर्व संबंध पकड़ लिया है, अपितु उसने सरदार काहिन को कहा कि हां वही है जो तू कहता है। तो यदि 'ख़ुदा का बेटा' के मायने यहां वही हैं जो ईसाई अभिप्राय लेते हैं तो अवश्य सिद्ध होता है कि मसीह ने ख़ुदाई का दावा किया। फिर क्योंकर कहते हैं कि हम मसीह को इन्सान समझते हैं। क्या इन्सान केवल शरीर और हड्डी का नाम है। **अफसोस** कि इस युग के मूर्ख ईसाई कहते हैं कि क़ुर्आन ने हमारी आस्था को नहीं समझा। हालांकि वे स्वयं इस बात के क़ाइल हैं कि मसीह ने स्वयं अपने मुंह से इब्नुल्लाह होने का दावा किया है। स्पष्ट है कि सरदार काहिन का यह कहना कि क्या तू ख़ुदा का बेटा है उसका उद्देश्य यही था कि तू जो इन्सान है फिर इन्सान होकर ख़ुदा का बेटा कैसे कहलाता

निरन्तर बन्दा परस्त ही रहे।★ क्योंकि जबकि डरने का उनको स्वयं इक़रार है अतएव वह इस इक़रार को **कई बार** रो-रो कर व्यक्त कर चुके हैं तो अब सबूत देना उन्हीं की गर्दन पर है कि वह **इल्हामी**

शेष हाशिया - है? क्योंकि सरदार काहिन जानता था कि यह एक इन्सान और हमारी क़ौम में से **यूसुफ़ नज्जार** की पत्नी का बेटा है। इसलिए अवश्य था कि मसीह सरदार काहिन का वह उत्तर देता जो उसके प्रश्न और हार्दिक इच्छा के अनुसार होता। क्योंकि नबी की शान से दूर है कि प्रश्न कुछ और तथा उत्तर कुछ और हो। तो ईसाइयों के बनावटी सिद्धान्त के अनुसार यह उत्तर होना चाहिए था कि जैसा कि तुम ने सोचा है यह ग़लत है और मैं अपनी इन्सानियत की दृष्टि से कदापि इब्नुल्लाह नहीं कहलाता अपितु इब्नुल्लाह तो द्वितीय उक़्नूम है जिस का तुम्हारी किताबों के अमुक-अमुक स्थान में वर्णन है। परन्तु मसीह ने ऐसा उत्तर न दिया अपितु एक अन्य स्थान में यह कहा है कि तुम्हारे बुज़ुर्ग तो ख़ुदा कहलाए हैं। तो सिद्ध है कि अन्य नबियों की तरह मसीह भी अपने इन्सानी रूह होने की दृष्टि से इब्नुल्लाह कहलाया और शब्द के उचित चरितार्थ होने के लिए पहले नबियों का हवाला दिया। फिर इसके पश्चात् ईसाइयों ने अपने बोध भ्रम से मसीह को वास्तव में ख़ुदा का बेटा समझ लिया तथा दूसरों को बेटा होने से बाहर रखा। तो इसी सही घटना की पवित्र क़ुर्आन ने गवाही दी और यदि कोई यह कहे कि द्वितीय उक़्नूम का मसीह की इन्सानी रूह से ऐसा मिलाप हो गया था कि वास्तव में वे दोनों एक ही चीज़ हो गए थे। इसलिए मसीह ने द्वितीय उक़्नूम के कारण जो उसके अस्तित्व का हूबहू हो गया था ख़ुदाई का दावा कर दिया तो इस वर्णन का अंजाम भी यही हुआ कि ईसाइयों के गुमान के अनुसार मसीह ने अवश्य ख़ुदाई का दावा किया क्योंकि जब द्वितीय उक़्नूम उसके अस्तित्व का हूबहू हो गया और द्वितीय उक़्नूम ख़ुदा है तो इस से यही परिणाम निकला कि मसीह ख़ुदा बन गया। तो यह वही गुमराही का मार्ग है जिस से पहले और बाद के ईसाई तबाह हो गए और क़ुर्आन ने सही फ़रमाया कि ये बन्दा परस्त हैं। इसी से

भविष्यवाणी तथा इस्लामी सच्चाई से नहीं डरे अपितु डरते रहे कि उनको निरन्तर यह अनुभव हो चुका था कि इस भविष्यवाणी से पहले इस ख़ाकसार ने हज़ारों लोगों का ख़ून कर दिया है और अब भी अपनी बात पूरी करने के लिए अवश्य उनका ख़ून कर देगा।★ तो इसी कारण से हमें कानून और न्याय की दृष्टि से अधिकार पहुंचा कि हम जनता पर असल सच्चाई अभिव्यक्त करने के लिए आथम साहिब से क़सम की मांग करें। स्पष्ट है कि यदि कोई किसी के घर में अनुचित हस्तक्षेप करता हुआ पकड़ा जाए तो उसका अपना ही बहाना सुना नहीं जाएगा कि वह हुक़्क़ा पीने के लिए आग लेने आया था अपितु उसके बरी होने तथा सफ़ाई के लिए किसी गवाही की आवश्यकता होगी। तो इसी प्रकार जब आथम साहिब ने अपने पंद्रह महीने की परिस्थितियों तथा इक़रार से सिद्ध कर दिया कि वह भविष्यवाणी के दिनों में अवश्य

★ आथम साहिब ने अपने निरन्तर लेखों में मुझ पर और मेरे कुछ निष्कपट लोगों पर यह आरोप लगाया है कि वे अपनी मृत्यु से इसलिए डरते रहे कि मैं और मेरे कुछ दोस्त उन्हें क़त्ल करने के लिए तैयार थे और जैसे उन्होंने कई बार बर्छियों और तलवारों के साथ आक्रमण करते भी देखा तो इस स्थिति में यदि वह अपने अनुचित आरोपों को सिद्ध न करें तो कम से कम वह इस अपराध के करने वाले हैं जिसकी व्याख्या ताजीरात की धारा 500 में दर्ज है। वह भली भांति जानते थे कि कभी मुझ पर डाकू या ख़ूनी होने का आरोप नहीं लगाया गया और मेरा पिता सरकार में एक नेक नाम रईस था। तो क्या अब तक वह इस अनुचित आरोप से मांग के अन्तर्गत नहीं आए और क्या वह इस व्यर्थ बहाने से कि क़सम खाना मेरे धर्म में सही नहीं अपराध के क़ानून से बरी हो सकते हैं और उन के पक्ष में मृत्यु की भविष्यवाणी उनके निवेदन से थी न कि स्वयं। क्योंकि उन्होंने इल्हामी निशान मांगा था। इसी से।

भयभीत रहे हैं तो निस्सन्देह उन से यह एक ऐसी अनुचित हरकत हुई जो उनकी ईसाइयत की दृढ़ता के विरुद्ध थी और जो हरकत भविष्यवाणी के समय में अपितु कुछ नमूनों को देख कर प्रकटन में आती इसलिए वह इस मांग के अन्तर्गत आ गए कि क्यों यह विश्वास न किया जाए कि भविष्यवाणी के रोबदार प्रभाव ने उन का यह हाल कर दिया था और उन्होंने अवश्य **इस्लामी श्रेष्ठता** का भय अपने हृदय पर डाल लिया था। तो इसी कारण से इन्साफ़ और कानून दोनों उन को विवश करते हैं कि वह हमारी इच्छानुसार क़सम खा कर अपना बरी होना प्रकट करें। परन्तु वह एक झूठा बहाना प्रस्तुत कर रहे हैं कि हमारे धर्म में क़सम खाना **मना** है तो उन का यही उदाहरण है कि एक चोर अनुचित तौर पर प्रवेश करने के समय पकड़ा जाए और उस से सफ़ाई के गवाह मांगे जाएं तो चोर हाकिम को यह कहे कि मेरे धर्म की दृष्टि से यह मना है कि मैं सफ़ाई के गवाह प्रस्तुत करूं या अपने बरी होने के लिए क़सम खाऊं। इसलिए मैं आप की खुशामद करता हूं कि मुझे यों ही छोड़ दो तो जैसा वह मूर्ख चोर अदालत के कानून के विरुद्ध बातें कर के हृदय में यह कच्चा लालच लाता है कि मैं अपनी बरीयत व्यक्त किए बिना यों ही छूट जाऊंगा। इसी प्रकार आथम साहिब अपनी मूर्खता से बार-बार इंजील प्रस्तुत करते हैं और उस आरोप से बरी होने की उन को लेशमात्र चिन्ता नहीं जो स्वयं उनके इक़रार और आचरण से उन पर सिद्ध है। उन्हें इस भविष्यवाणी से पहले जो उनके बारे में की गई अच्छी तरह मालूम था कि अहमद बेग के बारे में जो मृत्यु की भविष्यवाणी की गई थी जिस को नूर अफ़्शां के एडीटर ने छाप भी दिया था तथा जिस के बहुत से विज्ञापन

भी प्रकाशित हो चुके थे वह कैसी सफाई से पूरी हुई। उनको भली भांति स्मरण होगा कि उन्हें मुबाहस: के आयोजित होने के दिनों में इस भविष्यवाणी का पूरी होना उन पर एक पत्र द्वारा व्यक्त कर दिया गया था। तो इसी कारण से इस भविष्यवाणी का ग़म उनके हृदय पर बहुत ही विजयी हुआ★ क्योंकि वह नमूने के तौर पर एक भविष्यवाणी

★वे दार्शनिक जिन का यह कथन है कि ख़ुदा रहम (दया) है और ख़ुदा प्रेम है वे भी इस स्थान में समझ सकते हैं कि एक इन्सान यदि एक समय में अत्यन्त उद्दण्डता, अन्याय, बेईमानी और धृष्टता की हालत में हो तथा दूसरे समय में वही इन्सान अत्यन्त भय, गिड़गिड़ाने और रुजू की हालत में हो तो इन दोनों विभिन्न हालतों का एक ही परिणाम कदापि नहीं हो सकता। तो क्योंकि संभव है कि वह दण्ड की भविष्यवाणी जो उद्दण्डता और धृष्टता की हालत में हुई थी वह आदेश आज्ञापालन और भय की हालत में स्थापित रहे और आज्ञापालन और भय के

★**हाशिया:-** मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी और उसके दामाद के बारे में एक ही भविष्यवाणी थी और अहमद बेग के बारे में भविष्यवाणी का जो एक भाग था वह नूर अफ़्शां में भी प्रकाशित हो चुका था। तो अहमद बेग मीआद के अन्दर मृत्यु पा गया और उसका मरना उसके दामाद तथा उसके समस्त परिजनों के लिए अधिक रंज और ग़म का कारण हुआ। अत: उन लोगों की ओर से **तौब:** और **रुजू के पत्र** और सन्देश भी आए जैसा की हमने 1-6 अक्टूबर 1894 ई. के विज्ञापन में जो ग़लती से 6 सितम्बर लिखा गया है विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया है। तो इस दूसरे भाग अर्थात् अहमद बेग के दामाद की मृत्यु के बारे में ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार विलम्ब डाला गया। जैसा कि हम बार-बार वर्णन कर चुके हैं

नोट - अहमद बेग के दामाद का यह दोष था कि उसने भय का विज्ञापन देख कर उसकी परवाह न की। पत्र भेजे गए उन से कुछ न डरा। सन्देश भेज कर समझाया गया किसी ने इस ओर थोड़ा भी ध्यान न दिया और अहमद बेग से संबंध-विच्छेद न चाहा, अपितु वह सह धृष्टता तथा उपहास में सम्मिलित हुए। तो यही दोष था

का पूरा होना देख चुके थे परन्तु मेरे क़त्ल करने वाले चरित्र के बारे में तो उनके पास कोई नमूना तथा कोई सबूत न था। क्या उनके पास इस बात का कोई सबूत था कि मैं जिसके बारे में मृत्यु की भविष्यवाणी करता हूं उसे स्वयं क़त्ल कर देता हूं। फिर क्या किसी बुद्धिमान का अनुमान इस बात को वैध रख सकता है कि जिस बात का उनके पास खुला-खुला नमूना था बल्कि ईसाई अख़बार भी उस का गवाह था उस अनुभव की हुई तथा आज़माई हुई बात का तो कुछ भी भय उनके हृदय पर नहीं छाया परन्तु कत्ल करने का भय हृदय पर छा गया, जिस के सत्यापन के लिए उनके पास कोई नमूना मौजूद न था

अनुसार कोई दया पूर्ण बात जारी न हो। इसी से।

शेष हाशिया - कि सतर्क करने तथा भयभीत करने की भविष्यवाणियों में ख़ुदा की सुन्नत यही है क्योंकि ख़ुदा कृपालु है और दण्ड के वादे की तिथि को तौबः और रुजू को देख कर किसी अन्य समय पर डाल देना कृपा है और चूंकि उस अनादि वादे की दृष्टि से यह विलम्ब कृपालु ख़ुदा की एक सुन्नत ठहर गई है जो उसकी समस्त पवित्र किताबों में मौजूद है। इसलिए उस का नाम वादा के ख़िलाफ़ करना नहीं है क्योंकि ख़ुदा की सुन्नत का वादा इस से पूरा होता है अपितु वादे का भंग होना इस स्थिति में होता कि जब ख़ुदा की सुन्नत का महान दावा टाल दिया जाता, परन्तु ऐसा होना संभव हीं क्योंकि इस स्थिति में ख़ुदा तआला की समस्त किताबों का झूठा होना अनिवार्य होता है। इसी से

शेष नोट - कि भविष्यवाणी को सुनकर फिर नाता करने पर सहमत हुए और शेख बटालवी का यह कहना कि निकाह के बाद तलाक़ के लिए उन से कहा गया था यह सरासर झूठ है बल्कि अभी तो उनका नाता भी नहीं हो चुका था जबकि उनको वास्तविकता से अवगत कराया गया था और विज्ञापन तो कई वर्ष पहले प्रकाशित हो चुके थे। इसी से

और न सन्देह करने का कोई कारण था क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि कभी मैंने कोई अत्याचारपूर्ण हरकत की या कभी छोटी सी भी डांट-फटकार का कोई मुकद्दमा मुझ पर दायर हुआ। तो जब मेरे पहले कर्म किसी बुराई की संभावना पैदा नहीं करते थे और दूसरी ओर भविष्यवाणी के पूरा होने की संभावना आथम साहिब की दृष्टि में कई कारणों से सुदृढ़ थी क्योंकि वह अहमद बेग की मृत्यु की भविष्यवाणी का पूरा होना मुझ से सुन चुके थे और उस भविष्यवाणी की हालत मेरे विज्ञापनों और नूर अफ़्शां अख़बार में पढ़ चुके थे और न केवल इतना ही अपितु उनके बारे में भविष्यवाणी जिस शक्ति, प्रताप और ज़ोरदार दावे से वर्णन की गई वह भी उनको मालूम था। तो अब स्पष्ट है कि ये समस्त बातें मिलकर हृदय पर ऐसे दृढ़ प्रभाव डालती हैं कि ताज़ा से ताज़ा नमूना देख चुका है। तो जबकि एक ओर भय और डर के ये सामान मौजूद हों और दूसरी ओर स्वयं इक़रार हो कि मैं स्वयं भविष्यवाणी के दिनों में **अवश्य भयभीत रहा**। तो क्या अब तक वह इस **मांग** के अन्तर्गत नहीं आ सके कि हमें वह क़सम खा कर सन्तुष्ट करें कि इस क़सम का डर जिसके सामान, प्रेरक और नमूने उनकी नज़र के सामने मौजूद थे वे उनके हृदय पर कदापि विजयी नहीं हुआ अपितु उन तलवारों तथा बर्छियों ने उनको डराया जिन का वास्तव में कुछ भी अस्तित्व न था। बहर हाल इस दावे के सबूत का दायित्व उनकी गर्दन पर है कि यह जान का भय जिसका वह कई बार इक़रार कर चुके इस्लामी श्रेष्ठता के प्रभाव और भविष्यवाणी के **रोब** से नहीं अपितु किसी अन्य कारण से था। परन्तु अफ़सोस कि आथम साहिब ने तीन विज्ञापन जारी होने

के बावजूद अब तक इस ओर ध्यान नहीं दिया और अपना बरी होना प्रकट होने के लिए उस सन्तोषजनक उपाय को ग्रहण नहीं किया जिस से मुझ मांग का अधिकार रखने वाले की सन्तुष्टि हो सकती। क्या इसमें कुछ सन्देह है कि मुझ पर अनुचित आरोप लगाने के कारण कानून, न्याय और सामान्य तौर पर सच के सबूत की मांग का अधिकार प्राप्त है और क्या इसमें कुछ सन्देह है कि इस बात का सबूत उनके ज़िम्मे है कि वह क्यों पन्द्रह महीने तक डरते रहे। मैं अभी वर्णन कर चुका हूं कि डरने के प्रमाणित कारण मेरे इल्हाम के स्पष्ट समर्थक हैं क्योंकि भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा एवं शक्ति मेरे ज़ोरदार शब्दों से उनके हृदय में जम चुकी थी और भविष्यवाणी की सच्चाई का नमूना मिर्ज़ा अहमद बेग की **मृत्यु** थी जिसकी सच्चाई उन पर भली भांति खुल चुकी थी। किन्तु तलवारों से क़त्ल किए जाने का कोई नमूना उन के सामने न था। अतः आथम साहिब पर अनिवार्य था कि इस आरोप को क़सम खा कर अपने सर से दूर कर देते। परन्तु ईसाइयत की पुरानी बेईमानी ने उनको इस ओर आने की अनुमति नहीं दी अपितु यह झूठा बहाना प्रस्तुत कर दिया कि **क़सम खाना हमारे धर्म में मना है**। जैसे ऐसी संतोषजनक गवाही जो क़सम के द्वारा प्राप्त होती और झगड़े को दूर करती तथा आरोप से बरी करती और अमन एवं आराम का कारण होती है तथा जो सच्चाई को व्यक्त करने का अन्तिम माध्यम और अवास्तविक हुकूमतों के सिलसिले में आकाशीय अदालत का रोब स्मरण कराती है और झूठे का मुंह बन्द करती है वह इंजील की शिक्षानुसार **हराम** (अवैध) है जिससे ईसाई अदालतों को बचना चाहिए। परन्तु प्रत्येक प्रवीण व्यक्ति समझ सकता

है कि यह हज़रत ईसा पर सर्वथा झूठा आरोप है। हज़रत ईसा ने कभी गवाही और गवाही की आवश्यक बातों का दरवाज़ा बन्द करना नहीं चाहा। हज़रत ईसा भली भांति जानते थे★ कि क़सम खाना गवाही की **रूह** है और जो गवाही बिना क़सम है वह प्रतिवादियों जैसा बयान है न कि गवाही। फिर वह ऐसी आवश्यक क़समों को जिन पर अन्वेषणों की व्यवस्था का एक भारी आधार है कैसे बन्द कर सकते थे। ख़ुदा की प्रकृति का नियम और इन्सानी प्रकृति-ग्रन्थ तथा इन्सानी अन्तर्आत्मा स्वयं गवाही दे रही है कि झगड़ों के निवारण के लिए अन्तिम सीमा **क़सम** ही **है** और एक ईमानदार इन्सान जब किसी आरोप या सन्देह के अन्तर्गत आ जाता है और कोई मानवीय गवाही प्रस्तुत नहीं कर सकता तो स्वाभाविक तौर पर वह ख़ुदा तआला की गवाही से अपनी ईमानदारी की बुनियाद पर सहायता लेता है और ख़ुदा तआला की गवाही यही है कि वह उस अन्तर्यामी अस्तित्व की क़सम खा कर अपनी सफ़ाई प्रस्तुत करे और झूठा होने की हालत में ख़ुदा तआला की लानत अपने ऊपर डाले। यही अन्तिम फैसले का उपाय नबियों के लेखों से **सिध्द** होता है। परन्तु आथम साहिब कहते हैं कि क़सम खाना मना तथा ईमानदारी के विरुद्ध है। अब हम

★नोट - कोई सच्ची और ख़ुदाई शिक्षा अपराधियों को शरण नहीं दे सकती। तो जबकि आथम साहिब ने उस डर का इक़रार करके जिसे वह किसी प्रकार छुपा नहीं सकते यह आराधिक बहाना प्रस्तुत किया कि यह ख़ाकसार कई बार क़त्ल करने के लिए अग्रसर हुआ था इसलिए हृदय पर मृत्यु का डर विजयी हो गया। तो क्या इंजील आथम साहिब को इस मांग से बचाएगी कि उन्होंने अनुचित आरोप क्यों लगाया। फिर इंजील उनको उस क़सम से कैसे रोक सकती है जिस से उनकी बरीयत हो। इसी से

देखना चाहते हैं कि उनका यह बहाना सही भी है या नहीं। क्योंकि यदि सही है तो फिर वह वास्तव में क़सम खाने से असमर्थ हैं। परन्तु इस बात से तो किसी को इन्कार नहीं कि ईसाइयों के प्रत्येक श्रेणी के मनुष्य क्या धार्मिक और क्या सांसारिक जब किसी गवाही के लिए बुलाए जाएं तो क़सम खाते और इंजील उठाते हैं और एक बड़े से बड़ा पादरी जब किसी अदालत में किसी गवाही को अदा करने के लिए बुलाया जाए तो कभी यह बहाना नहीं करता कि इंजील की दृष्टि से क़सम खाता है अपितु अंग्रेज़ी सरकार के प्रतिज्ञा करने वाले कुल पदाधिकारी तथा पार्लियामेण्ट के सदस्य यहां तक कि गर्वनर जनरल सब हलफ़ उठाने के बाद अपने पदों पर नियुक्त होते हैं तो फिर क्या समझा जाए कि ये समस्त लोग इंजील की शिक्षा पर ईमान रखने से वंचित हैं और केवल एक आथम साहिब संसार में एक मसीही मर्द मौजूद हैं जो हज़रत ईसा की शिक्षा पर उन को ऐसा ही पूर्ण ईमान प्राप्त है जैसा कि पितरस हवारी और पोलूस रसूल को प्राप्त था अपितु यदि यह बात वास्तव में सच है कि इंजील की दृष्टि से क़सम खाना मना है तो फिर आथम साहिब का ईमान पितरस और पोलूस रसूल के ईमान से बहुत आगे बढ़ा हुआ क्योंकि आथम साहिब के निकट क़सम खाना बेईमानी है परन्तु मती अध्याय 26 आयत 72 से सिद्ध होता है कि स्वर्ग की कुंजियों वाले पितरस हवारी ने भी इस बेईमानी से भय नहीं किया और इसके बिना कि कोई क़सम खाने पर आग्रह करे स्वयं ही क़सम खा ली। परन्तु यदि आथम साहिब कहें कि पितरस ईमानदार आदमी नहीं था, क्योंकि हज़रत मसीह ने उसको शैतान की उपाधि भी दी है परन्तु मैं ईमानदार हूं और पितरस से उत्तम। इसलिए

क़सम खाना बेईमानी समझता हूं तो उन की सेवा में निवेदन किया जाता है कि आपके पोलूस रसूल ने भी जो ईसाइयों के कथनानुसार हज़रत मूसा से भी बढ़कर है क़सम खाई है। यदि उसको भी आप ईमान से उत्तर दें तो ख़ैर आप की इच्छा और यदि यह प्रश्न हो कि क़सम खाने का सबूत क्या है तो क्रिनतियांन अध्याय-15, आयत 31 देख लें जिसमें पोलूस साहिब फ़रमाते हैं कि मुझे तुम्हारे उस गर्व की जो हमारे ख़ुदावन्द यसू मसीह से है **क़सम** कि मैं प्रतिदिन मरता हूं। इस स्थान पर दर्शक खूब ध्यान पूर्वक समझें कि जिस हालत में पितरस और पोलूस रसूल क़सम खाएं और आथम साहिब क़सम खाना बेईमानी ठहराएं। अर्थात् शरीअत की निषेध बातों की मद में रखें जिस का करना निस्सन्देह बेईमानी है तो क्या इस से यह परिणाम नहीं निकलता कि आथम के कथनानुसार मसीह के समस्त हवारी और पोलूस रसूल सब इंजील की निधेध बातों के करने वाले और ईमान की सीमाओं से बाहर निकलने वाले थे। क्योंकि उनमें से कुछ ने क़समें खाईं तथा कुछ बेईमानी के कार्यों में इस प्रकार से सम्मिलित हुए कि क़सम खाने वालों से पृथक न हुए और न नेक बातों का आदेश दिया और न घृणित बातों से रोका। परन्तु आज तक आथम साहिब के अतिरिक्त किसी ईसाई ने इस आस्था को **प्रकाशित** नहीं किया कि हज़रत मसीह के समस्त हवारी यहां तक कि पोलूस रसूल भी ईमानी दौलत से खाली और वंचित तथा इंजील की निषेध बातों में **ग्रस्त** थे। केवल अठारह सौ वर्ष के बाद आथम साहिब को यह ईमान दिया गया। आश्चर्य कि इस क़ौम के झूठ और बेईमानी की नौबत कहां तक पहुंच गई कि स्वयं को बचाने के लिए अपने बुज़ुर्गों

को भी ईमान की दौलत से वंचित ठहराते हैं। यदि आथम साहिब जान बचाने के लिए केवल यह बहाना करते कि मुझे आशंका है कि मैं एक वर्ष तक मर न जाऊं तो इस स्थिति में लोगों को केवल इतना ही विचार होता कि इस व्यक्ति का ईमान मसीह की शक्ति और क़ुदरत पर कमज़ोर है और वास्तव में अपने हृदय में उसे सामर्थ्यवान नहीं समझता परन्तु आथम साहिब का यह क़सम के निषेध का बहाना उनकी बेईमानी और रद्दी हालत की स्पष्ट तौर पर क़लई खोलता है क्योंकि इस बहाने पर कोई भी विश्वास नहीं कर सकता कि मसीह के समस्त हवारी और पोलूस रसूल इंजील की निषेध आज्ञाओं में गिरफ़्तार होकर ईमानी दौलत से वंचित रहे और यह ईमान आथम साहिब के ही हिस्से में आया, और फिर मुझे यह दावा भी सर्वथा झूठ मालूम होता है कि आथम साहिब ने अब तक किसी अदालत में क़सम नहीं खाई और समस्त हाकिम इस बात पर सहमत रहे कि आथम साहिब किसी गवाही के अदा करने के समय बिना क़सम के अभिव्यक्ति लिखवा दिया करें और न मैं यह विश्वास कर सकता हूं कि यदि आथम साहिब अब भी किसी गवाही के लिए बुलाए जाएं तो यह बाहाना प्रस्तुत करें कि चूंकि मैं पार्लियामेण्ट के सदस्यों और समस्त प्रतिज्ञा करने वाले ईसाई कर्मचारियों यहां तक कि गर्वनर जनरल से भी अधिक ईमानदार हूँ इसलिए क़सम कदापि नहीं खाऊंगा आथम साहिब भली-भांति जानते हैं कि बाईबल में नबियों की क़समें भी वर्णन की गई हैं। **स्वयं मसीह क़मस का पाबन्द हुआ**। देखो

नोट - वह बोला ख़ुदा वन्द की क़सम जिसके आगे मैं खड़ा हूँ। (सलातीन अध्याय-5, आयत-16)

मती अध्याय-27, आयत-26, ख़ुदा ने क़मस खाई देखो आमाल अध्याय-7, आयत-6 और 17, और ख़ुदा का क़सम खाना ईसाइयों की आस्थानुसार मसीह का क़सम खाना है क्योंकि उनके कथनानुसार दोनों एक हैं और जो व्यक्ति मसीह के नमूने पर अपनी आदतों और शिष्टाचार नहीं रखता वह मसीह में से नहीं है। यरमियाह की शिक्षानुसार क़सम खाना इबादत में सम्मिलित है। देखो यरमियाह अध्याय-4, आयत-2, और ज़बूर में लिखा है कि जो झूठा है वही कसम नहीं खाता देखो ज़बूर 63 आयात 11 अतः आथम साहिब के झूठा होने पर **दाऊद नबी** हज़रत ईसा के दादा साहिब भी गवाही देते हैं। फ़रिश्ते भी क़सम खाते हैं देखो मुकाशिफ़ात 10/6 फिर इब्रानियों के अध्याय-6 आयत-16 में मसीहियों का शिक्षक कहता है कि प्रत्येक मुक़द्दमे का अन्त क़सम है अर्थात् प्रत्येक झगड़ा अन्ततः क़सम पर निर्णय पाता है। तौरात में ख़ुदा ने बरकत देने के लिए क़सम खाई। देखो पैदायश अध्याय-22, आयत-16, और फिर अपने जीवन की क़सम खाई। तो कहां तक लिखें और निबंध करें। **बाइबल** में ख़ुदा की **क़समें**, फरिश्तों की **क़समें,** नबियों की **क़समें** मौजूद हैं और इंजील में मसीह की **क़सम** पितरस की **क़सम**, पोलूस की **क़सम** पाई जाती है। इसी पहलू से ईसाइयों के उलेमा ने **क़सम के वैध** होने पर फ़त्वा दिया है देखो इंजील की तफ़्सीर लेखक पादरी क्लार्क और पादरी इमादुद्दीन प्रकाशित-1875 ई०। और मसीह ने ख़ुदा तआला की सच्ची **क़सम** से किसी जगह मना नहीं किया अपितु इस बात से मना किया है कि कोई आकाश की क़सम खाए या पृथ्वी की या यरोशलम की या अपने सर की। और जो व्यक्ति ऐसा समझे कि अल्लाह तआला

की सच्ची क़सम किसी गवाही के समय खाना मना है वह **बड़ा मूर्ख है** और मसीह के आशय को कदापि नहीं समझता। यदि मसीह का आशय ख़ुदा तआला की क़सम का निषेध होता तो वह अपनी विस्तृत इबारत में अवश्य उस का वर्णन करता, परन्तु उसने मती अध्याय-5, आयत-33 में "क्योंकि" के शब्द से केवल यह समझाना चाहा कि तुम आकाश, पृथ्वी, यरोशलम और अपने अस्तित्व की क़सम न खाओ। ख़ुदा तआला की क़सम की इसमें चर्चा भी नहीं और मूसा की शिक्षा पर इसमें यह व्याख्या अधिक है कि केवल झूठी क़सम खाना अवैध नहीं अपितु यदि अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम हो तो यद्यपि सच्ची हो वह भी अवैध (हराम) है। यही कारण है कि इस शिक्षा के बाद हज़रत मसीह के हवारी क़सम खाने से रुके नहीं और स्पष्ट है कि हवारी इंजील का मतलब आथम साहिब से उत्तम समझते थे और प्रारंभ से आज तक मसीहियों के अधिकांश समुदायों में क़सम के वैध होने पर सहमति चली आई है। फिर अब सोचना चाहिए कि जब पितरस ने क़सम खाई, पोलूस ने क़सम खाई, फ़रिश्तों ने क़सम खाई, नबियों ने क़समें खाई, मसीहियों के ख़ुदा ने क़सम खाई और समस्त पादरी थोड़े-थोड़े मुकद्दमों पर क़समें खाते हैं, पार्लियामेन्ट के सदस्य क़समें खाते हैं प्रत्येक गवर्नर जनरल क़सम खाकर आता है तो फिर आथम साहिब ऐसे आवश्यक समय पर क्यों क़सम नहीं खाते, हालांकि वह स्वयं अपने इस इक़रार से कि मैं भविष्यवाणी के बाद मौत से अवश्य डरता रहा हूं ऐसे आरोप के नीचे आ गए हैं कि वह आरोप क़सम खाने के बिना उनके सर से किसी प्रकार दूर नहीं हो सकता★ क्योंकि डरना

★**नोट -** इल्हामी भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से डरना पवित्र क़ुर्आन की व्याख्या

रुजू का एक प्रकार है। उनके इक़रार से सिद्ध हुआ। तत्पश्चात् वह सिद्ध कर सके कि वह केवल क़त्ल किए जाने से डरते थे। न उन्होंने आक्रमण करते समय किसी क़ातिल को पकड़ा, न उन्होंने यह सबूत दिया कि उन से पहले कभी इस ख़ाकसार ने कुछ आदमियों का ख़ून कर दिया था जिसके कारण उन के हृदय में भी धड़का बैठ गया कि इसी प्रकार मैं भी मारा जाऊंगा अपितु यदि कोई नमूना उनकी नज़र के सामने था तो केवल यही कि मौत की एक भविष्यवाणी अर्थात् मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी की मौत उनके सामने प्रकटन में आई थी। इसलिए जैसा कि ख़ुदा के इल्हाम ने बताया अवश्य वह

के अनुसार तथा बाइबल के रुजू में सम्मिलित है और रुजू अज़ाब में विलम्ब डालता है। इस पर क़ुर्आन और बाइबल दोनों की सहमति है। इसी से।

नोट - एक सज्जन पेशावर से लिखते हैं कि यदि अज़ाब की भविष्यवाणी हार्दिक तौर पर रुजू करने से टल जाती है तो वह सच्चाई का मापदण्ड कदापि नहीं ठहर सकती और उस पर बल नहीं दिया जा सकता। परन्तु अफ़सोस कि वह नहीं समझते कि क़सम भी ख़ुदा के नज़दीक जब इन्कारी पर न्याय के अनुसार क़सम अनिवार्य हो सच्चाई का एक मापदण्ड है जिसको अल्लाह की किताब ने इन्कारी पर शरीअत की हद जारी करने के लिए विश्वसनीय समझा है। फिर जिस व्यक्ति ने चार हज़ार रुपए तक समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने की रक़म लेकर क़सम खाने का साहस न किया तो क्या उसने अपने कार्यों से सिद्ध न कर दिया कि उसने अवश्य सच्चाई की ओर रुजू किया था और जिस कानूनी मांग से अर्थात् क़सम से अपराधी ने बहुत इन्कार किया तो क्या वह सच्चाई का मापदण्ड नहीं और क्या वह अब तक इन्कार किए जाता है कैसी कुधारणा है। यदि वह वास्तविक तौर पर इन्कारी होता तो फिर ऐसी क़सम के खाने से जिसका खाना उस पर न्याय के अनुसार अनिवार्य था क्यों

भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से डरे और यह बात वर्तमान वृत्तांत से सर्वथा विरुद्ध है कि वह भविष्यवाणी की अनुभव में आई हुई सच्चाई से नहीं डरे अपितु हमारा ख़ूनी होना जो एक अनुभव की दृष्टि से एक अनुसंधानात्मक बात थी उस से डर गए तो इस आरोप से इसके अतिरिक्त क्योंकर बरी हो सकते हैं कि एक **गवाह** की हैसियत से क़सम खाएं और पोलूस रसूल के कथनानुसार कि **प्रत्येक मुकद्दमे की सीमा (अन्त) क़सम है** इस संदिग्ध बात का फैसला कर लें। परन्तु यह अन्तिम श्रेणी की मक्कारी और बेईमानी है कि क़सम की ओर तो रुजू न करें और यों ही सच छुपाने के तौर पर जगह-जगह

शेष नोट - इन्कार करता। तो उसका क़सम न खाना ही इक़रार है जिसे सद्बुद्धि समझती है और यह कहना कि उसका कोई उदाहरण नहीं दूसरी कुधारणा है। समरूपता के उदाहरण बता दिए गए हैं ध्यान पूर्वक पढ़ो और यह कहना कि एक झूठा भी मौत की ऐसी भविष्यवाणी करके उसके घटित न होने के समय यह बहाना प्रस्तुत कर सकता है कि हार्दिक रुजू के कारण अज़ाब टल गया है यह भी न्याय और विचार करने से दूर है अपितु सच और ईमान की बात है कि यदि कोई अन्य व्यक्ति भी ऐसी ही भविष्यवाणी करे और यही समस्त घटनाएं हों तो कानून और न्याय से दूर होगी कि ऐसे व्यक्ति को हम झूठा कहें जिस की सच्चाई दोषी के इन्कार से प्रकट हो रही हो अपितु झूठा वही कहलाएगा जो इस मांग से बचे जो न्याय की दृष्टि से उस पर लागू होता है। अर्थात् क़सम न खाए। फिर ख़ुदा तआला ने उस भविष्यवाणी को केवल यहां तक तो सीमित नहीं रखा और उसके कार्यों में गहरी हिक्मतें और हित हैं और अंजाम स्पष्ट विजय है। फिर उन पर अफ़सोस जो जल्दबाज़ी से अपने ईमान और परलोक को बरबाद कर रहे हैं और जितना एक किसान मूली-गाजर का बीज बोकर एक समय तक मूली और गाजरों की प्रतीक्षा करता है, इन लोगों में इतना भी सब्र नहीं। इसी से।

पत्र भेजें और अखबारों में छपवाएं कि मैं **ईसाई हूं और ईसाई था।**

हे साहिब! आप क्यों ख़ुदा की जनता को धोखा देते हैं। आप के इन प्रतिवादियों जैसे वर्णन को वही लोग स्वीकार करेंगे जिन का शैतानी तत्त्व पहले से यही चाहता है कि सच प्रकट न हो अन्यथा प्रत्येक बुद्धिमान मुंसिफ़ जानता है कि आप का बयान केवल गवाह की हैसियत से विश्वसनीय हो सकता है न कि उन व्यर्थ बातों से जो आप प्रकाशित कर रहे हैं। **संसार में ईसाई धर्म झूठ बोलने में प्रथम श्रेणी पर है** जिन्होंने ख़ुदा की किताबों में भी बेईमानी करने से संकोच नहीं किया और सैकड़ों **जाली** किताबें बना लीं। तो क्या एक भला मानुष उनके प्रतिवादियों जैसे बयान को स्वीकार कर सकता है कदापि नहीं। अपितु यदि एक व्यक्ति ईमानदार भी हो तो वह मुकद्दम: का एक सदस्य बन कर इस बात का पात्र कदापि नहीं कि उस का बयान जो वादी की हैसियत से या प्रतिवादी की हैसियत से है इस प्रकार से स्वीकार किया जाए कि जैसे गवाहों के बयान स्वीकार किए और यदि ऐसा होता तो अदालतों को गवाहों की कुछ भी आवश्यकता न होती। गवाही के क़ानून में एक अंग्रेज़ ने यह बात खूब लिखी है कि यदि अमुक व्यापारी जो करोड़ों रुपए के धन का सम्मान रखता है और सैकड़ों रुपया प्रतिदिन सद्क: (दान) के तौर पर देता है यदि किसी पर एक पैसे का दावा करे तो यद्यपि वह कैसा ही धनवान, दानी और सखी समझा गया है परन्तु पूर्ण गवाही के बिना डिग्री नहीं हो सकती।

तो अब बताओ कि आथम साहिब का एकतरफ़ा बयान जो केवल दावे के तौर पर कामवासना संबंधी उद्देश्यों से भरा हुआ और

वर्तमान वृत्तान्त के विपरीत है क्योंकर स्वीकार किया जाए और कौन सी अदालत उस पर विश्वास कर सकती है। यह ख़ुदा तआला की कृपा है कि केवल हमारे इल्हाम पर निर्भर नहीं रहा बल्कि आथम साहिब ने स्वयं मौत के डर का इक़रार अखबारों में छपवा दिया और जगह-जगह पत्रों में इक़रार किय। अब यह बोझ आथम साहिब की गर्दन पर है कि अपने इक़रार को बिना सबूत न छोड़ें अपितु क़सम के उपाय से एक आसान उपाय है जो हमारे नज़दीक निश्चित और विश्वसनीय है हमें सन्तुष्ट कर दें कि वह भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से नहीं डरे अपितु वह वास्तव में हमें एक ख़ूनी इन्सान विश्वास करते और हमारी तलवारों की चमक देखते थे और हम उन्हें कुछ भी कष्ट नहीं देते अपितु इस **क़सम पर चार★ हज़ार रुपया 9, सितम्बर और 20 सितम्बर 1894 ई० के विज्ञापन** की शर्तों के अनुसार उन्हें भेंट करेंगे। हमने सिद्ध कर दिया है कि उन का यह बहाना कि मसीहियों को क़सम खाने का **निषेध** है बड़ी हठधर्मी और बेईमानी हैं। क्या पितरस और पोलूस और बहुत से ईमानदार ईसाई जो प्राथमिक युग में गुज़र चुके **मसीही नहीं थे** या वे बेईमान थे? क्या आथम साहिब इस सरकार में किसी एक प्रतिष्ठित ईसाई का हवाला दे सकते हैं जिसने गवाही के लिए उपस्थित होकर क़सम खाने से **इन्कार** किया हो। अब उचित है कि यदि आथम साहिब को बहरहाल बहाने बनाना ही पसन्द है तथा किसी प्रकार क़सम खाना नहीं चाहते तो इस व्यर्थ बहाने को **अब छोड़** दें कि क़सम खाना वर्जित है क्योंकि हम ने पूर्ण

★नोट - यह चार हज़ार रुपया आथम साहिब का निवेदन आने के पश्चात् पांच सप्ताह में उनके पास उपस्थित किया जाएगा। इसी से।

रूप से इसका उन्मूलन कर दिया है अपितु चाहिए कि अपने दज्जालों के मशवरे से जान बचाने के लिए कोई नया बहाना प्रस्तुत करें और **नीम ईसाई** स्मरण रखे कि आथम साहिब कभी क़सम नहीं खाएंगे बल्कि इस बहाने को छोड़ कर कोई अन्य दज्जाली बहाना निकालेंगे क्योंकि हमारे बारे में वह अपने हृदय में जानते हैं कि हम सच्चे और हमारा इल्हाम सच्चा है परन्तु कोई बहाना काम नहीं आएगा जब तक मैदान में आकर हमारे सामने आकर क़सम न खाएं। निस्सन्देह आथम साहिब समस्त पादरियों और अधूरे ईसाइयों के मुंह पर स्याही मल रहे हैं जो क़सम नहीं खाते।

एक ईसाई साहिब लिखते हैं कि रुपया देना केवल हंसी-ठट्ठा है। अर्थात् आथम साहिब क़सम तो खा लें परन्तु उनको यह धड़का है कि रुपया नहीं मिलेगा। तो स्मरण रहे कि यह सर्वथा व्यर्थ बातें करना और डोमों की तरह केवल नास्तिकों वाला कलाम है। हम अहद (प्रतिज्ञा) करते हैं कि हम क़सम खाने से पहले कानूनी तौर पर दस्तावेज़ लेकर 9, सितम्बर तथा 20 सितम्बर 1894 ई० के विज्ञापन की शर्तों के अनुसार कुछ रुपया आथम साहिब के ज़मानतदारों के सुपुर्द कर देंगे और हमें स्वीकार है कि आथम साहिब के दो दामाद हैं जो प्रतिष्ठित पदों पर हैं ज़ामिन (प्रतिभू) हो जाएं। यदि हम तमस्सुक (दस्तावेज़) पूर्ण करने के बाद रुपया देने में एक पल की भी देर करें तो निस्सन्देह हम झूठे ठहरेंगे और ज़ामिनों को अधिकार होगा कि हमें आथम साहिब की दहलीज़ में पैर न रखने दें जब तक तमस्सुक पूर्ण करने के बाद रुपया वुसूल न कर लें तथा ऐसा प्रबंध होगा कि दस प्रतिष्ठित गवाहों के सामने तथा उनके माध्यम से रुपया दिया जाएगा

और तमस्सुक लिया जाएगा और उन दस गवाहों की तमस्सुक पर गवाही होगी और वह तमस्सुक कुछ अखबारों में छपवा दिया जाएगा और उसमें ज़ामिनों की ओर से यह इक़रार होगा कि यदि तमस्सुक की तिथि से एक वर्ष तक भविष्यवाणी पूरी न हुई और आथम साहिब सही-सलामत रहे तो यह कुल रुपया आथम साहिब का स्वामित्व हो जाएगा अन्यथा ज़ामिन कुल रुपया अविलम्ब वापस करेंगे। अब अन्त में हम पुनः आथम साहिब को हज़रत मसीह के सम्मान को बतौर सिफ़ारिश करने वाला प्रस्तुत करके उस जीवित ख़ुदा की क़सम देते हैं जो झूठों और सच्चों को खूब जानता है कि इस फ़ैसले के तरीक़े को कदापि अस्वीकार न करें। वह तो स्वयं हमारे कथनानुसार हमारा झूठा होना तथा हमारे इल्हाम का झूठा होना और मसीह का सहायक और मददगार होना अनुभव कर चुके अब अनुभव के बाद क्यों मरे जाते हैं और बार-बार कहते हैं कि मेरी आयु लगभग 64 या 68 वर्ष की है। हे साहिब **साठा-पाठा** के कथनानुसार आप तो अभी **बच्चे** हैं कौन सी बड़ी आयु हो गई है। इसके अतिरिक्त हम पूछते हैं कि क्या जीवित रखना ख़ुदा तआला के हाथ में नहीं। यह कैसी बेईमान क़ौम है जो स्वयं को सच्चा समझ कर फिर भी ख़ुदा तआला पर भरोसा नही कर सकती। देखो मेरी आयु भी तो लगभग 60 वर्ष है तथा हम और आथम साहिब एक ही प्रकृति के नियम के अधीन हैं परन्तु मैं जानता हूं कि ख़ुदा तआला मुक़ाबले के समय मुझे अवश्य जीवित रख लेगा। क्योंकि हमारा ख़ुदा सामर्थ्यवान, जीवित रहने तथा हमेशा क़ायम रहने वाला है। असहाय मरयम के बेटे की तरह नहीं। और हम इस विज्ञापन के बाद फिर एक सप्ताह तक प्रतीक्षा करेंगे।

हे हमारी क़ौम के अंधो, अर्ध ईसाइयो! क्या तुम ने नहीं समझा कि किस की विजय हुई क्या सच पर रहने वाले मनुष्य की वे निशानियाँ हैं जो आथम साहिब प्रकट कर रहे हैं या ये निशानियां जो उन भयपूर्ण और निरन्तर विज्ञापनों से स्पष्ट हो रही हैं, क्या यह **दृढ़ता** किसी झूठे में आ सकती है जब तक ख़ुदा तआला उसके साथ न हो, और यदि कहो कि यह सब सच परन्तु निशान कौन सा प्रकट हुआ तो इस का उत्तर यह है कि हम कई बार लिख चुके हैं कि इस भविष्यवाणी के शक्तिशाली प्रभाव निशान के तौर पर विरोधी पक्ष पर अवश्य पड़े और जैसा कि पराजित लोगों का हाल होता है यही बुराहाल इस जंग-ए-मुक़द्दस में उन का हुआ और चारों स्थितियां **अपमान और तबाही** की उनके सामने आईं और अभी बस नहीं क्योंकि ख़ुदा तआला वादा फ़रमाता है कि **मैं बस नहीं करूंगा जब तक अपने शक्तिशाली हाथ को न दिखाऊं और पराजित हुए गिरोह का अपमान सब पर प्रकट न करूं**। हां उसने अपनी उस आदत और सुन्नत के अनुसार जो उसकी पवित्र किताबों में दर्ज है आथम साहिब के बारे में विलम्ब डाल दिया क्योंकि अपराधियों के लिए ख़ुदा की किताबों में यह अनादि वादा है जिसे भंग करना वैध नहीं कि भयानक होने की हालत में उनको कुछ छूट (मुहलत) दी जाती है और फिर आग्रह के पश्चात् पकड़े जाते हैं और अवश्य था कि ख़ुदा तआला अपनी पवित्र किताबों के वादे का ध्यान रखता क्योंकि उस पर वादे के विरुद्ध करना वैध नहीं, परन्तु जो इल्हामी इबारतों में तिथियां निर्धारित हैं वे कभी उन ख़ुदा की सुन्नत के वादों से जो क़ुर्आन में दर्ज हैं विरुद्ध नहीं हो

सकतीं क्योंकि कोई इल्हाम ख़ुदा तआला की वह्यी की प्रस्तावित शर्तों से **बाहर नहीं हो सकता**। अब यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो एक वर्ष का वादा ठोस एवं निश्चित है जिस के साथ कोई भी शर्त नहीं और अटल प्रारब्ध (तक़्दीर) है। और यदि क़सम न खाएं तो फिर भी ख़ुदा तआला ऐसे अपराधी को दण्ड के बिना नहीं छोड़ेगा जिस ने सच को छुपा कर संसार को धोखा देना चाहा परन्तु हम इस अन्तिम कथित भाग के बारे में अभी केवल इतना कहते हैं कि ख़ुदा तआला ने अपने निशान को एक अद्भुत तौर पर दिखाने का इरादा किया है जिस से संसार की आंख खुले और अंधकार दूर हो और वे दिन निकट हैं दूर नहीं, परन्तु उस समय और घड़ी (पल) का ज्ञान जब दिया जाएगा तब उसको प्रकाशित कर दिया जाएगा। والسلام علی من اتبع الھدی

शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी

हमें एक निष्कपट के द्वारा ज्ञात हुआ है कि बटालवी साहिब ने उस भविष्यवाणी के संबध में तथा 6 अक्टूबर 1894 ई० के विज्ञापन के संबंध में जो अहमद बेग के दामाद के बारे में प्रकाशित किया गया था कुछ ऐतराज़ किए हैं जिनका उत्तर ऐतराज़ की व्याख्या सहित नीचे लिखता हूं -

---

★**नोट -** यदि मियां मुहम्मद हुसैन बटालवी आथम साहिब की वकालत करके यह राय व्यक्त करते हैं कि ईसाई धर्म में क़सम खाना मना है तो उस पर अनिवार्य है कि ईसाइयों के सहायक बन कर अपने इस बकवास का पूरा-पूरा सबूत दें और इस विज्ञापन का खण्डन लिखाएं अन्यथा इस के अतिरिक्त और क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत।

उसका कथन - बेचारा अब्दुल्लाह आथम ईसाई, उनके धर्म में क़सम खाना मना है, लालच करना मना है।

मेरा कथन - यदि क़सम खाना मना है तो पितरस ने क्यों क़सम खाई, पोलूस ने क्यों क़सम खाई, स्वयं मसीह ने क्यों क़सम की पाबन्दी की? अंग्रेज़ी अदालतों ने क्यों ईसाइयों के लिए क़सम निर्धारित की? अपितु कानून की दृष्टि से दूसरों के लिए नेक इक़रार और ईसाइयों के लिए क़सम है। अक्षरांतरण करना धोखा देना यहूदियों और ईसाइयों की आदतों में से है परन्तु न मालूम कि इन मौलवियों ने क्यों यह आदतें अपनाईं? अतः हे इस्लाम के शत्रुओ! इन बेईमानियों से रुक जाओ। क्या यहूदियों का अंजाम अच्छा हुआ कि जो तुम्हारा भी अच्छा अंजाम हो। लालच और लोभ है जो ईमानदारी और धर्म के विरुद्ध हो. अतः जबिक हम इनाम के तौर पर स्वयं रुपया प्रस्तुत करते हैं और आथम साहिब अपनी स्वयं की इच्छा से नहीं बल्कि हम स्वयं देते हैं। और क़सम खाना उनके धर्म में न केवल वैध अपितु लिखा है कि जो क़सम न खाए वह झूठा है। तो ऐसे रुपए का लेना जो नफ़्स के झुकने के बिना है लालाच में कैसे सम्मिलित हुआ।

उसका कथन - यह क़ुर्आन में नहीं कि अज़ाब का वादा आया और कुछ भय से टल गया।

उत्तर - सम्पूर्ण क़ुर्आन इस शिक्षा से भरा हुआ है कि यदि तौबः और क्षमायाचना अज़ाब के आने से पूर्व हो तो अज़ाब उतरने का समय टल जाता है। बाइबल में बनी इस्राईल के एक बादशाह के बारे में लिखा है कि उसके संबंध में स्पष्ट तौर पर वह्यी आ चुकी थी कि उस का जीवन 15 दिन तक है फिर मृत्यु हो जाएगी

परन्तु उसकी दुआ और गिड़गिड़ाने से ख़ुदा तआला ने वह पन्द्रह दिन का वादा पन्द्रह वर्ष के साथ बदल दिया और मौत में विलम्ब डाल दिया। यह क़िस्सा व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने भी लिखा है, अपितु इस प्रकार की अन्य हदीसें बहुत हैं जिनका लिखना लम्बाई का कारण है अपितु अज़ाब के वादे के टलने की जो ख़ुदा की कृपा में सम्मिलित है महान सूफ़ियों का मत है कि कभी वादा भी टल जाता है और उसका टलना अहले कमाल (अल्लाह वालों) की श्रेणियों में उन्नति का कारण होता है देखो ''फ़ुयूज़ुल हरमैन''

★**नोट -** इन बुज़ुर्गों ने जो वादे का पूरा न करना ख़ुदा तआला पर वैध रखा है तो इस से अभिप्राय यही है कि वैध है कि जिस बात को इन्सान ने अपने अपूर्ण ज्ञान के साथ वादा समझ लिया है वह ख़ुदा के ज्ञान में वादा न हो अपितु इस के साथ ऐसी गुप्त शर्तें हों जिन का निश्चित न होना वादे के निश्चित न होने के लिए आवश्यक हो और विद्वाान अन्वेषक सय्यद अली बिन सुलेमान मग़रिबी ने अपनी पुस्तक वशीउद्दीबाज अला सही मुस्लिम बिन अल हज्जाज के पृष्ठ 126 में हदीस يخشى ان تكون الساعة लिखा है।

فانہ صلی اللہ علیہ وسلم لکمال معرفتہ بربہ لا یری وجوب شیء علیہ تعالیٰ ککون الساعۃ لا تقوم الا بعد تلك المقدمات ای خروج الدجال وغیرہ اوان وعدبۃ

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मारिफ़त के कमाल के कारण क़यामत से पहले इन निशानियों का पूर्ण होना आवश्यक नहीं समझते थे और ख़ुदा तआला पर यह अधिकार अनिवार्य नहीं समझते थे कि उसके वादे के अनुसार दज्जाल और दाब्बतुलअर्ज और महदी मौऊद इत्यादि वर्तमान निशानियां पूरी हों फिर क़यामत आए अपितु वह इस बात पर ईमान रखते थे कि संभव है कि क़यामत आ जाए और इन निशानियों में से कोई भी प्रकट न हो और कुछ इसी के अनुसार मवाहिब लदुन्निय: की व्याख्या में लिखा है जो इमाम अल्लाम:

शाह वलीउल्लाह साहिब और फ़ुतूहुल ग़ैब सय्यद अब्दुल क़ादिर जैलानी रज़ि.★ और समयों तथा मीआदों का टलना तो ख़ुदा की एक ऐसी सुन्नत है जिस से एक बड़े मूर्ख के अतिरिक्त कोई इन्कार नहीं कर सकता। देखो हज़रत मूसा को तौरात के उतरने के लिए तीस रात का वादा दिया था और साथ में कोई शर्त न थी, परन्तु वह वादा क़ायम न रहा और उस पर दस दिन और बढ़ा दिए गए जिस से बनी इस्राईल बछड़े की पूजा के फ़ित्ने में पड़े। तो जब इस निश्चित स्पष्ट आदेश से सिद्ध है कि ख़ुदा तआला ऐसे वादे की तिथि को भी टाल देता है जिस के साथ किसी शर्त की व्याख्या नहीं की गई थी तो अज़ाब के वादे की तिथि में रुजू के समय विलम्ब डालना स्वयं कृपा में शामिल है तथा हम उल्लेख कर चुके हैं कि अज़ाब की तिथि किसी की तौब: और क्षमा याचना से टल जाए

मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी की ओर से है तथा ख़बरों के निरस्त होने की वैधता की ओर संकेत किया है। देखो कथित व्याख्या का पृष्ठ 45 परन्तु मेरे नज़दीक इन बुज़ुर्गों का कदापि यह उद्देश्य न होगा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समझते होंगे कि दज्जाल का निकलना तथा महदी का प्रकट होना इत्यादि ये सब वादे तो सच्चे हैं परनतु संभव है कि उनके प्रकट होने के लिए शर्तें हों जिनके अभाव से यह भी नास्ति की अवस्था में रहें और या संभव है कि ये वादे इस प्रकार से प्रकटन में आ जाएं कि उन की जानकारी भी न हो क्योंकि ख़ुदा की सुन्नत में भविष्यवाणी के प्रकटन के लिए कोई एक तौर-तरीका निर्धारित नहीं है। कभी अपने प्रत्यक्ष अर्थों पर पूरी होती हैं और कभी प्रत्यक्ष अर्थों से हटकर (तावील के तौर पर) हां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संयम के तरीक़े से यह सिद्ध हो गया कि इस युग के उलेमा संयम के इस तरीक़े से कुछ दूर जा पड़े हैं। इसी से।

तो उसका नाम वादा भंग करना नहीं क्योंकि बड़ा वादा सुन्नतुल्लाह है। अतः जब ख़ुदा की सुन्नत पूरी हुई तो वादा पूर्ण करना हुआ न कि वादा भंग करना।★

उसका कथन - मौत का अज़ाब यदि क्षमा याचना से टल जाता है तो उसका उदाहरण दो।

उत्तर - हे मूर्ख! इसका उदाहरण क़ुर्आन स्वयं देता है। जैसा कि फ़रमाता है -

لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْ نَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ فَلَمَّآ اَنْجٰهُمْ
اِذَاهُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ (यूनुस-23,24)

अब स्पष्ट है कि इन आय़तों से प्राप्त मतलब यही है कि जब कुछ पापियों को मारने के लिए ख़ुदा तआला अपने प्रकोप पूर्ण इरादे से उस दरिया में तूफ़ान का रंग पैदा करता है जिसमें उन लोगों की

★**हाशिया -** यदि बेचारे शेख बटालवी के दिल को धड़का पकड़ता हो कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (आले इमरान-10) और निश्चित तिथि में न्यूनाधिक करना वादा भंग करने का एख भाग है। तो उसे स्मरण रखना चाहिए कि वादे से अभिप्राय वह मामला है जो ख़ुदा के ज्ञान में बतौर वादा ठहराया जा चुका है न कि वह मामला जो इन्सान अपने विचार के अनुसार उसको निश्चित वादा समझता हो इसी कारण से 'अलमीआद' पर जो अलिफ़ लाम है वह मानसिक प्रतिज्ञा के प्रकार में से है। अर्थात् वह बात जिसे अनादि इबाद में वादे नाम दिया गया है, यद्यपि मनुष्य को उसके विवरण का ज्ञान हो अथवा न हो वह अपरिवर्तनीय है अन्यथा संभव है कि मनुष्य जिस ख़ुशख़बरी को वादे के रूप में समझता है उसके साथ कोई ऐसी शर्त छुपी हो जिस का निश्चित न होना उस ख़ुश ख़बरी के निश्चित न होने के लिए आवश्यक हो। क्योंकि शर्तों का प्रकट करना अल्लाह तआला पर अनिवार्य अधिकार नहीं

कश्ती हो तो फिर उनकी विनय और रुजू पर उनको बचा लेता है। हालांकि जानता है कि वे पुनः उपद्रव पूर्ण गतिविधियों में व्यस्त होंगे। क्या उस तूफ़ान से यह उद्देश्य होता है कि किश्ती वालों को केवल हल्की-हल्की चोटें लगें परन्तु तबाह न हों। हे शेख! थोड़ी शर्म करना चाहिए। इतनी बुद्धि क्यों मारी गई है कि स्पष्ट आदेशों का इन्कार किए जाते हो।

उसका कथन - यूनुस का वादा भी शर्त के साथ था।

उत्तर - फ़त्हुल बयान और इब्ने कसीर और मआलिम को देखो अर्थात् सूरह अलअंबिया, सूरह यूनुस और वस्साफ़्फ़ात की तफ़्सीर पढ़ो तथा तफ़्सीर कबीर पृष्ठ 188 को ध्यान से पढ़ो ताकि ज्ञात हो कि आज़मायश का कारण क्या था, यही तो था कि हज़रत यूनुस

शेष हाशिया - है। इसलिए इसी बहस को शाह वलीउल्लाह साहिब ने विस्तारपूर्वक लिखा है और मौलवी अब्दुल हक़ साहिब देहलवी ने भी 'फ़ुतूहुल ग़ैब' की व्याख्या में बहुत उत्तम वर्णन किया है और लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बद्र की लड़ाई में गिड़गिड़ाना और दुआ करना उसके विशेष बन्दों पर भय तथा ख़ुदा की श्रेष्ठता छा जाने वाली हो।

अतः कलाम का सारांश यह है कि ख़ुदा तआला के वादों में निस्सन्देह विलम्ब नहीं। वे जैसा कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में हैं पूरे हो जाते हैं परन्तु कमअक़्ल इन्सान कभी उनको विलम्ब के रंग में समझ लेता है क्योंकि कुछ ऐसी गुप्त शर्तों पर सूचना नहीं पाता जो भविष्यवाणी को दूसरे रंग में ले आते हैं और हम लिख चुके हैं कि इल्हामी भविष्यवाणियों में यह स्मरण रखने योग्य है कि वे हमेशा उन शर्तों के अनुसार पूर्ण होती हैं जो ख़ुदा की सुन्नत में तथा ख़ुदा की किताब में लिखी जा चुकी हैं यद्यपि वे शर्तें किसी वली के इल्हाम में हों अथवा न हों। इसी से।

ठोस तौर पर अज़ाब को समझे थे। यदि कोई शर्त ख़ुदा की ओर से होती तो यह इब्तिला (आज़मायश) क्यों आता तफ़्सीर कबीर का लेखक लिखता है -

انهم لما لم يؤ منوا واعدهم بالعذاب فلما كشف العذاب
منهم بعد ما تو عدهم خرج منهم مغاضبا

अर्थात् यूनुस ने उस समय अज़ाब की ख़बर सुनाई जबकि उस क़ौम के ईमान से निराश हो चुका। तो जब उन पर से अज़ाब उठाया गया तो क्रोधित होकर निकल गया। अतः इन तफ़्सीरों से असल वास्तविकता यह मालूम होती है कि प्रथम यूनुस ने इस क़ौम के ईमान के लिए बहुत प्रयास किया और जब प्रयास बेफ़ायदा मालूम हुआ और पूर्ण निराशा दिखाई दी तो उन्होंने ख़ुदा तआला की वह्यी से अज़ाब का वादा दिया जो तीन दिन के बाद उतरेगा और तफ़्सीर कबीर के लेखक ने जो पहला कथन नक़ल किया है उसके समझने में **मूर्ख शेख़** ने धोखा खाया है तथा नहीं सोचा कि उस के आगे पृष्ठ 188 में वह इबारत लिखी है जिस से सिद्ध हुआ है कि मौत के अज़ाब की भविष्यवाणी शर्त के बिना थी और यही अन्तिम कथन मुफ़स्सिरों, इब्ने मसऊद, हसन, शाबी, सईद बिन ज़ुबैर और वहब का है। फिर हम कहते हैं कि जिस हालत में वादे की तिथि का टलना क़ुर्आन के स्पष्ट, निश्चित और ठोस आदेशों से सिद्ध है। जैसा कि आयत

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً (अलआराफ़-143)

इसकी गवाह है, तो अज़ाब के वादे कि तिथियां न टलने वाली जो अज़ाब के उतरने पर पथ-प्रदर्शक होती हैं जिसका टलना और विपत्ति का रद्द होना तौबः, क्षमा याचना और दान-पुण्य करने

से समस्त अंबिया अलैहिमिस्सलाम की सहमति से सिद्ध है। तो उन तिथियों का टलना सर्वप्रथम कारण सिद्ध हुआ और इस से इन्कार करना केवल मूर्ख और अनभिज्ञों का काम है न कि किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति का।

और जैसा कि तफ़्सीर कबीर के लेखक अपनी तफ़्सीर के पृष्ठ 164 में लिखते हैं -

ان ذنبه یعنی ذنب یونس کان لان الله تعالیٰ وعده النزال الاهلاك بقومه الذین کذبوة فظن انه نازل لا محالة فلا جل هذا الظن لم یصبر علیٰ دعائهم فکان الواجب علیهم ان یستمر علی الدعاء لجواز ان لا یهلکهم الله با لعذاب

अर्थात् यूनुस का यह पाप था कि उसको ख़ुदा तआला की ओर से यह वादा मिला था कि उसकी क़ौम पर तवाही आएगी, क्योंकि उन्होंने झुठलाया तो यूनुस ने समझ लिया कि यह मौत का अज़ाब निश्चित और अटल है और अवश्य उतरेगा इसी गुमान से वह हिदायत की दुआ पर सब्र न कर सका और उचित था कि हिदायत की दुआ किए जाता। क्योंकि वैध था कि ख़ुदा हिदायत की दुआ स्वीकार कर ले और तबाह न करे। अब बोलो शेख जी कैसी सफ़ाई से सिद्ध हो गया कि यूनुस नबी तबाही के वादे को अटल समझता था और यही उसकी आज़मायश का कारण हुआ कि मौत की तिथि टल गई, और यदि इस पर बस नहीं तो देखो **इमाम सुयूती** की तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर सूरह अंबिया-

قال اخرج ابن ابی حاتم عن ابن عباس لما دعا یونس علی قومه اوحی الله الیه ان لعذاب یصیبهم---- فلما رأوه

جاروا الی اللہ وبکی النساء ولوالدان ورغت الابل وفصلائها وخارت البقر و عجاجیلها ولغت الغنم وسخا لها فرحمهم اللہ وصرف ذلك العذاب عنهم وغضب یونس وقال كذبت فهو قوله اذذهب مغاضبا

अर्थात् इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि जब यूनुस ने अपनी क़ौम पर बद्दुआ की तो ख़ुदा तआला ने उसकी ओर वह्यी भेजी कि सुबह होते ही अज़ाब आएगा। फिर जब क़ौम ने अज़ाब के लक्षण देखे तो ख़ुदा तआला की ओर गिड़गिड़ाए तथा स्त्रियां और बच्चे रोए और ऊंटनियों ने उनके बच्चों सहित तथा गायों ने उनके बच्चों सहित और भेड़-बकरी ने उनके बच्चों सहित भय खाकर शोर मचाया। तो ख़ुदा तआला ने उन पर दया (रहम) की और अज़ाब को टाल दिया और यूनुस क्रोधित हुआ कि मुझे तो अज़ाब का वादा दिया गया था यह अटल वादा क्यों उसके विरुद्ध निकला। तो यही इस आयत के मायने हैं कि यूनुस क्रोधित हुआ। अब देखो कि यहां तक यूनुस पर इब्तिला आया कि كُذِبْتُ उसके मुंह से निकल गया अर्थात् मुझ पर क्यों ऐसी वह्यी उतरी जिसकी भविष्यवाणी पूरी न हुई। यदि इस वादे के साथ कोई शर्त होती तो यूनुस इसके बावजूद कि उसको ख़बर पहुंच चुकी थी कि क़ौम ने सच की ओर रुजू कर लिया मुंह पर क्यों यह बात लाता कि मेरी भविष्यवाणी झूठी निकली और यदि कहो कि यूनुस को उनके ईमान और रुजू की ख़बर नहीं पहुंची थी और इस भ्रम में था कि कुफ्र पर शेष रहने के बावजूद अज़ाब से बच गए। इसलिए उस ने कहा कि मेरी भविष्यवाणी झूठी निकली, तो इसका मुंह तोड़ उत्तर नीचे लिखता हूं जो सुयूती ने आयत وان

يونس الخ के अन्तर्गत लिखा है -

قال واخرج ابن جرير وابن ابی حاتم عن ابن عباس قال بعث الله یونس الی اهل قریة فردوا علیه فامتنعوا منه فلما فعلوا ذلك اوحی الله الیه انی مرسل علیهم العذاب فی یوم كذا و كذا فخرج من بین اظهرهم فاعلم قومه الذی وعدهم الله من عذابه ایاهم فلما كانت اللیلة التی وعد العذاب فی صبیحتها فرأه القوم فحذروا فخرجوا من القریة الی براز من ارضهم و فرقوا كل دابة و ولدها ثم عجوا الی الله و انابوا و استقالوا فاقالهم الله و انتظر یونس الخبر عن القریة و اهلها حتی مر به مار فقال ما فعل اهل القریة قال فعلوا ان یخرجوا الی براز من الارض ثم فرقوا بین كل ذات ولد و ولدها ثم عجوا الی الله و انابوا فقبل منهم و اُخّر عنهم العذاب فقال یونس عند ذٰلك لا ارجع الیهم كذابا و مضی علی وجه

अर्थात् इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से यह हदीस लिखी है कि ख़ुदा ने यूनुस नबी को एक बस्ती की ओर अवतरित किया तो उन्होंने उसकी बात को न माना और रुक गए। तो जबकि उन्होंने ऐसा किया तो ख़ुदा तआला ने यूनुस की ओर वह्यी भेजी कि मैं अमुक दिन उन पर अज़ाब उतारूंगा, तो यूनुस ने उस क़ौम को अच्छी तरह समझा दिया कि अमुक तिथि को तुम पर अज़ाब उतरेगा और उनमें से निकल गया। फिर जब वह रात आई जिस की सुब्ह को अज़ाब उतरना था तो क़ौम ने अज़ाब के लक्षण देखे तो वे डर गए और अपनी बस्ती से एक विशाल मैदान में निकल

आए जो उन्हीं की भूमि की सीमाओं में था और प्रत्येक जानवर को उसके बच्चे से पृथक कर दिया। अर्थात् दयालु ख़ुदा के रुजू दिलाने के लिए यह यत्न किया गया जो दूध पीते बच्चों को चाहे वे मनुष्यों के थे या जानवरों के उनकी मांओं से अलग फेंक दिया और इस पृथकता से उस मैदान में एक क़यामत का शोर मच गया मांओं को उनके दूध-पीते बच्चों के जंगल में दूर डालने से बड़ी आर्द्रता छा गई और इस पर बच्चों ने भी अपनी प्यारी मांओं से पृथक होकर तथा स्वयं को अकेला पा कर दर्द पैदा करने वाला शोर मचाया। इस कार्रवाई के करते ही सब लोगों के दिल दर्द से भर गए और उन्होंने नारे मार-मार कर अल्लाह से गिड़गिड़ाए और उस से क्षमा-याचना की तब दयालु ख़ुदा ने जिसकी दया आगे निकल गई है उनकी यह दुर्दशा देख कर उनको क्षमा कर दिया और उधर हज़रत यूनुस अज़ाब के प्रतीक्षक थे और देखते थे कि आज इस बस्ती और इसके लोगों की क्या ख़बर आती है। यहां तक कि एक राह चलते यात्री उनके पास पहुंच गया। उन्होंने पूछा कि इस बस्ती का क्या हाल है। उसने कहा कि उन्होंने यह कार्रवाई की कि अपनी भूमि के एक विशाल मैदान में निकल आए और प्रत्येक बच्चो को उसकी मां से पृथक कर दिया। फिर इस दर्द पैदा करने वाली हालत में उन सब के नारे बुलन्द हुए और गिड़गिड़ाए तथा रुजू किया तो ख़ुदा तआला ने उनके गिड़गिड़ाने को स्वीकार किया और अज़ाब में विलम्ब .डाल दिया। यूनुस ने इन बातों को सुनकर कहा कि जब हाल ऐसा हुआ अर्थात् जबकि उनकी तौब: स्वीकार हो गई और अज़ाब टल गया तो मैं झूठा कहला कर

उनकी ओर नहीं जाऊंगा।★ अतएव वह झुठलाए जाने से भयभीत हो

★**नोट -** यूना अर्थात् यूनुस नबी की किताब में जो बाइबल में मौजूद है अध्याय-3 आयत 4 में लिखा है औहर यूना शहर में (अर्थात् नेनवा में) प्रवेश करने लगा और एक दिन का सफर करके मुनादी की और कहा चालीस दिन और होंगे तब नेनवा बरबाद किया जाएगा। तब नेनवा निवासियों ने ख़ुदा पर भरोसा किया और
शेष हाशिया - रोज़े की मुनादी की और अब छोटे-बड़े ने टाट पहना और ख़ुदा ने उनके कार्यों को देखा कि वे अपने बुरे मार्ग से रुक गए। तब ख़ुदा ने उस बुराई से जो उसने कही थी कि मैं उन से करूंगा पछता कर रुक गया और उसने उन से वह बुराई नहीं की। अध्याय-4 पर यूना उस से नाराज़ हुआ और सर्वथा ग़मगीन हो गया 2. और उसने ख़ुदा वन्द के आगे दुआ मांगी 3. अब ख़ुदा वन्द मैं तेरी खुशामद करता हूं कि मेरी जान को मुझ से ले ले, क्योंकि मेरा मरना मेरे जीवित रहने से अच्छा है।

अब हे शेख जी! थोड़ी आंखें खोलकर देखो कि यूनुस नबी की किताब से भी अटल तौर पर सिद्ध हो गया कि मौत का अज़ाब टल गया और यह भी निश्चित तौर पर सिद्ध हो गया कि इस भविष्यवाणी में कोई शर्त न थी। इसलिए तो यूनुस ने ग़मगीन हो कर दुआ की कि अब मेरा मरना अच्छा है। शेख़ जी अब तो आप प्रत्येक पहलू से काबू में आ गए। आप लाहौर के सार्वजनिक जल्से में प्रतिज्ञा कर चुके हो कि मैं इस बात की क़सम खाऊंगा कि मौत का अज़ाब नहीं टलता। अब क़सम खाएं ताकि ख़ुदा तआला झूठे को नर्क में दाख़िल करे अन्यथा यह बड़ी बेईमानी होगी कि क़सम खाने की प्रतिज्ञा करके फिर तोड़ दी जाए और यदि आप ने क़सम न खाई तो यही समझा जाएगा कि केवल दो सौ रुपए के लालच ने आप में यह जोश पैदा कर दिया था और फिर क़सम खाने का कोई मार्ग न देखा तो अन्दर ही अन्दर वह जोश घुल गया और इसकी बजाए कि अपनी मूर्खता पर एक शर्म शेष रह गई परन्तु कैसा आश्चर्य कि फिर भी क़सम खा लो, क्योंकि बेईमान आदमी पवित्र लेखों की कुछ भी परवाह नहीं करता और नास्तिकतापन की रग से अपने अंजाम को नहीं

कर उस देश से **निकल गया**। अब कहिए शेख़ जी अभी सन्तुष्टि हुई या कुछ कमी है। स्पष्ट है कि यदि वह्यी अटल अज़ाब की न होती तथा क़ौम को ईमान लाने का कोई अन्य पहलू बताया होता तो वे मैदान में ऐसी दर्द भरी अपनी हालत न बनाते अपितु शर्त पूरी होने पर अज़ाब टल जाने के वादे पर सन्तुष्ट होते। इसी प्रकार हज़रत यूनुस को ख़ुदा तआला की ओर से ज्ञान होता कि ईमान लाने से अज़ाब टल जाएगा तो वह क्यों कहते कि अब मैं उस क़ौम की ओर नहीं जाऊंगा, क्योंकि मैं उनकी दृष्टि में झूठा ठहर चुका जबकि वह सुन चुके थे कि क़ौम ने तौब: की और ईमान ले आई। फिर यदि उनकी यह शर्त भी वह्यी में सम्मिलित होती तो उनको प्रसन्न होना चाहिए था कि भविष्यवाणी पूरी हुई न यह कि वह देश छोड़कर स्वयं को एक बड़े संकट में डालते। क़ुर्आन का शब्द-शब्द इसी का पथ-प्रदर्शन कर रहा है कि वह बड़ी परीक्षा में पड़े और हदीस ने परीक्षा का यह विवरण बताया। तो अब भी यदि कोई बूढ़ा या जवान इन्कारी हो तो स्पष्ट तौर पर उसकी गर्दन काटना है।

हम इस निबंध को इस पर समाप्त करते हैं कि यदि हम सच्चे हैं तो ख़ुदा तआला इन भविष्यवाणियों को पूरा कर देगा और यदि ये बातें ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हैं तो हमारा अंजाम बहुत ही बुरा होगा और ये भविष्वाणियां कदापि पूरी नहीं होंगी -

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ

सोचता। स्मरण रहे कि इस माफी से ईसाइयों के कफ़्फारे का भी उन्मूलन हो गया क्योंकि यूनुस की क़ौम अपनी तौब: और क्षमा-याचना से बच गई और यूनुस तो यही चाहता था कि उन पर अज़ाब आए। इसी से।

(अलआराफ़-९०)

और अन्त में मैं दुआ करता हूं कि हे सामर्थ्यवान तथा सर्वज्ञ ख़ुदा यदि आथम का घातक अज़ाब में गिरफ़्तार होना और अहमद बेग की बड़ी बेटी का अन्त में इस ख़ाकसार के निकाह में आना ये भविष्यवाणियां तेरी ओर से हैं तो उनको इस प्रकार से प्रकट कर जो ख़ुदा की प्रजा पर हुज्जत हो और अन्धे ईर्ष्यालुओं का मुख बन्द हो जाए और हे ख़ुदा वन्द! यदि ये भविष्याणियां तेरी ओर से नहीं हैं तो मुझे असफलता तथा अपमान के साथ तबाह कर यदि मैं तेरी दृष्टि में धिक्कृत, लानती और दज्जाल ही हूं जैसा कि विरोधियों ने समझा है और तेरी वह हुज्जत मेरे साथ नहीं जो तेरे बन्दे इब्राहीम के साथ और इस्हाक़ के साथ और इस्माईल के साथ, याक़ूब के साथ, मूसा के साथ दाऊद के साथ, मसीह इब्ने मरयम के साथ और ख़ैरुल अंबिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तथा इस उम्मत के वलियों के साथ थी तो मुझे फ़ना (नष्ट) कर दे और अपमानों के साथ मुझे मौत दे दे और हमेशा की लानतों का निशाना बना और समस्त शत्रुओं को प्रसन्न कर तथा उनकी दुआएं स्वीकार कर। किन्तु यदि तेरी दया मेरे साथ है और तू ही है जिस ने मुझे संबोधित करके कहा -

انت وجیہ فی حضرتی اخترتک لنفسی

और तू ही है जिसने मुझे संबोधित करके कहा -

یحمدك الله من عرشه لنفسی

और तू ही है जिसने मुझे सम्बोधित करके कहा -

يا عيسى الذى لا يصناع وقتة

और तू ही है जिसने मुझे सम्बोधित करके कहा -

اليس الله بكاف عبده

और तू ही है जिसने मुझे संबोधित करके कहा -

قل انى امرت و انا اول المؤ منين

और तू ही है जो संभवत: प्रतिदिन कहता रहता है -

انت معى و انا معك

तू मेरी सहायता कर और मेरी सहायता के लिए खड़ा हो जा।

و انّى مغلوبٌ فانتصر

लेखक - ग़ुलाम अहमद क़ादियान,

ज़िला-गुरदासपुर

27, अक्टूबर 1894 ई०

रियाज़ हिन्द अमृतसर